RNI Regd No. : RAJRAJ/ 2012/ 50837

ISSN 2348 – 9251

कथेसर

बरस : 4 ▪ अंक : 14 ▪ राजस्थानी तिमाही ▪ जुलाई-सितम्बर, 2015

परलीका (हनुमानगढ़) ▪ मोल : 100 रिपिया सालीणो

कथेसर रा आजीवण सदस्य

*(**अरज :** किणी आजीवण सदस्य रो नांव इण सूची में नीं है तो खबर करो- 7742814567)*

श्री प्रहलाद राय पारीक, 18एसपीडी (हनुमानगढ़), श्री हनुमान प्रसाद शर्मा, दलपतपुरा (हनुमानगढ़), श्री दुलाराम सहारण, चूरू, श्री नारायण राहड़, सूरत (गुजरात), श्री घनश्याम नाथ कच्छावा, सुजानगढ़ (चूरू), श्री भंवरलाल भ्रमर, बीकानेर, श्री प्रहलाद श्रीमाली, चेन्नई (तमिलनाडु), श्री जयन्तीसिंह रतनू, इण्डाली (नागौर), श्री ख्याली सहारण, 18एसपीडी (हनुमानगढ़), श्री रतन शाह, कोलकाता, श्रीमती रेखा मुरली मनोहर स्वामी, मेड़ता सिटी (नागौर), श्री राजेन्द्र केडिया, कोलकाता, श्री श्याम सुंदर गोइन्का, बैंगलोर, श्री भगवानदास शर्मा, सिलिगुड़ी, श्री पुनीत बंसल, सिलिगुड़ी, श्री कैलाश चंद्र अग्रवाल, सिलिगुड़ी, श्री नन्दलाल मोदी गोगामेड़ी वाळा, सिलिगुड़ी, श्री मनोज कुमार लखोटिया, सिलिगुड़ी, श्री चंद्रप्रकाश सिंघल, सिलिगुड़ी, श्री सम्पतमल संचेती, सिलिगुड़ी, श्री सुनील राजपुरोहित, ऋषभदेव (उदयपुर), श्री सुरेश बिजारणिया, पो. जाजोद (सीकर), श्री बसंत लेघा, बीकानेर, श्री आर.के. गोयल, सिलिगुड़ी, श्री कुलछत्र अग्रवाल, सिलिगुड़ी, श्री कनक दुग्गड़, सिलिगुड़ी, श्री पवन कुमार अग्रवाल, सिलिगुड़ी, श्री शार्दूल सहारण, नोहर (हनुमानगढ़), चौ. सुरेश कुमार, रायसिंहनगर (श्रीगंगानगर), डॉ. ओ. पी. सुथार, हनुमानगढ़ टाउन, श्री महावीर सुथार, संघर (श्रीगंगानगर), डॉ. अमरसिंह सिद्धू, नोहर (हनुमानगढ़), श्री गोपीराम सिराव 'रावण', जोरावरपुरा (हनुमानगढ़), श्री सतवीर कस्वां, ढंढेळा (हनुमानगढ़), श्री जयप्रकाश गोस्वामी, खिनानिया (हनुमानगढ़), श्री दौलतराम, सिलवाला खुर्द (हनुमानगढ़), श्रीविकास कुमार कासणियां, खिनानिया (हनुमानगढ़), श्री रामेश्वरलाल गिला, टोपरियां (हनुमानगढ़), डॉ. रचना शेखावत, बीकानेर, श्री देवकरण जोशी, तारानगर (चूरू), श्री प्रकाशचंद्र कस्वां, परलीका (हनुमानगढ़), डॉ. भरत ओळा, नोहर (हनुमानगढ़), श्रीमती शारदा कृष्ण, सीकर, श्री नारायणसिंह पीथल, जयपुर, श्रीमती नीलम पारीक, नोहर (हनुमानगढ़), श्री परसराम भाटिया, सूरतगढ़ (श्रीगंगानगर), श्री वेदप्रकाश तिवाड़ी, नोहर (हनुमानगढ़), श्री राजू सारसर 'राज', किशनुपरा दिखणादा (हनुमानगढ़), श्री आईदानसिंह हुड्डा, बरवाळी (हनुमानगढ़), श्री बनवारीलाल नाई, दीपलाना (हनुमानगढ़), श्री नागराज शर्मा, पिलानी (झुंझुनू), श्री चैनसिंह परिहार, जोधपुर, श्री बिशनाराम स्वामी, बरवाळी (हनुमानगढ़), श्री मोहरसिंह सहारण, राजपुरिया (हनुमानगढ़), श्री कुलबीरसिंह जाखड़, अबोहर (पंजाब), श्री विनोद कुमार कस्वां, तारानगर (चूरू), श्री रोहिताश कुमार कस्वां, तारानगर (चूरू), श्री रोहिताश कुमार सहारण, चक देईदासपुरा (हनुमानगढ़), श्री सुलताना राम सहारण, नोहर (हनुमानगढ़), श्री रामचंद्र पारीक, नोहर (हनुमानगढ़), श्री शिवराज भारतीय, नोहर (हनुमानगढ़), श्री सुभाषचंद्र ढाका, खाजूवाला (बीकानेर), श्री जसराम चोटिया, खाजूवाला (बीकानेर)। राजमोहन मोदी, मनीनगर, अहमदाबाद (गुजरात), डॉ. नीरज दइया, बीकानेर, श्री भवानी शंकर व्यास, नोहर (हनुमानगढ़), डॉ. जितेन्द्र कुमार सोनी, रावतसर (हनुमानगढ़), श्री श्यामसुदर भारती, जोधपुर, श्री श्रवणकुमार, 1 पीएसएम, खाजूवाला (बीकानेर), श्री रूपसिंह राजपुरी, रावतसर (हनुमानगढ़), श्री द्वारकाप्रसाद शर्मा, मुंसरी, त. भादरा (हनुमानगढ़), डॉ. अमरसिंह सिद्धू, नोहर, श्री दीपचंद बैनीवाल, परलीका (हनुमानगढ़), डॉ. सुरेन्द्र डी सोनी, चूरू, श्रीमती सावित्री चौधरी, जयपुर, श्री हरीश हैरी, बहलोलनगर (पीलीबंगा), श्री रणजीत खाती, बिरकाळी (हनुमानगढ़)

RNI Regd No. : RAJRAJ/ 2012/ 50837 ISSN 2348 – 9251

कथेसर

बरस : 4 ▪ अंक : 14 ▪ राजस्थानी तिमाही ▪ जुलाई-सितम्बर, 2015
परलीका (हनुमानगढ़) ▪ मोल : 100 रिपिया सालीणो

संपादक
रामस्वरूप किसान
डॉ. सत्यनारायण सोनी

प्रबंध संपादक
विनोद स्वामी

विधि सलाहकार
विष्णु कुमार शर्मा

वेब प्रबंधक : डॉ. नीरज दइया

कला पक्ष : राजेन्द्र प्रसाद

कार्यालय
कथेसर प्रकाशन
परलीका, वाया-गोगामेड़ी,
जिला-हनुमानगढ़ (राजस्थान) 335504
कानाबाती : 01555-262048
9460102521, 7742814567
ईमेल- editor@kathesar.org
वेब- www.kathesar.org
www.kathesar.wordpress.com

मोल
दो बरस : ₹ 200.00
पांच बरस : ₹ 400.00
आजीवण : ₹ 1100.00
(कम सूं कम दो बरस रो चंदो भेजो सा!)

सगळा पद अवैतनिक

स्वामी, प्रकाशक व मुद्रक अजय कुमार द्वारा गांव-परलीका, वाया-गोगामेड़ी, जिला-हनुमानगढ़, राजस्थान से प्रकाशित एवं खत्री ऑफसेट, पुराने गुरुद्वारे के पीछे, वार्ड-15, नोहर, जिला-हनुमानगढ़ से मुद्रित। संपादक : रामस्वरूप किसान।

इण अंक मांय

संपादकीय
नवो काव्य रूप 2

पठेसर दीठ 5

कहाणियां
घ्यार
-सीए. सुमेरसिंह शेखावत 7
कठ-पूतळी
-संजू बिरट 'मुकाम' 10
बैरण बीनणी
-सैणी दान रतनू 14

संस्मरण
मालू काका -पेंटर भोजराज सोलंकी 18

आलेख
मैगी विवाद रै मिस
अेक जरूरी कविता माथै चर्चा
-डॉ. जगदीश गिरी 54

उल्थो
सपना देखण रो हक -मूळ : महाश्वेता देवी
उल्थो : नन्द भारद्वाज 61

लेखकां रा विच्यार आपरा निजू है, उणां सूं संपादक रो सहमत होवणो जरूरी नीं है। किणी तरै रै विवाद रो न्याय खेतर नोहर रैवैला।

संपादकीय

नवो काव्य रूप

नवी कविता बाबत मुक्तिबोध लिखै, 'भोत दिनां सूं हिन्दी साहित मांय नवी कविता होवती चली आई है। लारली दो दसाब्दियां सूं हिन्दी कविता जिको नवो रंग पकड़्यो है, उण सूं घबराय'र भोतां न्यारै-न्यारै कोणां सूं उण रो विरोध ई करयो। पण आज ओ साम्परत सांच है कै नवी कविता नैं साहित रै मैदान सूं कोई नीं हटा सकै।.....लारलै बीस-पच्चीस बरसां मांय नवी काव्य प्रवृत्ति अनेक विकास-चरणां नैं पार करती थकी अठै तांई आय पूगी। उणरै भीतर अनेक शैली, अनेक भाव-धारावां अर अनेक विचार-दृष्टियां काम करै। प्राकृतिक सौंदर्य अर स्नेह भावना सूं लेय'र सभ्यता-समीक्षा तांई, जकी-जकी भाव-श्रेणियां संभव हो सकै, बै सगळी उण मांय है। गीत अर छंदोबद्ध कविता सूं लेय'र पद्याभास गद्य तांई उण मांय सामल है। दुरभाग्य री बात फगत आ है कै उण रा जका विरोधी समीक्षक है, बै उणरी सगळी कृतियां, सगळी शैलियां अर भाव-धारावां नैं ध्यान में राख'र, उणां रो अध्ययन कर'र उणरो विरोध नीं करै। फगत विरोधात्मक प्रचार नैं ई बै समीक्षा मानै। पण अैड़ी समीक्षा रो कोई मोल नीं है, इतिहास आ बात साफ कर दी है।.....नवी कविता री आत्मा है आधुनिक भाव-बोध। आज रो भण्यो-गुण्यो मिनख आपरै परिवेस-परिस्थितियां सूं जकी संवेदणाऊ प्रतिक्रियावां करै, बै संवेदणाऊ-प्रतिक्रियावां का उणरो सामान्यीकरण नवी कविता मांय प्रगट होवै। अैड़ै पढ्यै-लिख्यै मिनख रो नजरियो मध्ययुगीन धार्मिक दीठ सूं अनुप्राणित का छायावादी भावुकता सूं परिपूर्ण कल्पना-प्रधान नीं होवै। विज्ञान रै इण जुग मांय उणरी दीठ यथार्थोन्मुख अर संवेदनभरी होवै। बो यथार्थ संबंधां नैं ग्रहण कर'र यथार्थ-बोध रै जरियै संवेदनात्मक प्रतिक्रियावां करै।' (मुक्तिबोध रचनावली भाग-5, पृष्ठ : 306, नए स्वर, अप्रैल 1956में प्रकाशित लेख रो अंश)

दूसरै सप्तक (1951) अर 'नई कविता' पत्रिका रै प्रकासन पछै हिन्दी कविता जको नवो रूप हासल करयो, आज बो ई रूप आखी भारतीय भासावां री टणकी कवितावां रो है। भावूं बां भासावां री कविता ओ रूप हिन्दी सूं हासल नीं कर'र सीधो पश्चिम सूं कर लियो हुवै, पण

ISSN : 2348-9251

करयो अवस है। हिन्दी में उण रूप नैं 'कविता के नए प्रतिमान' री मोहर सूं नामवरसिंह सैंग सूं पैलां प्रमाणित करयो। पछै इण कविता नैं भांत-भांत री आलोचना सूं ई भिड़णो पड़यो। जकी कै अजे ई बरकरार है। जका इण धारा री कविता में सरीक नीं होया का नीं हो सक्या बां इण पर रूपवाद रो लेबल लगाय'र कोरो सबद-जाळ बतायो। बां इणनैं वायवीय, लोकेत्तर, वाष्पीय अर असंपृक्त किस्म री कविता कैय'र आलोचना करी है। पण अठै गोखण वाळी बात आ है कै इण आलोचना मांय सांच कित्तोक है। म्हैं इण आलोचना नैं सफा कूड़ी तो नीं बता सकूं क्यूंकै कविता में समाजू सरोकार तो पैली सरत है। जका नवैपण रै नांव माथै समाज सूं अैन ई कटग्या बै इण आलोचना रै घेरै में अवस आवै। जिका कविता नैं कोरी कलाबाजी मान'र साम्हीं पड़ी हरेक चीज नैं कविता में बदळण रो सस्तो आंटो सीखग्या, गड़बड़ करै। पण इण कविता में सगळा ई अैड़ा नीं है। हां, अैड़ो अवस है कै अज्ञेय सूं लेय'र विनोद कुमार शुक्ल तांई री स्रंखला में मुक्तिबोध अेक ई है। पण रघुवीर सहाय, श्रीकान्त वर्मा, कुंवर नारायण, विजयदेव नारायण साही अर केदारनाथ सिंह आद जकी प्रगतिशील आलोचना रा सिकार रैया है, बा अतिरंजित अवस है। खुद मुक्तिबोध नवी कविता री इण भांत री आलोचना सूं सहमत नीं हा। नवी कविता पर प्रगतिवादियां रै आत्मग्रस्तता अर व्यक्तिपरकता रै आरोप रो जवाब देवता मुक्तिबोध लिखै- 'आत्मग्रस्त व्यक्तिकेन्द्री काव्य! कांई शैले रो काव्य आत्मग्रस्त व्यक्तिकेन्द्री नीं हो? कांई रवीन्द्र रो काव्य आत्मग्रस्त व्यक्तिकेन्द्री नीं हो? कांई महादेवी अर प्रसाद रो काव्य आत्मग्रस्त व्यक्तिकेन्द्री नीं हो?

हो, हो, हो! पण उण मांय जीवन रो व्यापक आदर्श, जीवन री प्रबुद्ध चेतना, मानव-प्रेम, अपूर्व सौंदर्य दृष्टि ही। उण मांय अन्तरात्मा रो सौंदर्य हो। अर प्रयोगवादी कविता, नवी कविता मांय ओ सो कीं नीं है - उण मांय वैयक्तिक विफलता, वैयक्तिक निरासा अर ग्लानि, अर दूजै कई भावां मांय व्यक्त आत्मग्रस्तता है। इण वास्तै म्हे (प्रगतिवादी) उण रो विरोध करां। म्हे वाजिब विरोध करां।

पण महोदय, कांई आप (प्रगतिवादी) आ बताओला कै उण नवै काव्य रूप मांय कठै ई, आपनैं अैड़ी भयानक विफलता रै अलावा, आं भावां रै अलावा बीजा भाव नीं मिल्या? कांई आप शमशेर री, नरेश मेहता री अर बीजै कवियां री सगळी कवितावां देखी? ...नवी काव्य-प्रवृत्तियां रै आधारभूत मानव-जीवन रै पेटै बां (प्रगतिवादियां) नैं कतई अनुराग नीं हो। इण सारू उण प्रवृत्तियां रा खास संदर्भ ई बै कोनी समझ सक्या।' (मुक्तिबोध रचनावली भाग-5, पृष्ठ : 135-36)

कैवण रो अर्थ प्रगतिवादियां काव्य-सिद्धांत रो अेक सांचो घड़'र कविता रो क्षेत्र सांकड़ो करण री कोसीस करी। पण नवी कविता इण सांचै नैं तोड़'र काव्य क्षेत्र नैं व्यापकता दीनी।

ISSN : 2348-9251

मुक्तिबोध रो मानणो है कै आत्मपरकता अर व्यक्तिपरकता रै कारण कोई कविता प्रतिक्रियावादी नीं होया करै। अर न ई दु:ख-दर्द, निरासा-हतासा, क्षोभ-ग्लानि अर विकलता रै भावां नैं प्रगट करण वाळी कविता प्रगति विरोधी होया करै। नवी कविता तो अेक नवो काव्य-रूप है जिण री वाजिब समीक्षा होवणी चाइजै।

नवी कविता पर ओ आरोप कै बा कांग्रेस फॉर फ्रीडम कल्चर रै गर्भ सूं निकळ्योड़ी पश्चिमी भावबोध री वैयक्तिक, आत्मपरक अर प्रगति विरोधी कविता है, कित्तोक सही है - इणरी पड़ताळ म्हारो विसै नीं है। हां, आ अवस कैय सकूं कै भारत में घणकरीक नवी चीज आयातित ई है। क्यूं कै इण धरती रो मिजाज ई पुराणै पर आत्मविमुग्ध होय'र इतिहास रो ढोल बजावणो रैयो है। इण कूप-मंडूकता रो ई नतीजो है कै विज्ञान-साहित्य-चिंतन अर टैक्नोलॉजी रै फील्ड में अठै कोई अबोट प्रतिभा पैदा नीं होयी। पछै कविता रो ओ नवो रूप बारै सूं आयोड़ो है तो कांई हरज है? छायावाद कांई अठै रो हो? गद्य मांय कहाणी-उपन्यास रो आधुनिक रूप देसी है? नवी कविता विदेस सूं आवै भावूं आभै सूं उतरै पण इणरी अेक लांठी उपलब्धि है जकी नैं नकार नीं सकां। अर बा है अेक कविता रूप रै समानान्तर दूजै कविता रूप री पैदाइस। आज पूरी भारतीय कविता रा दोय काव्य रूप है- अेक भारतीय काव्य परम्परागत अर दूजो नव परम्परागत। ओ कविता बावत विकास ई तो है। इण अर्थ में भारतीय कविता अेक पांवडो आगै ई तो धर्‌यो है। हर फील्ड में नवी खोज अेक उपलब्धि ई तो है। अर अज्ञेय ई प्रयोगवाद नैं राह रो अन्वेषण कैयो है। तो किणी खेतर में अन्वेषण प्राप्ति ई है, खोवणों नीं है। किणी चीज रा जित्ता ई बेसी रूप होवैला बा उत्ती ई लांठी मानीजैला। इण दीठ सूं नवी कविता रो उद्भव भारतीय कविता में अेक महान उपलब्धि है। नवी कविता रै आगास सूं भारतीय कविता में कदे ई खतम नीं होवण वाळी जकी बहस छिड़ी है बा उण री सैंग सूं बड़ी उपलब्धि है। किणी वाङ्मय में बहस ई नवी संभावनावां रा बारणा खोलै। नवी कविता री अेक और बड़ी खासियत आ है कै उण अेक अैड़ो दायरो रच दियो जकै रै भीतर पूग'र ई कोई कविता, कविता बणै। बीजै सबदां में कैय सकां कै इण कविता सारू कवि नैं आपरै बेजोड़ सिल्प अर अनुभव रै हुनर री तोप सूं दुर्गम दुर्ग नैं ढहा'र कविता तांई पूगणो पड़ै। इणी सारू स्यात मुक्तिबोध नैं कैवणो पड़्यो- 'फिर मैं रिक्सेवालों, तांगेवालों के लिए थोड़े ही लिखता हूं।' (हंस, सितम्बर, 2014, महागुरु मुक्तिबोध : व्याप्ति और वितान-संजीव, पृष्ठ : 72)

दुरूहता गम्भीर अर बड़ी कविता री मजबूरी अर गुण अेक साथै है। असल कविता व्यंजना तांई पूग'र ई आपरो पद हासिल करै।

-रामस्वरूप किसान
9166734004

ISSN : 2348-9251

पठेसर दीठ

मायड़भासा रै उत्थान रो उत्तम प्रयास

'कथेसर' जन-जून, 2015 अंक री प्रति भाई कल्याणसिंह राजावत जी रै रैवास पर देखण रो मौको मिल्यो।

मायड़भासा रै उत्थान रो उत्तम प्रयास। साधुवाद। रूपसिंह राजपुरी री कहाणी 'छाळ' कथानक व भासा री दीठ सूं घणी आछी लागी। अर्जुनदान चारण री 'रोहिड़ै रो फूल' आज रै मिनखां री मनगत चौड़ै करै।

-गुमानसिंह शेखावत, *जयपुर।*

'अभनै रा किस्सा' री कांई पूछो बात

अंक 12-13 मिल्यो। बांच्यो अर बंचायो। 'अभनै रा किस्सा' री कांई पूछो बात। आप तो हर अंक मांय पुरसबो करो। साहित्यकार रामपालसिंह राजपुरोहित सूं अर्जुनसिंह उज्वल री बात नवा कलमकारां नैं आछो मारग बतावण वाळी है। बेगार अर छूआछूत नैं लेय'र डॉ. मनमोहन लटियाल आपरी कहाणी 'डब्बा' में जबरो चितराम खैंचियो। आज ई गांव-गांव में जुगां सूं दबियोड़ा केई 'डब्बा' बैठा है। रूआंळी उबी करती आ कहाणी आज रा सफेदपोसां नैं सांगोपांग काच दिखावै। सैंग सूं धिनवाद तो डॉ. जितेन्द्र कुमार सोनी कलेक्टर सा जाळोर नैं है। भागादौड़ी अर चौबीसों घण्टा राज री सेवा करता थकां आप मायड़भासा री सेवा करै, वा घणी सरावणजोग है। जे इण पोथी री लम्बाई-चौड़ाई बधाय इणनैं मोटी करीजै अर बीच में थोड़ा-थोड़ा रंगीन पाना अर रंगीन चितराम होवै तो पछै देखो इणरो रूप। इणरो परचार-परसार करावो। म्हारो सैयोग बण्यो रैवैला। घणी सुभकामनावां।

-श्रवण कुमार लक्षकार
बलून्दा, जिला-पाली।

तबियत बाग-बाग हो जाए

मुल्ला नसरुद्दीन, शेख चिल्ली अथवा बीरबल की तरह अभना राजस्थानी भाषा का एक अद्भुत मेधावी विदूषक है। गुमशुदगी की गर्द में आलूदा इस अनूठे लोकनायक को हमारे साहित्यक अग्रज मोहन आलोकजी ने न केवल ढूंढ निकाला है बल्कि जमाने का भेस-बाना पहना कर एक अभिनव धज में हमारे सामने पेश कर दिया है। उन्होंने अभनै रा किस्सा शीर्षक से दो सौ के लगभग अत्यंत मनोरम छोटी-छोटी कहानियां राजस्थानी में लिखी हैं। राजस्थानी पत्रिका 'कथेसर' अपने अंकों में निरन्तर उनकी ये कथाएं छाप रही है। 'कथेसर' के ताजा जनवरी-जून, 2015 के 'लोकरंग' स्तंभ के तहत ऐसे चार 'अभनै के किस्से' प्रकाशित हैं कि पढ कर किसी की भी तबियत बाग-बाग हो जाए।

-मालचंद तिवाड़ी
बीकानेर। (फेसबुक वाल सूं साभार)

थारी सोगन भोत मजो आयो

काल आथण 'कथेसर' पढणी सुरू करी सा। ताऊ सेखावाटी री कहाणी पढी अर डॉ. जितेन्द्र कुमार सोनी जी री कविता 'इंकलाब' ई। रूपसिंह राजपुरी जी री कहाणी 'छाळ' पढी। थारी सोगन भोत मजो आयो। इयां मैसूस होयो जाणै असली साहित्य अबार पढणो सुरू करयो है। ई खातर 'कथेसर' रै सगळै अगवाणियां नैं भोत भोत बधाई।

-रामदास बरवाळी, *नोहर।*

किसान जी लाजवाब

आज जनवरी-जून 2015 'कथेसर' पूगी। सैंसूं पैली संपादकीय बांच्यो। किसान जी लाजवाब है ....गरमागरम बहस रो मुद्दो बण सकै वां खातर जका कविता नैं फगत बुद्धि रै हवालै कर दीन्ही.....रस री तलाश मती करो। ढूंढो कै म्हैं के कैवणो चावूं? जे समझ नीं पड़ै तो पाठक मूढ है। किसान जी लिखै- 'आज कविता हृदयोल्लास अर हृदयोच्छ्वास नीं होय'र

ISSN : 2348-9251

खालिस बौद्धिक उत्पाद बणग्यो। लालित्य दोस अर खुरदरापण गुण बणग्यो। विचारणीय है..... । ताऊजी री कहाणी हिन्दी सूं मायडभासा में ट्रांसफर करियोड़ी लागी.... बाकी ओजूं कदे।

-राजेन्द्र शर्मा 'मुसाफ़िर', *चूरू।*

सम्पादकीय नवी दीठ देवै

कथेसर जनवरी-जून अंक मिल्यो। किसान जी री कलम सूं कोरीज्योड़ो सम्पादकीय नवी दीठ देवै। कविता जुग अवसान अर गद्य रो महत्व बतावतो संपादकीय जुग जथारथ रो बोध करावै। कहाण्यां 'बीं लड़की री कहाणी', अर 'डब्बो' सबळी रचनावां है। दोन्यूं ई कहाणी समाज रा दो न्यारा वर्ग नारी अर दलित री ऊंडी पीड़ नैं उकेरी है। शिल्पगत देख्यो जावै तो ताऊ शेखावाटी री भासा में बो कसाव अर पठनीयता नीं बैठ सकी जकी सांतरी खासियत डॉ. मनमोहन लटियाल री कहाणी मांय है। गिरधारी लाल मालव री कहाणी 'गरीब की हाय' आपरै हाड़ौती बोली री मिठास रै साथै गांव में सिरकारी योजना पर करड़ो अर सांचो थप्पड़ मार्‌यो है। राजू सारसर राज अर डॉ. जितेंद्र कुमार सोनी री कवितावां नवै मुहावरै नैं लियां है। रामदास जी सांतरा दूहा मांड्या है। स्थायी स्तम्भ लोकरंग, रंगमंच, शोध आलेख, पोथी चर्चा अर रपट सांतरा, सार्थक है। 'राजस्थानी रंगमंच: ऊजळै भविस रा अैनाण' मांय डॉ. जगदीश गिरी सांतरी खेचळ करी है, नाटकां रो विगतवार ब्यौरो कथानक रै साथै देवण सारू लखदाद आं नैं।

-प्रहलाद राय पारीक

18 एसपीडी, हनुमानगढ़।

पारखी निजर नैं सलाम

कथेसर रो जनवरी-जून, 2015 अंक मिल्यो। इयां अेक-दो अंक पैली ई बांच्या, पण इण अंक मांयनै कहाणियां सगळी ईज आछी लागी। रुपसिंह राजपुरी री कहाणी 'छाळ' हिवड़ै मांय गदीड़-सो मेल्यो। संपादकीय मांय किसान सा साची कैयो है कै ओ गद्य-जुग है। फेर कविता ई खूंटा तुड़ावण लागरी है। ओखै सबदां रो टेम निकळग्यो। थारी पारखी निजर नैं सलाम अर मायड़भासा री सेवा रै वास्तै सरावणा करूं।

-अनिल अबूझ, *सोनड़ी, नोहर।*

जित्ती बडाई करां, बित्ती थोड़ी

सैंग सूं पैलां म्हैं 'कथेसर' रै संपादक नैं धनवाद देणौ चावूं कै बां नवै साहित्यकारां नैं आगै ल्यावण रो जिम्मो लेय राख्यो है। इण री जित्ती बडाई करां, बित्ती थोड़ी है। ई पत्रिका में जिको संतुलन है, मनैं घणो चोखो लाग्यो। मनैं 'कथेसर' रो 12-13 अंक पढण नैं मिल्यो। घणों हरख होयो। ई अंक मांय भोत आच्छी-आच्छी रचनावां नैं जिग्यां देयोड़ी है। संपादकीय पन्नो तो सदां सूं ही चोखो रैवै है। कविता जियां गद्य री चादर ओढती लखावै, ई बात रो सार किसानजी घणैं सांतरै ढंग सूं दियो है। गिरधारी लाल मालव री कहाणी 'गरीब की हाय' मांय कहाणीकार शोषितां रै साथै ऊभा लखावै। समाज मांय फैल्यै भ्रष्टाचार अर सोसण रो कड़ो बिरोध करता दीखै। ताऊ शेखावटी 'बीं लड़की री कहाणी' रै मारफत कच्ची भींत री कुचर'र सारी माटी निकाळ दी। आधुनिक समाज मांय जको काळो काम चालरयो है, बीं नैं अेक भोगी रै मुंडै कहलवाणों अेक साहसी काम लाग्यो। 'छाळ' कहाणी मांय ई सागी बात नैं राजपुरी जी बताई है। घरां मांय जकी काळी करतूतां होय री है, बीं नैं बड़ै सांतरै ढंग सूं दरसाई है। कहाणी 'रोहिड़ रो फूल' मांय जको बतायो गयो बो आज रा नौजवानां री मनमर्जी पर करारो कटाक्ष है। डॉ. मनमोहन जी आपरी कहाणी मांय दलितां री पीड़ बताई अर बां सागै होरया अत्याचारां नैं दिखाया है। डब्बै बरगा भोत है ई देस मांय जिका अमीरां रै पैरां तळै पीसीजता रैवै। कहाणी रै सुरू मांय पीड़ बताई अर क्लाइमेक्स मांय अमीरां नैं जबाब देवण रो तरीको। आ कहाणी घणी आछी लागी। अबकी बार 'कथेसर' मांय अेक साक्षात्कार छाप्यो। घणो चोखो लाग्यो। म्हैं चावूं हर अंक मांय ओ छापणो चाइजै।

बाकी पानै 17 माथै...

ISSN : 2348-9251

कहाणियां

सीए. सुमेरसिंह शेखावत

घ्यार

धन्नो कमेरो धुनको। तैं-तैं खट-पट सूं लारो छुटा'र बीं रूई पिन्दाई की मसीन लगा ली। अबै तो धर मजलां धर कूचां पांच-सात को तो कैवणो ई कांई, पच्चीस सोड़िया-रजाई अेक-अेक दिन मांय भरै। वां री जोड़ायत ई घणी कमेरी। लुगड़ी को ढाटो लगायां आखै आखै दिन वां साथै कमतरां बैवती ई बगै। भरयोड़ा सोड़िया, रजायां नैं कामड़ी फटकार कै रूई की इकसार भराई सारू अर सांतरी तगाई मुजब तो सै ई बीं रा साखिणा बखाणैं। तगाई गोळ-घुमेर, चोफुली, चोपड़-कट न्यारी न्यारी घण चावी अर बरसूं-बरस चालै। खोळिया ई भलै फाट'र लीरां-लीरां हो ज्यावै, पण धन्नै धुनकै की भरयोड़ी रजाई की रूई नीं टूटै, नीं खींडै। सुभाष मंडी ई नीं आखै नीम कै थाणै, छावणी अर अड़ोस-पड़ोस कै गांवां मांय ई वां को नाम चालै।

धन्नो रूई ई छेवट दो ई भांत की राखै। भलेरी पण कीं सस्ती, जीं सूं गांवती नान्हीं कुमाई-कमेरा ई पौसाय सकै। बीजी धोळी-धप्प। मोटै रेसै वाळी। सुस्यै-सी कंवळी। हाथ फेरयां रूंआं कांपै अर अंतस हांसै। हरेक चावै, कीं तोड़ा-टूटण करा'र, पाव-आध सेर रूई भलांई कम नखवावां पण रूई तो आईज घलावां।

भौंडकी का केजड़ीवालजी नीम कै थाणै का नामी-गिरामी मानेजता सेठ। बेटा-पोतां की मण्डी मांय पांच निजू मिल्कियत-जर खरीद दुकानां। कपड़ै, रेडिमैड अर लोखण का मानेजता नामधारी-साखीणा व्योपारी। वां रा बेटा-पोतां की साख सिरै चढयोड़ी। अमदाबाद, सूरत, दिल्ली, जैपर, मंडी-गोबिन्दगढ़, भीवाड़ी सूं लगै-टगै सांतरी खरीद-फरोख्त होती ई रैवै।

कपिल मंडी मांय कपड़ै की दुकानां तो घणी सोवणी चालैं पण लोखण की गाटर, सरिया, पाती राखबाटै जगां ओखी पड़ै। रामलीला मैदान वाळै पुराणै गोदाम नैं तुड़ा-फुड़ा कै बां नैं नवी दुकानां-'श्यो-रूम' को रूपळ देवणै को मन बणायो। सोचतां थकां थोड़ै

ISSN : 2348–9251

बखत मांय ई, मूरत रूप सामै उभार खाय आ ऊभो। केजड़ीवाल आइरन स्टोर को फैलाव कपिल मंडी की छोटी दुकान सूं बढ'र रामलीला मैदान नम्बर च्यार स्कूल कै कूणै तांई जाय पसरयो। सैंकड़ी फुट लाम्बी अर तीसेक फुट चौड़ी दुकान ई संकड़ेलो भोगै। आ ई छोटी पड़गी। स्हैर को बढाव अर नवी पीढी की सावळ जूंण जीवण की हुंसेर-कई कई मजला मकान, 'कॉम्लेक्स' बणाबा नैं बढावो दियो। केजड़ीवालजी की बीसूं घी मांय हुवै।

चौमजलो 'श्योरूम' आभो भींटै, मुंडै बोलै। धरातलै लोखण को बडेरो 'श्योरूम'। पैली मजल पै बैंक तो बीजी पै बीमा कम्पनी को दफ्तर चालै। चौथी सै ऊपरली मजल पै चील-गाड्यां उडण वाळी ललनावां को 'ट्रेनिंग सेंटर' - 'दिशा अकेडमी' नैं किरायै दे राख्यो है। अणछक सेठां को मुनीम दीनदयाल दिवाळी पैल्यां पांच रजायां को ओडर ले'र पूग्यो। सियाळै की पैली बूणी धन्नै घणै मान सूं आदरी, केवटी। दो की जगां तीन सांतरी पिंदाई करकै कंवळी रूई सूं पांचूं रजायां भरी। फूटरी तगाई करनै च्यारेक दिन कै आंतरै रजायां सेठजी की हवेली पुगा दीनी।

म्हीनै'क छेड़ै सेठ केजड़ीवालजी की बडळी बेटी पीरै आई। बीं नैं पांच-सात दिनां पाछै ई सासरै बावड़णो हो। नणदल बाई सा कंवळी, नवी-नकोर रजाई बरत कै न्याहल होयगी। सुंवारै बैं बडळी भावज नैं रजाई की नरमी अर गरमी घणी-घणी सराई। भराई अर तगाई कै बखाणां सागै दोन्यूं हाथां सूं रजाई नैं दाब-दाब कै रूई नैं भोत लूंठी बताई, सराई।

भाभी सा ई मुळक'र वां रै साथै आपआळै बिचलै पढेसरी पवन नैं धन्नै धुनकै कनैं भेज कै दो और रजायां का खोळा भरबाटै पुगा दिया। वां पण कुहाई कै रूई 'सागण' बाईज होवै। बा की बा सुस्यै-सी कंवळी नरम'र धवळी-धप्प। कीं ई उन्नीस-बीस नीं होवै। नीं तिल घटै'क नीं रती बधै। सागण बाईज रूई पींद कै रजायां भरणी है।

धन्नै कै गळै नमाज पड़गी। आफत जीव घलगी। नटै तो कींकर। जे हांमी भरै तो 'सागण' बाईज रूई ल्यावै कठा सूं।

लारलै बरस सेठ केजड़ीवाल को सगळो कुणबो तीरथां गयो परो। तीरथां न्हाण करतां, चोखा न्यारा न्यारा देवरा-देळी धोक्या, दरसाव करया। बावड़ण सूं पैलै दिन गंगासागर न्हाण करता थकां पवन सूं बडोड़ो बेटो, जिको पाणी मांय किनारै खड़्यो हो, बीं नैं अचाणचकै मगरमच्छ टांग मुंडै घाल कै जळमगन होग्यो हो।

सगळो कुणबो लकवै मार्‌योड़ो सो सरणभट्ट सुन्नो होग्यो। हाहाकार, रोळा-रबदा करया पण बां सूं के होवणो हो। गोताखोर बुलाया। नजीक कै पुलिस थाणै में रिपोट दरज

ISSN : 2348-9251

कराई। घणो ई हेरयो पण ढाक का बै ई तीन पात। कीं हाथ नीं आयो। ल्हास ई हाथ नीं आई। रो धो'र घरै पाछा आ पूग्या।

सेठ संस्कारां निमित बणावटी ल्हास को दाग लगायो। बेटै कै बजन सूं दूणी सवा कुंटल कंवळी सांतरी रूई अर रेजगी की अणटूट बौछाड़ करी।

हमेस की तरियां मुसाणां पड़ी रूई बोरयां-कट्टां मांय भरयोड़ी पिंदारा कनैं आय कै रळम-फळम होय जावती रैयी। आ कीं घणी सांतरी होवणै सूं धन्नै बचाय कै खास गिरायकां खातर राख छोड़ी ही। बीं नैं ई सुंवार-संभाळ केजड़ीवालजी की पाच्यूं रजायां भरी ही।

धन्नै की अमूझणी छंटै तो कियां छंटै? बापड़ो मांय ई मांय घुटै। 'सागण' बाईज रूई ल्यावै तो कीं कै बाप की। कठा सूं बापरै। बीं कै जीव नैं अणूंतो घ्यार घलग्यो।

-उत्सव, ए-25 श्रीराम कॉलोनी,
रामनगर विस्तार, सोडाला, जयपुर-302019
कानाबाती: 9828151412

कथेसर रा सदस्य बणो अर बणाओ सा!

चैक/ड्राफ्ट **संपादक कथेसर** रै नांव भेजो या खातै में जमा करवायनै फोन सूं सूचित करो सा!

दो साल रा रिपिया दो सौ
पांच साल रा च्यार सौ
आजीवण अेक हजार अेक सौ रिपिया भेजो सा!

पंजाब नैशनल बैंक, खाता नांव- संपादक कथेसर
खाता संख्या- 1363000101038668, IFSC Code : PUNB0136300

बेसी जाणकारी सारू संपर्क करो सा! कानाबाती : 9460102521, 7742814567

ISSN : 2348–9251

संजू बिरट 'मुकाम'

कठ-पूतळी

'रानोऽऽऽ!' दैकती-दहाड़ती आवाज। अर रानो रो डील थर-थर कांपण लाग्यो। प्राण-सा निकळग्या।

फेरूं बा ई आवाज आई- 'रानोऽऽ!.... कठै मरगी?'

इणरै सागै ई तावळा-तावळा पग बाज्या। रानो खुद में ई दुबकण लागी।

रसोई रै खूणै में छापळ'र बैठी रानो पर निजर पड़तां ई बो दूंक्यो- 'के करै अठै? कमरै में जा।'

पण रानो चुप।

बो फेर बोल्यो- 'सुणै कोनी के, कमरै में जा।' पण रानो तो जियां पत्थर होगी होवै। बेज्यान।

अबकै उण रानो री बांह झाल ली अर घींसतो कमरै में ले ज्याण लाग्यो।

'म्हैं कोनी जाऊं, कोनी जाऊं म्हैं।' अै पैला सबद हा जका बीं रै मुंडै सूं निसरया। उण रानो री गाल पर तीन-च्यार थाप जड़ दिया। बाखोटियै री-सी आंख्यां सूं अेक सागै कई बूदां बरसगी।

अबार रानो कमरै में ही।

बारै हॉल में मोहन, जको रानो रो पति हो, फगत नाम रो पति, बीं रै साथै दो और जणा ई हा। बठै दारू रो भभकीलो गोठ चालै हो। कमरे में रानो नैं नोचतो अेक आदमी।

रानो, जकी री आत्मा भोत पैलां मर चुकी है, बा खाली सिसकियां ल्यै ही। बीं री पलकां में पीड़ रा आंसूं भरीजण लागरया। इयां लागै जाणै कोई गीध आपरी भूख मिटावण खातर किणी ल्हास नैं नोचतो होवै। जाणै कोई कागलो कीं बेबस-बिच्यारै पसु रै डील माथै बण्योड़ै घाव में चांच मारनै खुस होवतो होवै। पण अै गीध अर कागला के जाणै कै जकै साथै बै खेल खेलरया है बां में ई कदे मर्म हो, भाव हा, अैसास जिसी चीज ही। पण

ISSN : 2348-9251

गीध-कागला आ क्यूं सोचै ? बां री भूख सिरै है, बीं रै बदळै दर्द अर पीड़ रो अैसास बां नैं क्यूं गवारा होवै ?

ओ रोज रो खेल हो। रानो पन्दरा साल री ही जद गरीबी सूं जूझतै बाप बेटी नैं बेच दी। अर जद सूं लेयनै आज तांई दरिंदगी रो नवो पानो रोज रानो री जिनगाणी री किताब में जुड़ै। रोज बीं री मासूमियत रो कत्ल होवै, बी रै भीतर सूं औरत नैं खींचनै बारै काढीज्यै अर मारीज्यै।

रानो री आंख्यां सूं गंगा-जमना बैवै ही। बीं री निजर इकलग दीवार माथै टिक्योड़ी ही। अचाणचक रानो री धुंधळायड़ी आंख्यां में कीं आकार उभरया अर होळै-हौळै दो कठ-पूतळ्यां में बदळग्या।

अेकर दोनूं कठ-पूतळ्यां रानो कानी देख्यो अर जोर रो ठहाको लगायो। फेर दोनूं बातां करण लागगी- 'इण नैं देख अे ! इण री हालत तो आपणै सूं ई माड़ी है।' बां मांय सूं अेक रानो कानी इसारो करती बोली।

'सांची कैवै। आपां तो पूतळ्यां हां, काठ री पूतळ्यां। बणी ई कीं और रै हाथां अर नाची ई कीं और रै हाथां। पण इणनैं देख, इंसान कुहावै अर हालत आपणै सूं ई गई-गुजरी। हा हा हाऽऽ... !!' अर कित्ती ई देर तांई दोनूं हांसती रैयी।

रानो जकी अजे तांई बेज्यान पड़ी ही, अब बां दोनुवां नैं हैरानी सूं देखै ही। बां री हांसी रानो रो काळजो चीरती टिपै ही।

'गळत कैवै थूं !' दूसरी कठ-पूतळी बोली। 'आ इंसान कोनी। आ ई आपणी तरियां काठ री पूतळी-भर है। आपां तागै सूं बंधनै नाचां अर आ बिना तागै नाचै।'

'हां, आ ई साची है। इण नैं इंसान कैवण रो के मतलब ? पण सखि, तागै बिना तो कठ-पूतळी ई कोनी कुहावै। इणनैं ल्हास कैवणी चाईजै, ल्हास। आवारा ल्हास। जकी साथै चीर-फाड़ करण पर कोई रोक टोक कोनी होवै।' अर दोनूं फेर हांसी।

रानो उठ बैठी। बीं री हैरत बढती जावै ही। कियां अै कठ-पूतळ्यां बीं रो मखौल उडाण लाग री है अर बा चुपचाप सुणै।

बा कीं बोलण नैं होयी कै अेक कठ-पूतळी आंख दिखाती बोली- 'के होयो ? रीस आवै के म्हारी बातां सुणनै ? बुरो लागै के म्हारो हांसणो ?'

दूसरी बोली- 'ना री, इणनैं कीं बुरो कोनी लागै। इणनैं कीं फरक कोनी पड़ै, जियां आपांनैं कोनी पड़तो कीं रै ई मरजी मुताबिक नाचण पर। जद कठ-पूतळ्यां नैं फरक कोनी पड़ै तो ल्हास नैं के फरक पड़सी ?'

अबकै रानो चीखणो चावै ही। चिल्लायनै बा जताणो चावै ही कै बीं में प्राण है, बा ल्हास कोनी। पण बीं री आवाज कठां में ई घुटगी।

पैली कठ-पूतळी दूसरी कानी आंख दबाती बोली- 'ओ हो, देवीजी नैं तकलीफ होवै। छटपटाहट होयरी है रानो जी नैं। हा हा हाऽऽ!'

अब दूसरी री बारी ही। उण रानो सूं मुखातिब होवतां सवाल दाग्यो- 'के सोचै है थूं? तेरै अकड़नै सूं म्हे डर ज्यावांली? अरै, थूं म्हानैं के डरावैली, जकी खुद इत्ती डरयोड़ी है। जकी कनै वजूद जिस्यो कीं है ई कोनी।'

पैली बोली- 'थारै सूं तो म्हे ई चोखी हां। कठ-पूतळी रो तो वजूद ई दूसरै हाथां में होवै। नाचण खातर ई बणां म्हे। पण फेर ई नकार दियो म्हे इणनैं। इस्यै वजूद रो के मतलब जकै में आपरो कीं होवै ई नीं। अरै बावळी, म्हे प्राणहीन हां, पण थूं क्यूं मुर्दा बणगी?'

रानो मून। जाबक मून। बिना पलक झपक्यां बां री बात सुणै।

पैली फेर बोली- 'थूं तो दुनिया नैं नवो मारग दिखावण वाळी ही, सिरजण करण वाळी ही नीं? तो के इण कादै सूं नवो मारग निकळै, जकै में थूं कळीजी पड़ी है? इण दरिंदगी सूं नवो सिरजण होवै? म्हानैं नचावण वाळा भोत बार थारै इतिहास रा ई मुखौटा पहराया म्हानैं। पण थूं बां इतिहास वाळै लोगां री बिरादगी सूं न्यारी है? या कद ई पलटनै इतिहास देख्यो ई कोनी थूं?'

दूसरी बोली- 'जाग री जाग। थूं जे अंगड़ाई लेवैली तो फूल झड़ै ना झड़ै पण लोही जरूर पड़ैलो। थारै में तो इत्तो तिजाब भर्‌यो है के थूं सिरस्टी नैं गाळ सकै। अेकर भीतर झांक, कठैई दुरगा ई बैठी है थारै मांय। बीं नैं जगा, बारै काढ। लुगाई ना बण चाये, पण ल्हास तो मत रैय। ल्हास नाऊं तो कठ-पूतळी होवणो ई सौ बातां आछो।

अबकै दोनूं कठ-पूतळ्यां अेक साथै रोस में भरनै बोली- 'जे इत्तो ई नीं कर सकै तो बाळ ले खुद नैं। कम सूं कम तागो तोड़ण री हिम्मत करण वाळी कठ-पूतळ्यां रो हौसलो तो ना टूटै थनैं देखनै।'

रानो उठ खड़ी होयी।

दोनूं फेर बोली- 'थोड़ी देर में फेर कोई आवैलो, फेर रौंदैलो थनैं। फेर कोई और, कोई और..... । जाणै कित्ता लोग थनैं चूंटण री उडीक में हैं। खुद नैं नुचवाण खातर त्यार रैय का कठ-पूतळी बणन री हिम्मत जुटा..... नीं तो..... हा हा हाऽऽ!!'

रानो जोर सूं आपरा कान भींच लिया। 'ना, ना। म्हैं और नीं होवण द्यू खुद साथै ओ खेलो। म्हैं कठ-पूतळी बणूंली। तागै बिना। आपरी मरजी सूं जीवूंली।'

ISSN : 2348-9251

अर दोनूं कठ-पूतळ्यां हांसती-हांसती रानो में ही अलोप होयगी। अेक झटकै में ई रानो दरवाजै माथै ऊभी ही।

च्यारूं जणा बीं नैं देखनै चिमक्या। मोहन दहाड़्यो- 'थूं अठै के करै ? भीतर जायनै बैठ।'

'क्यूं थूं म्हनैं आपरी गुलाम समझ राखी है ?' रानो री आंख्यां सूं खीरा बरसै हा। 'तेरी इत्ती हिम्मत ?' कैवतां जियां ई मोहन खड़्यो होयो, रानो लपकनै दारू री खाली बोतल उठा ली। बोतल नैं जोर सूं भींत पर दे मारी।

'खबरदार, जे आगै बढ्यो तो, गळो कटा बैठैलो।'

मोहन हैरान खड़्यो रैग्यो। 'थूं भोत मनमानी करली। मेरो बचपन गरीबी खायगी अर जवानी थूं ! कदी अेक पल खातर ई थनैं मेरी तकलीफ रो अैसास होयो ? थारै जिस्यै राखसां सूं लोहो लेवण खातर अब खुद सीता नैं ई हथियार उठाणा होसी। कोई तिणखो सीता रो सतीत्व नीं बचा सकै।' कैवतां-कैवतां रानो रो गळो रुजग्यो।

बा फेर बोली- 'म्हैं भोत सह लियो, पण अब और नीं। अजे तांई थैं अेक अबळा नैं देखी ही, पण, अब म्हैं थनैं बताऊंली कै अबळा जद जागै तो के कर सकै।'

बोतल नैं हथियार बणायां रानो रा कदम होळै-हौळै मैन-गैट कानी बधै हा। मोहन अर बीं रै मितरां नैं विसवास कोनी होवै हो कै आ रानो ई है।

मैन-गैट सूं बारै पग धरतां ई रानो धड़ाम सूं दरवाजो बन्द कर दियो अर कुण्डी लगादी। बा पूरै जोर सूं भाज पड़ी। भाजतां-भाजतां बीं री सांस फूलगी, पण कदम हाल थक्या कोनी हा। आज तो बीं में नवो जीवण सांचर होयो हो। बा तागा तोड़नै आई ही। रानो रा कदम दुगणै वेग सूं पुलिस थाणै कानी बधै हा।

परलीका, वाया-गोगामेड़ी (हनुमानगढ़) 335504
कानाबाती : 8696208525

ISSN : 2348–9251

सैणी दान रतनू

बैरण बीनणी

'चाय ले लो चाय गरमागरम चाय.....ऊनी-ऊनी....अेकदम बळबळती। छोरा पीयै अर डोकरै नैं उगै। चाय माता सरसती, पैला पीता लखपति, हमैं पीवै घरपति, करू करू जतै मर मती, पीयू पीयू जितै ठर मती, हमैं पीवै घर पति, अेकदम कड़का कड़क पांच रिपियां री अेक, दस रिपियां री तीन, खुद पीवो अर पड़ोसियां नैं ई पावो।' रो हाको जद म्हारै मुंडा आगै आयनै जोर सूं करियो तो म्हूं अचकचायनै वर्तमान माय आय नै देखियो तो ठाह पड़ी कै अेक दस बरस रो टाबर हाथ मांय प्लास्टिक रा कप अर केतली लियां फाटोड़ी बनियान पेरियोड़ी घूमतो निगै आयो।

म्हैं उणरै साम्हीं खरी मीट सूं जोयो अर कैयो, 'भाया, गरमागरम है तो पैलां थारी धूजणी तो मेट, पछै म्हारो सोच करजे। वो बोलियो, 'आप सही फुरमावो, पण आप म्हारै सेठ नैं जाणो कोनी। कप भर नाप-नाप नै देवै अर पाछा जावो जरे अेक-अेक कप रो हिसाब लेवै। राई-रत्ती रो फरक आय जावै तो पछै रोटी रा जांदा ईज पड़ै अर म्हारी तो गई भैंस पाणी मांय। स्यान रा टका व्है जका न्यारा। रात कीकर निकळै, म्हारो जीव जाणै।'

म्हैं पूछियो, 'थारो सेठ नगटो है कांई ?'

'अरे सेठां, कांई बताऊं। अेकदम जमराज रो ईज बड़ो भाई है। काळो तदीर। मोटा मोटा दांत। आंख्यां लालचुट्ट व्हियोड़ी ईज रैवै। स्नान मां जणियो जदी ईज करायो व्हैला। उणरै हाथ रा दो बोर ई नीं भावै।'

'थारी सेठाणी उणनैं लड़ै कोनी ?' म्हैं पूछियो।

'व्है तो लड़ै।'

म्हैं पूछियो, 'ब्याव होयो कोनी थारै सेठ रो ?'

'उणरी ईज बळत म्हारै माथै काढै।'

म्हैं भळै पूछियो, 'अैड़ी कांई बात व्हैगी।'

ISSN : 2348-9251

छोरो बोलियो, 'आगै तो बावसी गोरा घणा अर पछै लगाई भबूत। तवा जेड़ो रंग काळो तदीर। जिन्दगी मांय किणी नैं चाय रो कप ई नीं पायो। हाय धन – हाय धन करता इणरा बाप ई गया परा अर ओ ईज इणरो हाल। अेक मिनट ई सांस कोनी लेवै अर नीं लेवण दे। दौड़ गधी मोड़ी लदी। चाळीस बरस रा व्हैगा, किणी इणारै पावटियै पग नीं धरियो। भायां देखियो अेकलो माणस है। दस-बारह बरस भळै जीवैला। अर पछै सगळो माल-मत्तो आपणो ईज है। पण म्हारलो सेठ ई पूरो। तेवड़ै जिकी पूरी करै। घर घोचियां रा बळै तो सोरा ऊंदरा ई को होवै नीं। रात-दिन आ ईज लगन राखै कै ब्याव चाहे व्हो कै मति, वो नातरो तो लावणो ईज है। इण सारू भाई-गिनायतां नैं भोळावण दियोड़ी। आंधां नैं हिया फूटोड़ो मिल ई जावै। अेक दिन अेक दलाल सूं भेंटा हो ईज गिया।

अेक दिन राजा कर्ण री वेळा दुकान खोली ईज ही। सगळा छोरा दुकान री साफ-सफाई में लागियोड़ा। सेठजी आपरी गादी साफ करनै भगवान नैं अगरबत्ती कर बढिया गिरागी री मानता कर बैठा ईज हा कै भाईजी दुकान माथै आयनै चाय अर मिर्ची बड़ो मंगायो नै खावणो सरू कीनो अर बोलण लागो, 'टेम सफा मोळो आयगो है। किणी रै भलाई रो जमानो नीं रैयो है। नमाज पढता रोजा गळै पड़गा। म्हारो राम निकळगो जिको इणांरी बाता में आयगो। घरे नीं बूको घाणी करावा ढूको। पैसा अंटी में नीं हता तो लालकी मुंडा में ईज राखता। बिना रिपियां बनड़ी भावै ईज क्यूं?'

बनड़ी रो नांव सुणतां ईज सेठ साब उण कानी कान ढेरिया अर भाईजी नैं कैयो, 'क्यूं राजा कर्ण री वेळा किणी री भुडिया करो हो।'

'भुडिया री बात कोनी सेठां, म्हारै मांय बीती जिका म्हैं ईज जाणूं कै म्हारो राम जाणै। अेड़ो कांई हुयो जिको इतरा नेना नेना होवो हो। सोदो फोन माथै करियो अर अबै नट गिया। म्हारै ई जबान रो सवाल है। अरे क्यूं काया नैं फोड़ा घालो हो। कोई बात बतावो तो उगाड पड़ै। व्है सकै म्हैं आपरी कीं मदद कर सकूं।'

सेठां, 'आपरै वश री बात कोनी। ओ लुगायां रो पम्पाळ अेड़ो ईज व्है।' लुगाई रो नांव सुणतां ईज सेठां नैं बात माय रस आवण लागो। वै थोड़ा नेड़ा सिरकतां कैयो, 'गूंगा मन सुपनो भयो, सोच-सोच पछताय। बतायां बिना बात बिगड़ै। उगाड़ियां अळूजाळ मिटै। इण सारू विगतवार बतावो तो म्हैं आपरी जरूर मदद करूंला।'

'सेठां, पन्दरा-बीस दिनां पैली मांगीलालजी रो फोन आयो हो। छोरो मोटियार व्हेगो है। माथाफोड़ी घणी करी पण मामलो अजे तांई बैठो कोनी। भाई सेण सगळां नैं भोळावण, पण कारी नीं लागरी है। हमैं कीकर ईज करनै संघ द्वारकै पुगवाणो है। मेहर करो। अहसान जिन्दगीभर नीं भुलूंला। रिपिया-टका री थे फिकर मत करजो। छोरा नैं फेरा देणा है। आपरो

ISSN : 2348–9251

दिल्ली मद्रास आवणो-जावणो है। ज्यूं जमै त्यूं ईज जमावो। जमावणो पड़ैला आपनैं। राजी राखूंलो अर टाबर नैं कोई तकलीफ नीं आवै। आ म्हारी जुबान है। म्हैं ई जूनी ओळखाण नैं मान देवतां मांगीलालजी रो मान राखियो। पचास हजार माय सोदो तै करियो अर म्हारो कमिसन न्यारो।

परसों रात रा म्हे टाबरां सागै मारवाड़ पूगां अर मांगीलालजी नैं बात करी कै आपरो माल हाजर है। कठै पुगावूं। इतरो सुणतां ईज वै तो गळै पड़गा। म्हारै सूं बात करिया बिनां थे आया ईज क्यूं। म्हारै सोदो नीं बैठे। गल्लो करावता कांच बारै आयगी। म्हारो कमीसन तो गयो बेरा मांय। टाबर नैं म्हैं कठै राखूंलो। आपरै विस्वास माथै लायो। म्हारी रकम भरो। किणरी रांड मरै अर किणी नैं सुपनो आवै। म्हारी पत गी। धंधो भळै न्यारो खराब व्है। आईन्दा सूं म्हारो कुण विस्वास करैला। दिल्ली मांय रैवणो दोरो होय जासी।

म्हारा सेठ भगत भागवत सुणै ज्यूं कान लगायानै ध्यान सूं सुणै हा। ज्यूं-ज्यूं उठीनै सूं रिस्तो तूटतो निगै आयो, त्यूं-त्यूं आपरो जुड़तो निगै आयो। अेक रै नुकसान मांय दूजै रो फायदो। म्हारा सेठजी बोल्या, 'आप नाराज नीं व्हो तो अेक बात कहूं। ओ सोदो म्हारै सूं तै कराय दो तो आपरो माजणो जावतो रैय जासी अर मरो पण घर मंडण होय जासी। रही बात कमिसन तो आप दो हजार मांय सूं बेसी लेजो। सेठजी तो जबरा राजी हुया। घरे बैठां गंगा आई। सेठजी उणानै नेड़ा बुलाया अर अेक कड़का-कड़क चाय रो ऑडर दियो तो छोरा ई चकरीजिया। आज नवो ईज दिन उगो है। कै तो म्हारा दिन फोरा कै सेठजी रा। नवो नांव जरूर व्हैला। इण गतागम सू छोरो बारै निकळियो ईज कोनी कै सेठजी दूजोड़ो बम्ब औरूं फोड़ियो कै मिर्ची बड़ा लेतो आईजे चटणी रै साथै। छोरा नैं विस्वास ईज नीं हुयो अर अेक दूजा कानी बांगा ज्यूं देखण लागा।

सेठजी होळै-होळै बात जमायली। रिपिया कमिसन समेत सिंज्या रा देवणा तै हुया अर सागै-सागै फेरा। बात समझ आवै जितरै तो मामलो तै हुयग्यो। गुदळकियो सावो जोवाड़ नै आपरै फेरा खाय लिया। घणो हाउ-जम्पो नीं करनै आपरै दो-चार रिस्तेदारां नैं बुलाय लीना। ज्यूं देखे ज्यूं बींद बणनो अर फेरा भेळा ईज व्हेगा। सेठजी रा पगला जमी माथै नीं टिकै जाणे गढ जीतियो। सेठजी तो देखै ज्यूं कमरै मांय बड़ता ईज निगै आया। जिको परभात ईज हेलो पाड़ियो, 'छोरा, दोय कप चाय बणायनै लाव। अेक म्हारै अर अेक थारी सेठाणी सारू।' छोरो चाय लेयनै पूगो तो सेठजी आळस मरोड़ नै बैठा हुया अर कप लेवता थका बोलिया, 'दूजोड़ो कप सेठाणी नैं देय दे। सेठाणी सायद गुसलखाने मांय है। छोरै बारै आय अठी-उठी जोयो। पण सेठाणी नजर नीं आई। उण हेलो करियो, 'सेठाणीजी-सेठाणीजी!' पण घर मांय सेठाणीजी हुवै तो बोलै। कुण बोलै? छोरै आय सेठजी नैं बात

ISSN : 2348-9251

बताय दी कै सेठाणीजी तो कोनी बोलै। सेठजी छोरा री बात सुणतां ईज हड़बड़ाय नै बारै आय देखियो तो सेठाणीजी रो पतो ईज नीं। दौड़नै दूजोड़ै कमरै मांय गिया, पण उठै सफा सुनियाड़। उठै सूं तिजोरी आळै कमरै मांय जातां ईज सगळो खिलको समझ आयगो। तिजोरी खुली पड़ी अर सगळो मालमत्तो ले सेठाणीजी सरक गा। सेठजी रो ऊपरलो सांस ऊपर अर नीचलो सांस नीचै। अेकदम चमगूंगा-सा व्हेगा। कुठोड़ पीड़ अर सुसरोजी वेद। कैवै तो किणनैं कैवै। हाथै कीना कामड़ा किणनैं दीजे दोस। बाको फाड़ नै बोबाड़ मेलियो, पण बोलो राखणियो कुण। कई ताळ तो अमूजिया पछै छोरां नैं दोड़ाया। निगे करो रे, वा रंडी अर वो रुळेट कठै गया। सगळो स्हैर जोयो, पण पंखेरू तो उड़ गिया।

सेठजी मुंडो उतारियां घर आयनै बैठा। जाणै बाप आज ईज मरियो है। म्हे सगळा ई मुंडो उतार सेठजी कनै बैठगा। सेठजी बोलिया, 'म्हारी अर म्हारै बापू री कमाई री मैथी मेल दी। हमैं छोरो थारो फरज कै म्हारो माजणो राखो।'

उण दिन सूं म्हे सगळा म्हारो फरज समझ नै दिन-रात अेक करनै लागोड़ा हां। फरज रो रूप देखनै म्हे ई सगळी चाय म्हारै साथियां नैं पिलाय नै रिपिया चुगता करिया अर म्हारो फरज निभायो।

गांव-घड़ोई, पोस्ट-कल्याणपुर (बाड़मेर)
कानाबाती : 9828131973

पठेसर दीठ

...पानै 5 रो बाकी

डॉ. जितेन्द्र कुमार सोनी री कवितावां घणी सांतरी लागी। कवितावां मांय जको स्हैर अर गांव रै बीच रै द्वंद्व नैं पिछाण्यो ओ घणो फूटरो लाग्यो। राजू सारसर री कवितावां मांय नारी अर धार्मिक भावना री गत बताई है। सारसर री कविता समाज नैं राह दिखाण रो काम करती लखावै। रामदास बरवाळी रा दूहा मायड़भासा नैं संवैधानिक मान्यता दिरावण सारू पक्षधर बण्या है। मोहन आलोक रै किस्सां नैं पढ'र कोई खुद नैं हांसण सूं नीं रोक सकै। आपां नैं आं रै लारली संजीदगी नैं समझण री जरूरत है। कृष्णा कुमारी अर डॉ. जगदीश गिरी रो काम ई घणों सांतरो लाग्यो। पढ'र घणो चोखो लाग्यो। 'कथेसर'रै प्रकासन रो काम घणो चोखो लाग्यो।

-कुमार श्याम 'इन्दलिया'
बरमसर (हनुमानगढ़)

High level literary magazine

Read the Jan -june edition of your esteemed journal. Beautiful poems n short stories. Spl 'Chhaal' n 'Rohide ra fool'. Good editorial. Congrats For such a high level literary magazine.

-Bhupinder Singh, *Hanumangarh.*

ISSN : 2348–9251

संस्मरण

पेंटर भोजराज सोलंकी

मालू काका

आ 1944 री बात है जद म्हैं खाली 7 बरसां रो हो। म्हारो दादाणो जेळ रोड़ माथै हो। बठै म्हैं म्हारै दादा-दादी, मां-जीसा, भाईजी अर काकावां रै साथै रैवतो हो। म्हारै दादाणै रै सामली गळी मांयनै अेक मालू काका आपरी बैन अणची रै साथै रैवता हा। म्हारै दादोजी री दुकान कोट दरवाजै रै ठीक मांयनै प्रेमराज-खूमराज नांव री (बुट्टा बीड़ी री) ही। बीं दुकान रै चिपती ही दुकान मालू काका री साईकलां ठीक करणै री ही। बै बीं टैम 19 बरसां रा फुरतीला अर हिमती मोट्यार जवान हा। म्हारा जीसा बांनै मालू कैवता अर म्हारी मां बांनै मालचन्दजी कैवती ही।

बीं टैम अंगरेजां रो राज हो अर सिपाई अर अफसरां सूं लोगबाग बात करता ही डरता। अबै थांनै मालू काका अर म्हारी असली बात बताऊं :

अेक दिन म्हैं म्हारै दादोजी कनै दुकान माथै बैठो हो। दादोजी मूतिया करण नै दूकान लारै गया। बीं टैम गल्लै मांय सूं म्हैं अेक आनी निकाळ'र सामणै खड़्यै गाडै आळै सूं सिंगोड़ा लेय आयो। इत्तै मांय दादोजी आयग्या। दादोजी म्हनैं कैयो, 'गल्लै मांय सूं चोरी कर परो'र सिंगोड़ा लायो कांई ?'

म्हैं बोल्यो कोनी। दादोजी कैयो, 'चोर कठैई रो!' इयां कैय'र बै कोट दरवाजै कनै खड़्यै सिपाई नैं हेलो पाड़'र कैयो कै ओ छोरो चोर है, इयै नैं पकड़लै। बो सिपाई हाथ सूं इसारो करयो, 'ठैर जावो, म्हैं आऊं!'

म्हारा जीसा दुकान रै मांय बैठा कोरे पान री कवळी ठीक करता हा। बां कनै दादोजी उठ परा'र गया परा। म्हैं अेकलो डरूं-फरूं हुयोड़ो हो कै बो सिपाई म्हनैं आय'र कैयो, 'ओ छोरा! तूं चोरी करी कांई ?' म्हैं डरयोड़ो बोल्यो कोनी। बो सिपाई म्हारो हाथ पकड़ण लाग्यो। म्हैं सोच्यो कै दादोजी तो म्हनैं साच्याणी पकड़ावणो चावै अर जीसा मांयनै बैठा है। अबै तो ओ सिपाई म्हनैं पकड़ लेसी। म्हैं हाथ छोडा'र रोवतो थको हेलो पाड़्यो, 'ओ मालू

ISSN : 2348-9251

काका!' म्हारी चिरळाट सुण'र मालू काका दौड़'र आया अर उण सिपाई सूं पूछ्यो कै क्यूं रोवाणै इयै छोरै नैं?' म्हैं मालू काका रै काठो चिपग्यो।

मालू काका बीं सिपाई नैं फेरूं पूछ्यो, 'ओ क्यूं रोवै है?' तो बो सिपाई बोल्यो, 'इण छोरै चोरी करी है।' मालू काका कैयो, 'चल अठै सूं, छोटो देख'र टाबर नैं डरावै।' बो सिपाई गयो परो। मालू काका म्हारा आंसू पूंछ म्हनैं कैयो, 'अबै डर ना, देख भगाय दियो उण सिपाई रै बच्चै नैं।'

इत्तै में दादोजी आयग्या। मालू काका नैं पूछ्यो, 'कांई हुयो, ओ रोयो क्यूं?' मालू काका कैयो, 'कांई कोनी।' इयां कैय'र बै आपरी दुकान मांय गया परा।

म्हैं मन मांय सोच्यो कै मालू काका जोरदार आदमी है। बै तो सिपाही सूं भी कोनी डरै। म्हारै मन में आ जचगी कै म्हारै दादोजी अर म्हारै जीसा सूं तो मालू काका घणा हिम्मत आळा आदमी है।

❑❑

अेक दिन दिनूगै-दिनूगै ई म्हारै घर आगै तीन भंगी बैठा हा। बीं टैम ई अेक मोटर आई। मोटर मांय सूं दो अफसर टोप पैरयोड़ा उतरिया। बै अंग्रेज हा पण हिन्दी थोड़ी-थोड़ी जाणता हा। अेक भंगी म्हारै घर कानी हेलो कर कैयो, 'अै कलेक्टर साब अर इंजीनियर साब आया है।' म्हारा जीसा झट दौड़'र बारणै आया। राज री मोटर देख'र पास-पड़ोसी अर केई टाबर ई बठै भेळा हुयग्या। म्हारा जीसा हाथ जोड़'र खड़ा रैया। अेक जणै जीसा नैं पूछ्यो, 'वो नाला कहाँ है?'

जीसा डरता-डरता कैयो, 'साब म्हांनै ठा कोनी, म्हैं बीं नै जाणां ई कोयनी।'

बो अफसर फेर कैयो, 'जो नाला डट गया था!'

म्हारा जीसा हाथ जोड़्यां ही बोल्या, 'साब म्हैं कैनै ई कोयनी डाट्यो, साब म्हैं बीं नैं जाणां ई कोयनी तो डांटा कैनै?'

म्हैं बांरी बात सुण'र मन में सोच्यो कै मालू काका नैं बुलाय लावां। मालू काको ई आंनै सकसी। म्हैं सांमली गळी मांय दौड़तो गयो अर मालू काकै नैं बुलाय'र लेय आयो। मालू काको बांनै हाथ जोड़'र पूछ्यो, 'हुकम करो साब!'

साब टोप बगल मांय धर परो'र म्हारै जीसा कानी आंगळी कर परो'र कैयो, 'ये कैसा आदमी है, मैं क्या पूछता हूं और ये और कोई जवाब देता है।'

मालू काको कैयो, 'आप म्हनैं हुकम करो।'

बिचाळै ई अेक हरिजन बोल्यो, 'अै बीं जेळ आळै नाळै रो पूछै है, जको डटग्यो है।'

ISSN : 2348-9251

म्हारा जीसा मालू काकै नैं पूछ्यो, 'अै केरो पूछै है ? कैनै पकड़ण नैं आया है ?'

मालू काको कैयो, 'आसू भाईजी, अै किणनै ई पकड़ण नैं कोनी आया। अै तो जेळ आळै नाळै रो पूछै है जिको डटग्यो है। इयां कैय परा'र मालू काका जेळ रै सारली खंडाडै आळी गळी सांमी आंगळी कर परा'र कैयो, 'चालो साब, म्हैं आपनैं बो नाळो बताऊं।' इयां कैय परा'र बै नाळै कनै बां दोनूं अफसरां नैं लेयग्या।

बां बो नाळो देखियो। आपस में अंग्रेजी मांय बात करी अर पछै हरिजनां नैं इसारो करयो। बां मांय सूं दो हरिजन नाळै मांय पावड़ो लेय'र उतरिया। पावड़ै सूं गंदै पाणी नैं अठीनै-बठीनै करण लागग्या। इत्तै मांय दो सिपाई भी आयग्या अर साथै जेलर साब ई आयग्या। म्हारा दादोजी रा मोटा भाई पेमराजजी भी आयग्या। बै सिपाई भीड़ नैं डपटै हा, 'कांई देखो हो, भागो अठै सूं।' घणासाक लोग बठै सूं गया परा। म्हारा जीसा अर म्हारा बडोड़ा भाईजी म्हारी आंगळी झाल्योड़ा मालू काका कनै ऊभा हा। म्हैं देख्यो बां दोनूं हरिजनां सूं पार कोनी पड़ी जणै बो अंग्रेज इंजीनियर आपरी पैंट नैं नीचै सूं दुलड़ा'र जूता-मोजा खोल'र बीं नाळै मांय उतर परो'र बो पावड़ो लेय'र तरीकै सूं बीं नाळै री डाट खोल दी। सगळो सूगलो पाणी सरर्र करतो निकळग्यो। नाळो ठीक सूं बैवण लागग्यो। बो इंजीनियर नाळै सूं बारणै निकळ आयो अर अठीनै-बठीनै देखण लाग्यो जणै मालू काका दौड़ परा'र म्हारै घर सूं अेक कुरसी लाया। बो अंग्रेज मालू काका नैं अंग्रेजी मांय कीं कैयो अर पछै कुरसी माथै बैठग्यो। म्हैं पाणी रो अेक लोटो भर लायो। अठीनै कलेक्टर साब मोटर कानी गया परा। म्हारै कनै सूं लोटो लेय'र मालू काका बीं इंजीनियर रै पगां पर पाणी नाख्यो अर अेक भंगी बां रा पग धोया अर मौजा अर जूता पैराया। पछै जेलर साब सूं चालतो-चालतो बात करतो बीं मोटर मांय बैठग्यो अर बै गया परा। जेलर साब ई सिपाइयां साथै जेळ कानी गया परा।

म्हैं मालू काका नै पूछ्यो, 'मालू काका, अै कुण हा ?'

मालू काका म्हनैं बतायो कै अेक तो कलेक्टर साब अर दूसरो इंजीनियर हो।

म्हैं पूछ्यो, 'म्हारै नानाणै कानी जिकी रेलगाडी आवै बीं रो इंजन ओ टोप आळो चलावै कांई ?'

मालू काका हंसता थका म्हारी कमर मांय थापी देवता कैयो, 'जा भोजू, अबै घर जा परो।'

❑❑

म्हारै घर रै सामनै सोनारां री पंचायती री कोटड़ी ही। भारत रै मांय आजादी री लड़ाई चालती ही। बीं लड़ाई रै कारण सूं बीं कोटड़ी रै मांय सभा हुया करती ही। जद बा सभा

ISSN : 2348-9251

हुवती बीं री सगळी वैवस्था मालू काका ई करता। दरयां बिछापणै सूं लेय'र बोलण आळै रेडियै तक री वैवस्था बै इज करता। बठै सभा मांय बोलण आळा बाबू रघुवरदयालजी गोइल, गुटड़ महाराज का दाऊजी आचारज होवता। आं सगळां रै आवण मांय टैम हुवती जणै मालू काका म्हनैं कैवता, 'बोल भोजू! चौकी माथै जाय'र।'

पछै म्हैं बीं सभा आळी चौकी माथै जाय'र आ कविता बोलतो :

घण्टा बाजै टनटन
उसमें निकले कांग्रेस जन
कांग्रेस जन गये जेल
उनको मिले भाई पटेल
भाई पटेल ने पहना गेरू
उनको मिले पंडित नेहरू
पंडित नेहरू ने खाया अचार
उनको मिले मौलाना आजाद
मौलाना आजाद के पास थी बरछी
उनको मिली कैप्टन लक्ष्मी
लक्ष्मी ने किया अंग्रेजों को काबू
उसको मिले जगजीवन बाबू
जगजीवन बाबू ने फोड़ा हण्डा
उसमें निकले गांधी बुड्ढा
गाधी बुड्ढे ने किया फण्डा
उसमें निकला तिरंगा झण्डा
तिरंगे झण्डे ने दी आवाज
इनक्लाब जिंदाबाद
इनक्लाब जिंदाबाद
भारत माता हवाई जहाज

आ कविता सुणायां पछै लोग ताळी बजावता। पछै सभा चालू हुवती।

❑❑

म्हारै दादोजी (भा) रो अेक घर गंगाशहर रोड़ माथै हो। बो घर कोई परदेसी नैं दस रिपियै महीनै मांय किरायै दियोड़ो हो। दादोजी बीं नैं घर खाली करण रो कैयो पण बो कैयो कै घर खाली कोनी करूं।

ISSN : 2348–9251

दादोजी मालू काका नै बुलाय'र कैयो, 'बो आपणो घर खाली कोनी करै, मालू! अबै आपां नैं कांई करणो चाहीजै?'

मालू काको कैयो, 'आपां सिगरेटां अर पान राजघराणै मांय भेजां ई हां। बां सूं आपणी जाण-पिछाण तो है ही, आप बांनै कैवो देखाणी। बै आपनैं कांई कैवै।'

अेक दिन दादोजी म्हनैं कैयो, 'जा भोजू, मालू नै बुलाय'र ला।'

म्हैं मालू काका नै बुलाय लायो। मालू काका दादोजी नै पूछ्यो, 'कियां बुलायो भा म्हनैं!'

दादोजी बांनै कैयो, 'आज चालां आपणो घर खाली करावण वास्तै भैरूसिंघजी कनै।'

मालू काका कैयो, 'हां चालो।'

म्हैं कैयो, 'म्हैं ई चालसूं।'

दादोजी कैयो, 'नईं, तूं चाल'र कांई करसी?'

मालू काका कैयो, 'लेयलो, ओ म्हारै कनै बैठो रैसी।' इयां कैय परा'र अेक इक्कै नैं रोक'र म्हे तीनूं बीं में बैठग्या। इक्कैवाळो पूछ्यो, 'कठै चालसो?' पेमराजजी (बडोड़ा भा) कैयो, 'गढ रै लारलै दरवाजै सांमी भैरूसिंघजी रै डेरै।'

इक्कैवाळो म्हांनै लेय'र भैरूसिंघजी रै डेरै आगै पूगग्यो। म्हे तीनूं नीचै उतर'र भैरूसिंघजी सूं मिलण खातर मांयनै गया। म्हारा दादोजी नै देख'र भैरूसिंघजी कैयो, 'आवो पेमराजजी, आज कियां आया?' पछै मालू काका कानी आंगळी कर'र कैयो, 'ओ कुण है?'

दादोजी बतायो, 'ओ म्हारो पाड़ोसी है।'

बां फेर पूछ्यो, 'अर ओ टाबर?'

दादोजी कैयो, 'ओ आपरो पोतो, ओ आपरा दरसण करण नैं साथै आयो है।'

भैरूसिंघजी पूछ्यो, 'बोलो, कांई काम आया?'

दादोजी मालू काका नैं कैयो, 'मालू! ठाकर साब नैं सगळी बात बता।'

मालू काका बीं किरायैदार सूं घर खाली करण आळी सगळी बात कैय'र सुणायी। जणै भैरूसिंघजी कैयो, 'पेमराजजी, थे निस्फिकर रैवो, काल दिनूगै थांरी दुकान माथै दो सिपाई आवैला, बांनै लेय'र कोई नै ही बां रै घरै भेज दिया। थांरो घर खाली हुय जासी बस।'

दादोजी कैयो, 'वाह सा वाह, घणी खम्मा आपरी ठाकर साब! अबै हुकम हुवै!'

भैरूसिंघजी कैयो, 'हां ठीक है, थे अबै जावो।'

ISSN : 2348-9251

दूसरै दिन म्हैं मालू काका रै घरै दिनूगै-दिनूगै ई गयो परो। मालू काका नैं कैयो, 'चालो, आपणी दुकान। बै सिपाई आपांनै अडीकता हुवैला।'

मालू काका कैयो, 'तूं इत्ता जल्दी आयग्यो।'

म्हैं बांनै कैयो, 'थे अबै जल्दी चालण री करो।'

मालू काका आपरा कपड़ा पैर परा'र कैयो, 'चाल भाई, तूं तो बोत जल्दबाजी करै।'

म्हे दादोजी रै अठै गया। दादोजी पूजा कर परा'र उठिया ई हा। मालू काका नैं देख'र कैयो, 'अरे मालू, आज इत्तो जल्दी कियां आयग्यो ?'

मालू काका कैयो, 'ओ थांरो पोतो है नीं, चालो-चालो काका! जल्दी चालो! करण लागग्यो जणै आवणो पड़्यो।

दादोजी कैयो, 'इसो ईं रो म्हासूं कांई काम है ?'

मालू काका कैयो, 'आपणी दुकान आज बै भैरूसिंघजी रा भेज्योड़ा दो सिपाई आवैला, इयै वास्तै आया हां।'

दादोजी कैयो, 'अरे हां, बै अडीकैला। चालो भाई! मालू, ओ भोजू ठीक है जको तनैं उठा'र लेय आयो।'

दादोजी चोळो पैर्‌यो। फेंटो बांध्यो। दुकान री कूंच्यां ली। आपरी साईकल निकाळी अर म्हारै सागै ई दुकान कानी चाल पड़्या। मालू काका आपरी साईकल आगै म्हनैं बैठाय लियो। म्हे सगळा दुकान पूगग्या। दादोजी दुकान री कूंच्यां देंवता कैयो, 'ले मालू, दुकान खोल।'

मालू काका दुकान खोली ई ही कै अेक साईकल माथै दो सिपाई आयग्या। अेक सिपाई रै हाथ मांय अेक मतीरो हो। बै सिपाई कैयो, 'अबै अेक ताळो ले परा'र चालो।'

दादोजी मालू काका नैं कैयो, 'मालू, तूं इज आं रै साथै जा परो। ले ओ अेक रिपियो, जावतो केदारनाथ मांगीलाल आळी दुकान सूं ताळो ले लियै। इत्तै में बै सिपाई कैयो, 'म्हे दो जणा हां। म्हांनै ई दो रिपिया देवो थांरो घर खाली करावण आळै काम वास्तै।'

दादोजी कैयो, 'दो रिपिया तो घणा है, दोनूं आठ-आठ आना लेयलो।' इयां कैय परा'र दादोजी बांनै अेक रिपियो धाम्यो।

बां मांय सूं अेक सिपाई कैयो, 'इयां कांई करो सेठां! आठ आना मांय तो सेर रसगुल्ला ई कोनी आवै।'

दादोजी कैयो, 'आ लो अेक चारानी और, अबै तो सवा रिपिया मांय छोटू-मोटू सूं अेक सेर रसगुल्ला आय जासी।'

सिपाई कैयो, 'इयां कंजूसाई ना करो।'

इत्तै मांय मालू काका सिपाई नै कैयो, 'सवा रिपियो ई मिलसी, लेवणो है तो लेवो, नहीं तो ओ भी कोनी मिलैला!'

सिपाई कैयो, 'वाह भाई वा, चालो सवा रिपियो ई देवो।'

दादोजी बांनै सवा रिपियो झलाय दियो अर बै साईकल माथै बैठ परा'र मालू काका नैं कैयो, 'लो अबै जल्दी चालो।'

मालू काका साईकल आगै म्हनैं बैठा'र चालता सट्टै बजार मांय सूं ताळो मोल लेय'र बां सिपाइयां साथै होय लिया। ठेसण सूं गंगाशहर आळी सड़क माथै पोंच्या जणै बो सिपाई पूछ्यो, 'किसो घर है?'

मालू काका कैयो, 'बीं गळी रै सांमलो ई घर है।'

सिपाई बीं घर कनै जाय'र कैयो, 'ओ ही है कांई?'

मालू काका कैयो, 'हां ओ ही है।'

बै सिपाई बीं घर रो बारणो खटखटायो। अेक आदमी बारणै आयो। सिपाई बीं नैं अेक मतीरो दियो। बो आदमी सिपाइयां नैं हाथ जोड़'र कैयो, 'म्हैं गरीब आदमी हूं। अबै कठै जासूं?'

सिपाई कैयो, 'आ म्हांनै ठा कोनी। ओ राजाजी रो ओडर है।'

'ठीक है साब, म्हैं कालै खाली कर देसूं।' बो आदमी कैयो।

सिपाई बोल्या, 'देख, अै अठै ऊभा है, अबार ई घर खाली करदै, अै आपरो ताळो लगावैला।'

मालू काका कैयो, 'लो म्हैं थांरी मदद कर दूं, घर खाली करवा दूं।'

सिपाई कैयो, 'फटाफट खाली करै है कै नईं?'

'करूं हूं।' बो घर में गयो। थोड़ी देर मांय अेक और साथै आदमी, अेक लुगाई अर दो टाबर घर मांय सूं घरबिध रो सामान लेय'र निकळ्या। पछै अेकरसी फेर घर मांय सूं सामान निकाळ लाया अर कैयो, 'लो सा, ओ थांरो घर खाली कर दियो।'

बै सिपाई मालू काका कानी आंगळी कर परा'र कैयो, 'लो लगावो थांरै घर रै ताळो।'

इयां कैय परा'र सिपाई तो गया परा। मालू काका घर रै ताळो लगा'र म्हनैं साईकल माथै आगै बैठा'र चाल पड़्या। म्हैं बांनै रस्तै मांय ई पूछ्यो, 'बै सिपाई घर खाली करण रो बांनै कैयो ही कोनी। मतीरो पकड़ावतां ई बो हाथाजोड़ी करण लागग्यो, आ कांई बात है?'

मालू काका कैयो, 'इयै मतीरै रो मतलब है कै अबै थे मती रैवो।'

जद म्हैं हंसतो थको कैयो, 'अछ्या, मतीरै रो मतलब मती रैवो।'

ISSN : 2348–9251

कोट दरवाजो आयो जणै म्हैं कैयो, 'मालू काका, म्हनैं अठै ई उतार दो, म्हैं म्हारै नानाणै ई ठैरसूं।' मालू काका म्हनैं नानाणै कनै उतार परा'र दादोजी री दुकान माथै दादोजी नै घर री कूंची भोळाय परा'र आपरै घर कानी गया।

❑❑

बीं टैम मांय मालू काका भारत री आजादी वास्तै प्रजा परिषद् मांय लाग्योड़ा। बै पुलिस सूं लुकता-छिपता फिरता। केई बार म्हारै घरै आधी रात नै आवता अर म्हारै अठै ई जीमता अर सूवता। म्हे म्हारा जीसा-मासा सगळा म्हारै कमरै मांय सूता हा कै रात नैं बारह बज्यां म्हारै कमरै रो बारणो खटखटाईज्यो। बीं टैम म्हैं जागतो हो, सो डरग्यो। ओ आधी रात नैं कुण आयो? ओ सोचतो ई हो कै म्हारा जीसा कैयो, 'कुण है रे?'

बारणै सूं आवाज आई, 'ओ तो म्हैं हूं मालू, आसू भाईजी! बारणो खोलो।'

जीसा उठ'र बारणो खोल'र कैयो, 'बोल मालू, रात नैं कियां आयो?'

मालू काका कैयो, 'म्हारै लारै पुलिस लाग्योड़ी है। इयै वास्तै लुकतो-छिपतो अठै आयो हूं। रात नैं अठै ई सोस्यूं। झांझरकै अठै सूं निकळ जासूं।'

जीसा कैयो, 'आय जा मांयनै।'

मां कैयो, 'भूखा होसो, पैली जीमलो, पछै भोजू कनै सूय जावो।'

पण मालू काका म्हारै कनै आय'र सिरख ओढ'र सूयग्या। झांझरकै ई दो सिपाई आय'र घर रै आगै हेलो पाड़्यो, 'अरे घर रै मांय कुण है, बारै आवो।'

म्हारा जीसा गोखो खोल'र देख्यो, बारणै दो सिपाई हा। जीसा गोखै सूं ई पूछ्यो, 'बोलो, कांई बात है?'

'मालचन्द सोनी कठै है?'

जीसा बांनै कैयो, 'मालचन्द अठै कठै है, बीं रो घर तो सांमली गळी मांय है। बो बठै ई हुसी।'

सिपाई रै हाथ में डंडो हो। बो डंडै सूं इसारो कर'र पूछ्यो, 'किसी इण गळी में?'

जीसा कैयो, 'हां।'

बै सिपाई बीं गळी कानी गया। म्हैं ओ देख'र रोवतो मालू काका नैं कैयो, 'अै सिपाई थांनै पकड़'र मारसी।'

मालू काका कैयो, 'रो ना भोजू, अै म्हारो कांई कोनी कर सकै।'

इत्तै में जीसा कैयो, 'मालू, बै सिपाई थारै घर कानी गया है। बै पाछा आवै बीं सूं पैली आपणै घर रै लारलै बारणै सूं खण्डाडे कानी भागजा।'

ISSN : 2348–9251

मालू काका आपरा जूता पैर-पैरा'र जावण लाग्या जणै म्हैं कैयो, 'ठैरो मालू काका, म्हैं ई चालूं।'

जीसा चिमक'र कैयो, 'गैलो हुयग्यो कांई! इयै रै साथै तूं कठै भागतो फिरसी? चुप रे सूयजा।'

मां सा कैयो, 'मालचन्दजी, भूखा हुवो तो रोटी खायलो।'

जीसा कैयो, 'म्हनैं थां सगळां रो माथो खराब हुयोड़ो लागै। ओ रोटी खासी जित्तै तो बै सिपाई पाछा अठै आया रैसी अर इणनैं पकड़ लेसी।'

म्हैं अेक कपड़ै रो टुकड़ो हाथ मांय लेय'र मां नै कैयो, 'इयै कपड़ै मांय चार रोटी अर थोड़ो अचार घाल'र जल्दी आंनै देय दो।'

म्हारा भाईजी कैयो, 'हां, ओ ठीक है। अै मालू काका कठैई रस्तै मांय जीम लेसी।'

मां सा चार रोटियां माथै अचार घाल'र बांध'र बांनै झला दियो। मालू काका रोटियां आळी पोटळी लेय'र लारलै बारणै कानी जावता हा कै रोळो सुण परा'र म्हारा दादीजी आयग्या। बै बोल्या, 'अरे मालू, तूं कणै आयो रे?' जीसा कैयो, 'अबार इणनै जावण दो मासी, ओ अबार जल्दी में है।'

मालू काका घर रै लारलै बारणै सूं खण्डाडे आळी गळी कानी भागग्या।

❑❑

देस आजाद हुयग्यो। घणा ई सरणार्थी आया। केई तो बठै पाकिस्तान मांय मारया गया। घणीक लुगायां नै उपद्रवी लोग उठाय'र लेयग्या। बच्या-खुच्या लोग भारत मांय आया जिकै मांय सूं केई सरणार्थी आपणै बीकानेर मांय आया। बां सरणार्थियां री आ दुरदसा देख'र म्हैं मालू काका नै पूछ्यो, 'आंरी आ दुरदसा कियां हुयी? इणां रै वास्तै ई थे सभा और करता हा कांई?'

मालू काका आंख्यां मांय आंसू भर परा'र कैयो, 'भोजू, म्हां आपणै भारत मांय सूं अंग्रेजां नै भगावण वास्तै इत्तो तसियो करियो। बै तो भारत छोड'र भागग्या। जावता-जावता हिन्दू-मुसळमानां रै बिचाळै फूट घाल परा'र अेक अलग पाकिस्तान बणाय'र भारत रा टुकड़ा करग्या।'

म्हनैं मालू काका आळी बात बोत ई अटपटी लागी। बां सरणार्थियां रै लुगाई-टाबरां अर बूढा माईतां नैं रोवता-बिलखता अर मांगता अर लोगां नैं आपबीती सुणावतां देखतो तो म्हैं घणो कळपतो। बै कैवता कै बठै म्हारै मां-बाप नै मार दिया। म्हारी छोटी बैनां नै उठाय'र लेयग्या। इण तरै री दुखभरी बातां सुण-सुण म्हारै दिमाग रै मांय केई तरै री अटपटी बातां आवती अर ओ सोचतो रैवतो कै आं रो दुख दूर करणो चाहीजै, पण कियां?

❑❑

ISSN : 2348-9251

म्हैं सन् 1950 रै मांयनै जद 13 बरसां रो हो, बीं टैम राणी बजार आळै चोपड़ा कटलै मांयनै कॉटेज इंडस्ट्रीज लाग्या करती ही। बीं मांय म्हैं सुनहरी नक्कासी आळो अर साईन बोर्ड लिखण रो काम सीखतो हो। बठै म्हनैं 15 रिपिया वजीफो मिलतो। म्हनैं सिखावण आळा फखरुद्दीनजी उस्ता हा। म्हैं आ सोचतो कै म्हारा गुरुजी मुसळमान है पण अै तो इसा लागै कोनी जियां बै सरणार्थी कैवता। बीं टैम मालू काका राणी बजार रै चौरायै माथै साईकलां ठीक करण री दुकान करता। म्हनैं कॉटेज इंडस्ट्रीज सूं छुट्टी हुवती जणै म्हैं नानाणै जावती बगत मालू काका सूं मिलतो। बांनै म्हैं अेक दिन पूछ्यो कै अै जका म्हनैं काम सिखावै है, अै तो मुसळमान है। जणै मालू काको कैयो अठै रा मुसळमान बठै जिसा कोनी होवै। बठै भी सगळा अेक जिसा कोनी। म्हैं कैयो कै मालू काका, म्हैं अेकर बांनै देखणा चाऊं हूं। बै बोल्या थनै बां उपद्रव्यां सूं कांई लेणो-देणो। म्हैं चुपचाप नानाणै कानी गयो परो पण म्हारै मन रै मांय हर टैम ओ गिरगिराट रैवतो कै इसा ई खराब आदमी हुवै कांई ?

अेक दिन 30 तारीख नै म्हनैं ई छुट्टी री बेळा सगळां रै साथै 15 रिपिया वजीफो मिल्यो। म्हैं बै रिपिया लेय'र नानाणै कानी जावतो हो। रस्तै मांय मालू काका आपरी दुकान आगै बैठा साईकल ठीक करता हा। म्हनैं देख'र कैयो, 'अरे भोजू, आज थनैं वजीफो मिल्यो है, रिपिया आछी तरै ले जायै, नानाणै जावै है कांई ?'

म्हैं कैयो, 'हां, नानाणै ही जासूं।'

मालू काका कैयो, 'आछी तरै जायै बेटा, थारै कनै जोखम है।'

म्हैं मालू काका नै पूछ्यो, 'बै जका सरणार्थियां रा मां-बाप नै अर बां रै लुगायां-टाबरां नै मार्‌या, बै रेलवे टेसण कनै रैवै है कांई ?'

मालू काका कैयो, 'अरे नईं रे गैला, बै तो बीकानेर सूं बारणै रैवै है। तूं डर ना। अच्छी तरै जायै।'

म्हैं कैयो, 'म्हैं डरूं तो कोनी पण अेकर बांनै देखणो चाऊं हूं।' इयां कैवतो म्हैं रवाना हुयग्यो। म्हैं रेलवे टेसण कनै पूग्यो। म्हैं सोच्यो, देखां तो सरी, टेसण माथै सूं लोग कियां आवै-जावै। म्हैं टेसण गयो। बठै आदम्यां री अेक लेण लाग्योड़ी ही। म्हैं ई बीं लेण में सगळां सूं लारै जाय'र खड़ो हुयग्यो। अेक आदमी नैं पूछ्यो, 'आ क्यांरी लेण है।'

बो बतायो, 'आ दिल्ली जावण आळां री लेण है।'

लेण आगै सरकती रैयी अर म्हैं बारी रै आगै पूगग्यो। म्हैं बीं नैं दिल्ली रो कैवै हो बीं सूं पैलां ई बो बोल्यो, 'नौ रिपिया देवो।'

ISSN : 2348-9251

म्हैं बीं नैं दस रो नोट झलाय दियो। बो म्हनैं बाराना पाछा देय दिया अर हाथ में अेक टिगट पकड़ाय दियो। अबै म्हैं बीं लेण सूं निकळग्यो। म्हैं सोच्यो टिगट तो लेय लियो, अबै कांई करां। सोचतो-सोचतो म्हैं प्लेटफारम पूगग्यो। बठै भीड़ ही। अेक आदमी नैं पूछ्यो, 'दिल्ली आळी गाडी किसी है ?'

बो आंगळी रो इसारो कर'र बोल्यो, 'आ सांमी खड़ी है नीं दिल्ली आळी गाडी।'

अबै म्हैं सोच्यो, जे गाडी में नईं बैठसूं तो ओ कैसी कै पूछ्यो क्यां खातर ? म्हैं डरतो गाडी में बैठग्यो। गाडी में अेक आदमी नैं म्हैं पूछ्यो, 'आ गाडी कठीनै सूं जासी ?'

बो बोल्यो, 'घड़सीसर कानी कर जासी।'

म्हैं सोच्यो घड़सीसर आसी जणै आपां उतर जासां अर घरै जासां परा। गाडी चाल पड़ी। आगै गयां बो आदमी बोल्यो, 'ओ देख, ओ जावै है घड़सीसर।'

म्हैं पूछ्यो, 'पण गाडी तो अठै रुकै ही कोनी !'

बो बोल्यो, 'आ गाडी सीधी नापासर जाय'र रुकै। अठै बीच में कोनी रुकै।'

नापासर आयो तो गाडी खड़ी हुयी। म्हैं नीचै उतर्‌यो पण ना तो बठै म्हनैं कोई सैंधो मिनख निजर आयो अर ना ही सैंधो-मैंधो मारग। म्हैं फेरूं डरूं-फरूं हुयग्यो। जित्तैक गाडी सीटी देय दी। म्हैं डरतो थको दौड़'र पाछो गाडी में चढग्यो। गाडी चाल पड़ी। म्हैं मन मांय सोच्यो कै अबै कांई करां। कींनै कैवां। फेर बिचार्‌यो, डरसां अर रोसां तो लोग समझसी कै ओ टाबर अेकलो ई दीसै। पछै आपांनै पकड़'र आपरै घरै ले जासी। अबै तो हिम्मत राखणी पड़सी। आ सोच परो'र आंख्यां मांय आंसू आयग्या। नीचो माथो कर परो'र आंसू पूंछ्या। गोडा बिचाळै माथो देय'र बैठग्यो। रात पड़गी। बैठो-बैठो गाडी में ई सूयग्यो। सपनै मांय म्हारी मां रोवती दीसी। जीसा म्हनैं कैवै, 'बो भोजू सूतो है।' मां रोवती कैवै, 'कठै है भोजू ? बीं नैं उठा'र म्हारै कनै लावो।' म्हनैं लाग्यो, कोई म्हनैं चंचेड़'र उठावै। म्हैं नींद सूं उठ'र बैठो कै अेक आदमी म्हारो हाथ पकड़'र कैयो, 'ओ उठ ! दिल्ली आयगी।' म्हैं आंख्यां मसळ'र उठ्यो अर रेल रै डब्बै सूं बारै आयग्यो। देख्यो, अरे म्हैं तो साच्याणी दिल्ली आयग्यो। आ सोच'र प्लेटफारम पर पड़ी अेक बैंच माथै बैठग्यो। अबै आ सोचण लाग्यो कै अबै कांई करां। म्हारै पैरण नै अेक पैंट अर अेक पट्टीदार रेसमी गिंजी अर हाथ मांय अेक घड़ी ही।

म्हैं सोच्यो, पाछो बीकानेर जावण वास्तै नौ रिपिया अर चार आना चाहीजै पण म्हारै कनै तो खाली पांच रिपिया अर बारह आना ई है। म्हारी आत्मा बोली, अबै हुयग्यो जिको तो हुयग्यो, तूं कोई टाबर थोड़ो ई है। आज तूं तेरह-चवदै बरसां रो मोट्यार जवान है। हिम्मत सूं काम लै। म्हारी हिम्मत बंधगी अर सोच्यो, डरणै अर रोवणै सूं अबै पार कोनी

ISSN : 2348-9251

पड़सी। म्हैं हिम्मत रै साथै जवान आदमी जियां प्लेटफारम सूं बारणै आयो। टेसण रै सांमनै ई अेक बाग हो। बाग रै सारकर आगै गयो जणै अेक सिनेमा दीस्यो। बीं माथै 'अलाउद्दीन जादुई चिराग' रो पोस्टर लाग्योड़ो हो जिकै मांयनै महीपाल अर मीना कुमारी ही। अेक और 'माँ' फिल्म रो पोस्टर हो जिकै मांय लीला चिंतनीय, भारत भूषण अर नलीनी जैवंत ही। पोस्टर देख्यां पछै दिल्ली मांय घूमतै-घूमतै नैं भूख लागण लागी। अेक खूमचै आळै सूं चार आना री बूंदी ली। पट्टी माथै खड़्यै-खड़्यै ई खायी अर टूंटी सूं पाणी पीयो। पछै सोच्यो, अबै रात नै सोवांला कठै ? पछै बिचार आयो कै बठै टेसण माथै इज बैंच माथै सूय जासां अर बीकानेर सूं आवण या जावण आळी गाडी माथै कोई न कोई बीकानेर रो सैंधो आदमी मिल जासी। बीं रै साथै बीकानेर जासूं परो। टट्टी-पेसाब सारू टेसण माथै जाझरू बण्योड़ो है ई। फेर सोच्यो, घूमतो-घूमतो टेसण रो कठैई रस्तो नीं भूल जाऊं। इण वास्तै म्हैं टेसण रै कनै-कनै ई घूमै हो। पछै टेसण पर जाय'र बैंच माथै बैठग्यो। जकी गाडी आवती या जावती बीं मांय सूं चढण-उतरण आळा मिनखां रो मूंडो जोवतो पण कोई सैंधो आदमी निजर नीं आयो। घड़ी देखी तो रात री दस बजगी ही। म्हैं पाछो टेसण री बीं बैंच माथै जाय'र सूयग्यो। आधी रात नैं अेक पुलिस आळो आपरो डंडो म्हारै खुभा'र कैयो, 'ए लौंडे, भाग यहाँ से ! यहाँ क्यों सोया है ? चल भाग यहाँ से !'

म्हैं आंख्यां मसळतो उठियो। फेर बो म्हनैं कैयो, 'चल भाग यहाँ से, स्टेशन के बाहर निकल।'

म्हैं बिनती करतां कैयो, 'रात नै अठै ई सूत्यो हूं, दिनूगै जासूं परो।'

पण कोनी मान्यो। म्हारो बांहुड़ो झाल'र बोल्यो, 'यहाँ से भगता है कि नहीं ?' कैवतो थको बो म्हारै डंडै री मारी। म्हैं हिम्मत राखी। रोयो कोनी। म्हैं टेसण सूं बारै जावण लाग्यो। दो आदमी म्हारै लारै चालता हा। टेसण सूं बारै निकळतां ई म्हैं अठी-बठी देखै हो जित्तै में बां मांय सूं अेक आदमी म्हनैं कैयो, 'अरे ओ भइया, घर से भागकर आया है क्या ?'

म्हैं बीं नैं कैयो, 'भाग'र कोनी आयो। म्हारी गाडी चूकगी।'

बो बोल्यो, 'चूकगी मतलब ?'

म्हारै बोलण सूं पैलां बीं रो भायलो बोल्यो, 'यह कहता है कि गाडी से उतरने पर गाडी चल पड़ी और यह वापस नहीं बैठ सका।'

म्हैं कैयो, 'हां।' म्हैं मन में तो बेजां डरै हो कै अबै ओ आदमी म्हारै साथै कांई करसी। पण म्हैं हिम्मत सूं बांनै कैयो, 'अबार रात नै म्हनैं सूवण रो ठायो मिल जावै तो दिनूगै तो म्हैं ठिकाणो बणा लेसूं।'

बै कैयो, 'चलो मेरे साथ, हम तुम्हें सुला देंगे।'

ISSN : 2348-9251

म्हैं बांरै साथै टुर बहीर हुयो। पण रस्तै में पूछ्यो, 'आपरो नाम कांई है भाई साब!'

बां मांय सूं अेक बोल्यो, 'मोहन नाम है मेरा।' म्हैं मन मांय सोच्यो, हिन्दू-मुस्लिम रो रोळो चालै है, चलो अछो है, ओ मुसळमान तो कोनी। बै दोनूं म्हनैं जामा मस्जिद री सांमली गळी मांय लेयग्या अर अेक गाडै माथै सुवाण दियो। म्हैं सूयग्यो पण नींद आई कोनी। सोचतो रैयो, अै आदमी बदमास लागै है। आपां आं रै चक्कर मांय आयग्या हां। अबै हिम्मत अर हुंसियारी सूं ई काम लेवणो पड़सी। और कोई चारो कोनी। आ सोच'र गाडै पर ई सूतो रैयो। झांझरकै नाळी में निमट'र दिनूगै बो मोहन म्हारै कनै आय'र कैयो, 'चल मेरे साथ!'

म्हैं मन मांय सोच्यो, अबार तो ओ ले जासी बठै ई जावणो पड़सी अर ओ कैसी जियां ई करणो पड़सी। बो महनैं अेक साईकल रिक्सै आळी दूकान लेयग्यो अर बीं दुकान आळै नैं कैयो, 'इस लौंडे से काम करवाओ।' इयां कैय'र बो तो जावण लाग्यो जणै म्हैं बीं री कमर पर हाथ लगा'र कैयो, 'मोहन भाई, म्हनैं भूख लागी है।'

बो बोल्यो, 'मैं क्या करूं, तेरे पास पैसे है ना, वह बैठा बंसी, पैसे देकर खा लेना।' इयां कैय'र बो गयो परो। साईकल री दुकान आळो कैवै, 'ओय, इधर आ और इस रिक्से में हवा भर।' म्हैं पम्प लेय'र तीनूं चक्कां में हवा भरी। बो रिक्सै आळो दुकान आळै नै पईसा दिया। म्हैं देख्यो ओ अबै रोटी खावण खातर म्हनैं पईसा देसी। आ सोच'र म्हैं बीं नैं कैयो, 'म्हनैं जोरदार भूख लागी है।' बो बोल्या, 'वो बैठा बंसी, पैसे देकर खा ले और जल्दी आना।' म्हैं बो बतायो जकै बंसी कनै जाय'र कैयो, 'म्हनैं दो रोटी अर साग देवो।' बो बोल्यो, 'चवन्नी दे।' म्हैं चार आना देय'र रोटी खायां पछै पाछो बीं रिक्सै आळै री दुकान पर आयग्यो। बो म्हनैं नौकर आळै दांई डांटतो बोल्यो, 'खाना खाकर आने में इतनी देर लगती है क्या?' इत्तै में अेक साईकल आळो आय'र बोल्यो, 'गोपाल भाई, जरा हवा भरना।' बो म्हारै कानी देख'र कैयो, 'देख क्या रहा है, हवा भर जल्दी!'

म्हैं पम्प सूं हवा भरण लाग्यो। बो साईकल आळो म्हनैं अेक आनी दी अर साईकल लेय'र गयो परो। बीं रै जावतां ई गोपाल म्हारै सूं बा अेक आनी खोस ली। बीं रो स्वभाव बोत ई करड़ो हो। पण म्हैं सोच्यो, सिंझ्या नै ओ म्हनैं कीं न कीं पईसा जरूर देसी अर म्हारै कनै पांच रिपिया छऊ आना तो पैली सूं ई है। पांच रिपिया और आय जावै तो बीकानेर आळी गाडी पकड़ लूं। हाथ मांय घड़ी देख'र दिमाग मांय आ बात आई कै घड़ी बेचणै सूं कम सूं कम पांच रिपिया तो मिल ई जासी। म्हैं दिन-भर बीं गोपाल री दुकान में साईकलां अर रिक्सा में हवा भरतो रैयो। बो म्हनैं पांच मिंट ई ठालो कोनी बैठण दियो। तूं-तड़ाक

ISSN : 2348-9251

बिना बात कोनी करतो। बीं रा तेवर चढ्योड़ा ई रैवता। सिंझ्या पड़ण लागी जणै म्हैं कैयो, 'अबै म्हैं जाऊं....।'

बो बोल्यो, 'अभी रुक जा, आठ बजे बाद जाना।'

आठ बज्यां पछै बो म्हनैं छोड्यो। म्हैं खाथो-खाथो घड़ी आळी दुकान जोवण लागो। दुकान मिलगी पण बा बंद ही। म्हैं बीं गाडै कनै आयो। मोहन बठै मिलग्यो। म्हैं बीं नै देखतां ई रोवण लागग्यो। बो म्हारै कनै आय'र म्हारै ढूंगा माथै हाथ फेरतो पूछ्यो, 'रोता क्यों है ? उस गोपाल ने तुझे पीटा क्या ?'

म्हैं नस हिला'र कैयो, 'नईं।'

'तो फिर रोता क्यों है ?' बो कैयो।

म्हैं बोल्यो, 'बो डांटतो रैवै। काम बोत करावै, इत्तो काम म्हारै कदैई करयोड़ो कोनी।'

मोहन म्हनैं पूछ्यो, 'तूं कहाँ से आया है ?'

म्हैं कैयो, 'बीकानेर सूं।'

बो भळै पूछ्यो, 'तेरे पिताजी क्या काम करते हैं ?'

'म्हारै बठै बीड़ी-सिगरेट री दुकान है।' म्हैं कैयो।

बो बोल्यो, 'इसका मतलब तू पैसे वालों का लड़का है। अच्छा अब रो मत, कल मैं गोपाल को समझा दूंगा। जा अब जाकर उस ठेले पर लेट जा।'

बीं गाडै पर अेक छोरो सूतो हो। म्हैं कैयो, 'इयै कनै म्हैं कोनी सोऊं।'

'अच्छा, जा दूसरे ठेले पर जाकर लेट जा।' कैय'र बो गयो परो।

म्हैं दूजै गाडै पर जाय'र सूयग्यो। मन में उथळ-पुथळ माचती रैयी। नींद कोनी आयी। आधी रात नैं बीं मोहन रै साथै अेक आदमी आयो। बो म्हारै गाडै कानी आवण लाग्यो। मोहन बीं नैं कैयो, 'यह लड़का पैसे वाला है, इधर नहीं।' जणै बो दूसरै गाडै माथै जिको छोरो सूतो हो बीं नैं उठाय'र लेयग्या। म्हैं जागतोड़ो सोच्यो, इयै छौरै साथै अै कांई न कांई खोटो काम करसी। म्हैं चुपचाप सूतो रैयो। झांझरकै उठियो। निमटण नैं जावतो हो जद म्हैं देख्यो बो छोरो बीं गाडै माथै बैठो रोवतो हो। बीं टैम बठै और कोई कोनी हो। म्हैं बीं छौरै कनै गयो। बीं रै माथै पर हाथ फेरतां पूछ्यो, 'कांई बात है, क्यूं रोवै ?' बो आपरै ढूंगा पर हाथ राख'र कैयो, 'मेरे यहाँ बहुत दर्द हो रहा है। इन्होने मेरे साथ....।'

म्हैं आ सुण'र चुपचाप निमटण नैं गयो परो। निमटतो-निमटतो सोच्यो, आज इयै रै साथै हुयो, काल म्हारै साथै ई होय सकै है। अै पैलां तो म्हारै कानी आया जणै बो मोहन कैय दियो कै ओ पईसां वाळो छोरो है। जणै म्हैं बचग्यो। इयै रो मतलब ओ है कै आपां पईसै

आळा बण्योड़ा रैवां तद ई बचाव होय सकै। इत्तै में म्हारी कमर रै झाड़ू री मारती अेक मेहतराणी कैयो, 'ए लौंडे, उठ भाग यहाँ से।' म्हैं उठ'र दौड़्यो। आगै जाय'र ढूंगा धोया। पाछो टूंटी पर आय हाथ-मुंडा धोया। पछै दिन चढ्यां बीं घड़ी आळी दुकान गयो। दुकान खुलगी ही। बो दुकान आळो फूस बुहारै हो। म्हैं बीं नैं कैयो, 'भाई साब, आ घड़ी बेचणी है।'

बो म्हारै कानी देख'र कैयो, 'घड़ी चोरी करके लाया है क्या?'

म्हैं कैयो, 'म्हारी आपरी है।'

बो कैयो, 'चल साले झूठ बोलता है। चोरी करके लाया है और ऊपर से झूठ बोलता है। भाग यहाँ से!'

म्हैं बठै सूं डर'र गोपाल री दुकान गयो। बो म्हनैं डांट'र कैयो, 'इतनी देर कैसे कर दी, कहाँ था तू?'

म्हैं कैयो, 'रस्तै मांय मोड़ो हुयग्यो।'

इत्तै में मोहन आयग्यो। आवतां ई कैयो, 'अरे गोपाल, इससे ज्यादा काम मत लेना। अपना ही बच्चा है।' इयां कैय'र बो गोपाल रै कान मांय कीं कैयो। बीं पछै गोपाल म्हारै सूं छोटा-मोटा काम करावण लागग्यो। रोटी खावण रा ई पईसा देवण लागग्यो। बीं दिन ई सिंझ्या म्हैं गोपाल रै अठै सूं म्हारै गाडै माथै गयो। बठै पैलां सूं ई मोहन बैठो हो। बीं रै साथै अेक दाड़ी आळो मुसळमान ई खड़ो हो। बो कनै खड़ो मुसळमान म्हनैं ललचायोड़ी फीटी आंख्यां सूं देखतो हो। जाणै बो म्हनैं ई अडीकतो हुवै। म्हैं जावतां ई कैयो, 'मोहन भाई राम-राम!'

मोहन पूछ्यो, 'आज गोपाल ने तुझसे ज्यादा काम तो नहीं करवाया?'

म्हैं हंस'र कैयो, 'नईं, आज तो बो म्हनैं रोटी रा पईसा भी दिया।'

मोहन म्हनैं पूछ्यो, 'अच्छा एक बात बता, अब तू यहीं रहना चाहता है या वापस बीकानेर जाना चाहता है?'

म्हैं सोच्यो, आज तो ओ दाड़ी आळो आदमी म्हारै साथै कीं न कीं करसी। ओ मोहन आपां नैं जकी बातां पूछै है आं रो उथळो बोत ई हुंसियारी सूं देवणो है।

मोहन फेरूं पूछ्यो, 'बता, अब तू क्या चाहता है? कम से कम मुझे तो बता दे।'

म्हैं सावचेत होय'र कैयो, 'म्हैं बीकानेर सूं आयो हूं। म्हारा माता-पिता बोत पईसां आळा है। पण बै म्हारै बडोड़ै भाई सूं प्रेम करै अर म्हनैं बात-बात माथै कूटै। इण वास्तै म्हैं भाग'र अठै आयो हूं। म्हनैं पैंटिंग रो थोड़ो-घणो काम आवै। जे पैंटिंग रो काम मिल जावै

ISSN : 2348-9251

अर साथै रैवण-खावण रो बंदोबस्त हुय जावै तो म्हैं बीकानेर तो कांई अठै सूं कठैई कोनी जाऊं।'

मोहन बोल्यो, 'तू तेरे मां-बाप से पैसे मंगवा ले। पैसे आने पर अच्छा इंतजाम करवा दूंगा। लेकिन तू पैसे भेजने के लिए लिखेगा और वे यहाँ आ गए तो ?'

जद म्हैं बीं नैं कैयो, 'बै तो म्हासूं गेल छुडावणो चावै।'

मोहन बोल्यो, 'मैं समझा नहीं।'

म्हैं बीं नै समझायो, 'बै रिपिया तो मनीओर्डर सूं भेज देसी पण बै म्हनैं लेवण नैं कोई सूरत में कोनी आवै अर ना ई म्हैं अठै सूं जावणी चाऊं। समझ्या! जे म्हारै रैवण अर खावण-पीवण रो चोखो बंदोबस्त हुय जावै तो।'

मोहन बीं दाड़ी आळै आदमी नै कैयो, 'तुम जाओ यहाँ से, अब तुम्हारे लिए यहाँ कुछ भी नहीं है।'

बो दाड़ी आळो मुसळमान गयो परो। मोहन म्हनैं कैयो, 'यहाँ ठेले पर आराम से सो जा, तेरे लिए कोई चादर भेजूं बिछाने के लिए ?'

म्हैं कैयो, 'नईं, म्हैं इयां ई सोय जासूं।'

मोहन गयो परो। म्हैं मन मांय सोच्यो कै आपां आपणी बात तो इण मोहनियै रै मगज मांय फिट बैठाय दीनी, पण अबै जे बीकानेर सूं आपां नै लेवण वास्तै कोई नीं आया अर पईसा भेज दिया तो आपणी अठै दुरदसा हुय जावैली। आपां नै तो रिपिया भेजण रो ई लिखणो पड़सी। म्हैं बीं गाडै माथै सूतो-सूतो सोच्यो, अगर आ घड़ी पांच रिपिया तांई बिक जावती तो म्हैं पाछो बीकानेर पूग जावतो। पछै म्हनैं नींद आयगी।

झांझरकै बीं मेहतराणी रै डर सूं नाळी में जल्दी निमट परो'र गाडै माथै आय'र बैठग्यो। इत्तै मांय मोहन आवतो दीस्यो। म्हैं सोच्यो, आज ओ इत्तो बेगो कियां आयग्यो। इत्तै में मोहन म्हारै कनै आय'र कैयो, 'यह ले चादर और यह ले साबुन। आज तू स्नान करले।'

म्हैं कैयो, 'पण न्हाऊं कठै ?'

बो कैयो, 'वह रहा नल, जहाँ तूं रोज हाथ-मुंह धोता है। यह चादर तो फुटपाथ पर हजामत करता है ना नन्दू भाई, उसको दे देना, वहीं पर नहाने के बाद साबुन रख देना। तेल और कंघा उसी से ले लेना। मैंने उसे कह दिया है। आज अच्छा बाबू बनकर दिल्ली में घूमना। गोपाल की दुकान अब नहीं जाना है। शाम को चार बजे मेरे से मिलने इस ठेले पर वापस आ जाना।'

म्हैं बीं नैं कैयो, 'दोफारां ओ ठेलो पाछो आ जासी कांई ?'

बो बोल्यो, 'ठेला आवे चाहे न आवे, तू यहीं पर मुझसे मिलने आ जाना।' इयां कैय'र मोहन तो गयो परो। म्हैं फेर सोच्यो, आज म्हनैं बाबू बणा'र कठैई कोई आदमी कनै तो कोनी भेजणो चावै है। फेर मन मांय विचार आयो कै अबै आपां नै डरणो बिल्कुल नीं है। अबै ऊंखळी मांय माथो ई देय दियो तो अबै घम्मीड़ां सूं क्यांरो डरणो!

म्हैं केई दिनां रो न्हायोड़ो हो। इयै वास्तै खूब बार-बार साबण लगा'र न्हायो। पैंट तो धोयी कोनी पण गिंजी धोय'र पैरी। नन्दू नाई रै अठै जाय'र माथै मांय सरसूं रो तेल लगाय'र भैया भई पट्टा बाया। बो चदरो अर साबण नन्दू नैं भोळाय'र बाबू जियां बण परो'र दिल्ली देखण नै निकळ्यो। जामा मस्जिद देखी, लाल किलो देख्यो। चावड़ी बजार देख्यो, चांदणी चौक मांय तीरथंभ देख्यो। विक्टोरिया री मूरती देखी। परांठा गळी मांय आठ आना मांय दो परांठा खाया। पछै टेसण सांमलै बाग में आय'र बैठग्यो। बठै म्हनैं बीकानेर री याद आई। म्हैं गोडां मांय माथो घाल'र बाग री दूब कानी देखतो सोचूं कै आपां रतन बिहारी बाग मांय बैठा हां। पाछो माथो ऊंचो करूं जणै बा सागी दिल्ली आळी टेसण दीसै। बैठो-बैठो घंटाघर कानी देख्यो, अरे साढी तीन बजगी। जणै म्हैं उठ'र जामा मस्जिद री सांमली गळी म्हारै ठिकाणै पूगग्यो। बठै ना तो बो गाडो हो अर ना ही बो मोहन आयो। म्हैं बठै पट्टी माथै बैठग्यो। थोड़ी देर बाद मोहन आवतो दीस्यो। बीं रै हाथ मांय अेक ठूंगो हो। बो म्हारै कनै आय'र म्हनैं कैयो, 'आ गए आप।'

म्हैं सोच्यो, आज ओ म्हनैं 'आप' कियां कैयो। जरूर आज कोई न कोई बात है। मोहन म्हनैं आपरै हाथ मांयलो ठूंगो देवतो कैयो, 'ले, यह दूध के पेड़े हैं, तेरे लिए लाया हूं।'

म्हैं ठूंगो लेय परो'र बीं मांय सूं दो पेड़ा खाया कै मोहन बोल्यो, 'वो तुम्हारे पिताजी रुपए तो भेज देंगे ना ?'

म्हैं कैयो, 'कठै भेजसी ?'

मोहन फेरूं कैयो, 'मेरा मतलब है कि बीकानेर से तुम्हारे पिताजी रुपए तो दिल्ली भेज देंगे ना! या तुम्हें लेने के लिए आएंगे ?'

म्हैं मन मांय सोच'र कैयो, 'म्हनैं लेवण वास्तै अबै कोई कोनी आवै। बै तो रिपिया भेज'र निरवाळा हुय जासी।'

मोहन बोल्यो, 'तुम्हारे कहने का मतलब है कि वे रुपए भेज देंगे, क्यों ?'

म्हैं कैयो, 'हां रिपिया तो बै मनीओर्डर सूं भेज देसी पण बां पईसां सूं म्हनैं पेंटिंग रो काम खोला'र देवणो पड़सी।'

ISSN : 2348-9251

मोहन कैयो, 'उसकी तू चिंता मत कर। यह ले पोस्टकार्ड, लिख!'

म्हैं पूछ्यो, 'कांई लिखूं?'

बो कैयो, 'एक सौ रुपए मंगाने के लिए तू तेरी भाषा में लिख।'

उण म्हनैं पेन पकड़ाय दियो। म्हैं बीं पोस्टकार्ड में लिख्यो, 'म्हारा जीसा-मां सा नै भोजू रा राम-राम! म्हैं दिल्ली में राजी-खुसी हूं। म्हैं अठै दिल्ली मांयनै पेंटिंग रो काम करणो चाऊं हूं। इयै वास्ते थे म्हनैं मनीओर्डर सूं सौ रिपिया भेज दो। काम जमियां पछै म्हैं बीकानेर आय'र थांनै ई दिल्ली लेय आसूं।' लिख'र मोहन नै म्हैं पूछ्यो, रिपिया पावण आळै में म्हारो नांव लिख दूं?'

बो बोल्यो, 'अरे बेटा, तू तो अभी तक छोटा है। तेरे को डाकिया पैसा नहीं देगा।'

म्हैं पूछ्यो, 'बै रिपिया भेजसी तो कीं रै नांव सूं भेजसी। पावण आळा रो नांव तो लिखणो ई पड़सी।'

मोहन थोड़ो सोच'र बोल्यो, 'तू मेरा नाम लिख दे।'

म्हैं कैयो, 'कांई लिखूं, पूरो पतो लिखणो पड़सी।'

मोहन बोल्यो, 'लिखो मनीओर्डर मिले- मोहनलाल गौड़, गोपाल साईकल वाली दूकान, जामा मस्जिद के सामने की गली, पानी के नल के पास, दिल्ली।'

म्हैं बो लिखायो जियां पूरो पतो लिख'र बो पोस्टकार्ड बीं नै झलाय दियो। बो पोस्टकार्ड लेय'र डब्बै में नाखण सारू रवानै हुयग्यो। म्हैं पेड़ा खावतो बीं नै देख रैयो हो। बो आगै जाय'र अेक मारवाड़ी री दुकान में गयो। थोड़ी देर मांय हंसतो दुकान सूं बारै निकळ'र गयो परो। इत्तै मांय थोड़ी-थोड़ी सिंझ्या पड़ण लागगी। बो गाडै आळो गाडो बठै ई खड़्यो कर परो'र गयो परो। म्हैं बीं गाडै माथै बैठो-बैठो सोच्यो, आपां लिख तो दियो है, अबै आपां तो खुद आपणा हाथ कटाय लिया है अबै आगै गणेस भगवान करसी जियां होसी। आ सोचतो-सोचतो गाडै माथै सूयग्यो। नींद आई कोनी। दिमाग मांय केई तरै री बातां री घाण-मथाण चालती रैयी। पछै मोड़ै जावतां नींद आयी। नींद मांय सपनो ई आयो कै म्हारा जीसा म्हनैं लेवण नै दिल्ली आयग्या पण मोहनियो अर चार-पांच जणा रळ'र म्हारै जीसा सागै मारपीट करी अर बां रा रिपिया खोस लिया। म्हैं भाग'र सिपाई नैं बुलावण नैं गयो। सिपाई नै घणो ई कैयो पण बो चाल्यो ई कोनी। म्हैं पाछो आवतो हो कै सांमी ई म्हनैं म्हारा जीसा मिलग्या। जीसा म्हारो हाथ झाल'र कैयो- चाल अठै सूं। म्हे चांदणी चौक री परांठा आळी गळी कनै आयग्या। जीसा म्हनैं कैयो- थारै कनै पईसा है कांई? म्हैं कैयो- पांच रिपिया है। जीसा कैयो- आपां कीं खायलां। म्हैं कैयो- आवो, अठै आठ आना मांय दो परांठा देवै। थे खायलो, म्हनैं तो भूख कोनी। जीसा अर म्हैं परांठा आळी दुकान मांय बैठा

अर दो परांठा लिया। जीसा कैयो- ले थोड़ो घणो तूं भी खायलै। कैवतां-कैवतां बांरी आंख्यां मांय सूं आंसू आयग्या। म्हैं कैयो- ओ मोहनियो अर ईं रा आदमी बदमास है। जीसा परांठो खावता कैयो- थारै साथै अै कोई खोटो काम तो कोनी कर्‌यो? म्हैं कैयो- इण मोहनियै नै रिपिया मंगावण रो लालच दिखाय उल्लू बणायां राख्यो। म्हैं पोस्टकार्ड लिख्यो जणै अंदाज लगायो बै रिपिया तो कोनी भेजै नीं, मालू काका म्हनैं लेवण नैं आसी अर म्हनैं इयै बदमासां सूं छुडा'र ले जासी। पण म्हनैं लेवण नै तो थे आयग्या। थांरा रिपिया ई खोस लिया कांई? जीसा कैयो- रिपियां री तो कोई बात कोनी, तूं म्हांनै मिलग्यो, इत्तो ई बोत है। पण तूं दिल्ली कियां आयग्यो? म्हैं कयो- म्हारी गैलाई रै कारण रेलगाडी में बैठग्यो अर अठै आयग्यो। जीसा कैयो- थारी आ गैलाई कित्ती परेसानी करदी। थारी मां रो-रो'र दुखी होयगी। इत्तै में बो परांठा आळो कैयो- परांठा खा लिया, अबै मेज खाली करो, उठो अठै सूं। म्हे दोनूं टेसण रै सांमलै बाग रै खुणै में जाय बैठा। जीसा कैयो, अबै बीकानेर बिना पईसा कियां जासां। धींरै-धींरै सिंझ्या पड़ण लागगी। म्हे दोनूं टेसण माथै गया। जीसा बैंच माथै बैठग्या अर म्हैं बैंच माथै थोड़ो आडो हुयग्यो। इत्तै नै सिपाई आय'र म्हारै डंडो अड़ा'र कैयो- ओ लौंडे, तू फिर आ गया यहाँ?

इत्तै में म्हारी आंख खुलगी। बो गाडै आळो कैवै हो, 'ए उठ यहाँ से, आठ बज रही है, मेरा ठेला खाली कर।'

म्हैं बीं नैं हाथ जोड़'र कैयो, 'जाऊं हूं लालाजी।'

साच्याणी आज तो तावड़ो चढग्यो हो। म्हैं टेसण जाय'र निमट'र टूंटी माथै हाथ-मुंडा धोया अर पाछो बठै आयो। आगै मोहन म्हनैं अडीकतो हो। म्हनैं देख'र कैयो, 'कहाँ गया था?'

म्हैं कैयो, 'टेसण जाय'र निमट'र आयो हूं।'

मोहन कैयो, 'आज भी तुझे गोपाल की दुकान नहीं जाना है। यह ले दो रुपए। खाना खा लेना, फिल्म देख लेना और घूम फिरकर शाम को यहीं आ जाना।'

इत्तै में बो दूसरो छोरो जको बीं दूसरै गाडै पर सोवतो हो अर जकै नैं रात रा उठा'र लेयग्या हा। दो सिपाइयां नै साथै लेय'र आयो अर मोहनियै कानी आंगळी कर कैयो, 'यह है साब!'

सिपाई मोहन नैं पूछ्यो, 'यह लौंडा क्या कह रहा है, तुमने....।' बिचाळै ई मोहन बोल्यो, 'साब, मैं इसको जानता ही नहीं हूं।' कैवतो थको बो सिपायां नैं दस-दस रा दो नोट झलाया। नोट खूंजै में घालतां बै बीं छोरै रै थप्पड़ मार'र कैयो, 'साले, झूठ बोलता है।' छोरो डर रै मार्‌यै रोवणखारो हुय'र बठै सूं भाजग्यो। सिपाई भी गया परा।

ISSN : 2348-9251

मोहन म्हारै कानी देख'र कैयो, 'तू जा बेटा, घूमघाम कर शाम को आ जाना। डरना मत, तेरे साथ कुछ नहीं होगा।' पण म्हनैं बीं छोरै री चिंता हुयी। म्हैं सोच्यो, इण बेचारै छोरै साथै कित्तो खोटो हुयो है।

म्हैं परांठा गळी मांय जाय'र पैली तो भरपेट जीम्यो, पछै 'अलाऊद्दीन जादुई चिराग' फिल्म देखी। लाल किलै कानी घूमण नैं गयो, पछै टेसण सांमलै बाग मांय आय'र बैठग्यो। बैठो-बैठो सोचण लाग्यो, जे बीकानेर सूं रिपिया आयग्या तो भोजू तनैं अै सुख सूं जीवण देवैला नईं। रिपिया ई खोस लेसी अर इण छोरै आळी गत थारी करैला। अर जे कोई लेवण नै आसी तो बीं सूं रिपिया खोस लेसी। क्यूंकै अठै तो सिपाई भी आं सूं मिल्योड़ा है। आ सोच'र उठियो अर बठै अेक छोटो-सो गणेसजी रो मिंदर हो। बीं मिंदर सांमी जाय'र गणेसजी नैं हाथ जोड़्या अर कैयो, 'हे गणेसजी, थे म्हनैं राजी-खुसी बीकानेर पूगाय दिया।'

सिंझ्या पड़ै ही। म्हैं बीं गाडै आळै ठिकाणै कानी रवाना हुयो। थोड़ीक ताळ में गाडो ई आयग्यो। बीं माथै चढ'र सूयग्यो- आ सोच'र कै अबै तो राम करसी जियां ई हुसी।

रात भर चिंता में नींद आई कोनी। मन मांय सोच्यो कै जे बीकानेर सूं सौ रिपिया आयग्या तो भोजू इण दिल्ली में थारी इसी दुरदसा हुसी कै थनै मरणो पड़सी। खैर, मोड़ै जावतां थोड़ी नींद आयी। रोजीना री तरै उठ्यो। निमट'र आयो अर हाथ-मुंडो धोयो। इत्तै में मोहन आयग्यो। आवतां ई बो म्हनैं कैयो, 'आज तू स्नान करले, तेरी गंजी धो ले, साबुन लाऊं क्या?'

म्हैं कैयो, 'म्हनैं गिंजी धोवणी आवै कोनी।'

बो कैयो, 'कोई बात नहीं, इस गंजी को समेट कर रख देना। मैं तेरे लिए नई गंजी ले आऊंगा। और उस नाई को मैंने बोल दिया है। वहाँ सर में तेल लगा लेना और बाल संवार लेना। और सुनो, आज गोपाल की दुकान पर ही बैठे रहना। किसी की साईकल या रिक्शे में हवा मत भरना। म्हैं भी थोड़ी देर में आता हूं। डाक करीब बारह बजे आती है। तब तक यहीं रहना। यह ले एक रुपया, जा अभी कुछ खा कर वापस गोपाल की दुकान आ जाना।'

म्हैं टूंटी नीचै मोहन रै दियोड़ै गमछै नैं लपेट'र न्हा लियो अर बा ई गिंजी पैर परो'र तेल लगा'र पट्टा बार फेनाफेन बण परो'र परांठा आळी गळी में गयो। अेक परांठो खावतो-खावतो सोच्यो, आज आखरी दिन है। या तो आर के पछै पार। परांठो खाय'र बीं गोपाळ आळी साईकलां आळी दुकान पर अेक लकड़ी री टेबल माथै बैठग्यो। थोड़ी देर में मोहन ई म्हारै कनै आय'र बैठग्यो। म्हनैं कैयो, 'वह डाकिया रुपए मुझे देवे तो तू डरना मत। हम

लोग तेरा पेंटिंग का काम दिल्ली में अच्छा जमा देंगे।' इयां कैय'र म्हारै माथै पर हाथ फेरण लागग्यो। साढी इग्यारै बज्यां डाकियो दुकान आगै कर जावतो मोहन नै दीस्यो। मोहन बीं नै पूछ्यो, 'अरे मेरे नाम से कोई डाक है क्या?' बो डाकियो साईकल माथै बैठ्यो ई नाड़ हिलावतो 'नहीं है' रो इसारो करतो आगै निकळग्यो।

मोहन म्हारै कानी देख'र बोल्यो, 'वो तुम्हारे घरवाले रुपए भेज तो देंगे ना?'

म्हैं कैयो, 'आज नईं तो काल, रिपिया तो पक्का आवणा है। रिपिया ई आसी, म्हनैं लेवण नै कोई कोनी आवै।'

मोहन कैयो, 'अच्छा ठीक है, तू यहाँ बैठ, यहाँ बैठने का मन न हो तो घूमकर शाम तक वापस ठेले पर ही आ जाना।' इयां कैय'र बो गयो परो।

म्हनैं कठै घूमणो हो! म्हैं बठै सूं उठ परो'र टेसण सांमलै बाग में जाय'र सूयग्यो। अबै दिन में ई सुपना आवणा सरू हुयग्या। सपनै में इयां लाग्यो कै म्हैं बीकानेर गयो परो। मां म्हनैं गळै लगा'र रोयी। इत्तै मांय जीसा अेक लकड़ी लेय'र आया अर म्हारो कान पकड़'र म्हनैं कैयो- बता तूं कठै गयो हो। म्हैं कैयो- म्हारी गैलाई रै कारण दिल्ली गयो परो। जीसा कैयो- थारी इण गैलाई रै कारण म्हांनै कित्ती परेसानी उठाणी पड़ी है नालायक कठैई रा! फेर कदैई जासी? इयां कैय'र बै म्हारै ऊपर लकड़ी ऊबाकी। म्हारी मां बिचाळै पड़ती कैयो, 'मती मारो इयै नै, अबै ओ म्हनैं छोड'र कठैई कोनी जावै। इयां कैय'र मां म्हारै माथै पर हाथ फेरण लीगी कै म्हारी आंख खुलगी।

म्हैं देख्यो- अेक बूढी लुगाई म्हारै माथै पर हाथ फेरै ही। म्हैं चमक'र उठियो। पंजाबण सीक बा लुगाई कोई गैली ही। म्हनैं कैवण लागी, 'तू मेरा पोता है, तू पाकिस्तान विच रैग्या सी, अज मैनू मिल गया, चल मेरे नाळ।' म्हैं उठ'र भाजण लाग्यो पण बा म्हारो हाथ काठो झाल लियो। म्हैं मठोठी लगाय'र हाथ छोडाय'र भाग्यो, बा म्हनैं हेलो पाड़ती कैवै ही, 'अे पुत, रुक जा, मेरे तौं चल्या नहीं जांदा, रुक जा, रुक जा!'

म्हैं तो भाज'र गोपाळ री दुकान में आय'र हांफतो-हांफतो स्टूल पर बैठग्यो। गोपाळ म्हनैं पूछ्यो, 'क्या हुआ?' म्हैं कैयो, 'कीं कोनी।'

रात नै रोजीना री तरै गाडै पर सूयग्या अर दिनूगै उठ'र निमट'र हाथ-मुंडो धोय'र गोपाळ री दुकान आय'र बैठग्यो। दिनूगै गोपाळ दुकान खोली। म्हैं झाड़ू लेय'र दुकान रै आगै झाड़ू काढण लागग्यो। दिनूगै साढी सात बज्यां रो टैम हो। म्हनैं फूस बुहारतै नैं अेक सिपाई रै साथै मालू काका दीस्या। म्हैं झाड़ू बगल में राख'र हेलो पाड़्यो, 'मालू काका!' अर झाड़ू फेंक'र मालू काका रै जाय'र चिपग्यो। मालू काका म्हनैं गळै लगाय'र माथै पर हाथ फेरता हा कै बै सिपाई पूछ्यो, 'यही लड़का है क्या?'

ISSN : 2348-9251

मालू काका कैयो, 'हां, यही है।'

गोपाळ डरतो-डरतो दुकान सूं बारै आयो तो सिपाई गोपाळ रा झींटा झाल'र कैयो, 'बच्चों को पकड़ कर इनसे दुकान का काम करवाता है मोहन के बच्चे!'

गोपाळ हाथ जोड़'र कैयो, 'मैं तो साईकल की दुकान वाला गोपाल हूं साहब, पूछलो इस छोटू से!'

मालू काका कैयो, 'अभी इससे फूस बुहारी करवा रहा था न?'

गोपाळ कैयो, 'यह अपने मन से झाड़ू निकाल रहा था मैंने नहीं कहा, पूछलो इससे।'

मालू काका कैयो, 'तो मोहनलाल गौड़ कहाँ है, जिसने अपने नाम से पैसे मंगवाए थे?'

गोपाल कैयो, 'साहब, वह तो अब आएगा। उससे मेरा कोई संबंध नहीं है। बस वह कुछ दिन पहले इस छोटू को मेरे पास लाया था। उसके बाद वह मेरी दुकान आता-जाता रहता है।'

मालू काका म्हनैं पूछ्यो, 'भोजू, साची बता, अै बदमास लोग थारै साथै कोई खोटो काम तो नीं कर्‌यो?'

म्हैं कैयो, 'आं री नियत तो म्हारै माथै खराब ई ही पण म्हैं रिपियां रो लोभ देयनै आं सूं बच्योड़ो रैयो। जे थे नीं आय'र रिपिया भेज देंवता तो अै म्हारी दुरगत करता।'

बो सिपाई स्टूल माथै बैठ परोर'र बोल्यो, 'उस मोहन के बच्चे का इंतजार करते हैं।'

इत्तै में मोहन दूर सूं आवतो म्हनैं दीस्यो। म्हैं मालू काका नै आंगळी सूं बतायो, 'बो रैयो मोहन।' पण मोहन म्हारै साथै सिपाई अर असैंधै आदमी नै देख'र भाग छूट्यो।

सिपाई बोल्यो, 'भागकर जाएगा कहाँ, छोडूंगा नहीं साले को।' पछै बो सिपाई म्हासूं पूछ्यो, 'तुम बताओ बेटे, यह मोहन रहता कहाँ है?'

म्हैं कैयो, 'इयै रो घर तो म्हैं ई कोनी जाणूं।'

सिपाई समझ्यो कोनी। जद मालू काका बीं नैं कैयो, 'यह कह रहा है कि उसका घर तो मैं नहीं जानता।'

जणै बो सिपाई गोपाळ नै बुलाय'र पूछ्यो, 'यह मोहन कहाँ रहता है?'

गोपाळ बोल्यो, 'इसका घर तो मैं क्या कोई नहीं जानता कि कहाँ है परंतु मेरी दुकान पर दिन में एक बार जरूर आता है।'

सिपाई बोल्यो, 'अच्छा मैं देख लूंगा इस मोहन के बच्चे को।' पछै मालू काका नै कैयो, 'तुम्हे तो तुम्हारा लौंडा मिल गया। ले जाइए इसको बीकानेर, परंतु पहले कोतवाली

जाकर दरोगाजी को बता देना कि यह लौंडा मिल गया है और वे जो लिखकर देवें वो बीकानेर के थाने में दे देना।'

मालू काका कैयो, 'ठीक है साहब।'

मालू काका म्हारो हाथ झाल'र चाल पड़्या। बां कनै अेक बींटो हो। म्हैं कैयो, 'ओ बींटो तो म्हनैं देय दो मालू काका।'

मालू काका बींटो हाथ में घाल्योड़ा म्हनैं पूछ्यो, 'अठै फतेहपुरी कठै है ?'

म्हैं कैयो, 'म्हैं जाणूं पण बठै कांई काम है ?'

बै कैयो, 'बठै गळी मांय अेक गुजराती धरमसाळा है। बीं धरमसाळा मांय जाय'र पैली निमटा-निमटी अर न्हावा-धोई करसूं। पछै आपां रोटी जीमसां।'

म्हैं कैयो, 'चालो, टेसण कनलै बाग कनै ई है।'

म्हैं मालू काका नै फतेहपुरी लेयग्यो। बठै अेक दुकान आळै नैं पूछ्यो। बो हाथ रै इसारै सूं बतायो, 'इस गली में ही है।'

गळी मांय सेठ चिमनलाल गुजराती धरमसाळा मांय बींटो राख'र मालू काका अर म्हैं सिनान-संपाड़ो कर्‌यो अर पछै धरमसाळा आळै बाबाजी नै मालू काका पूछ्यो, 'बीकानेर जाने वाली गाड़ी कब जाती है ?'

बाबोजी बोल्या, 'शाम को सात बजे।'

मालू काका आपरो बींटा इलमारी में राख'र बीं माथै आपरो गमछो सूकण वास्तै धर दियो। इलमारी रै ताळो लगा'र म्हनैं कैयो, 'चालो!'

म्हैं कैयो, 'सिध चालणो है ?'

मालू काका कैयो, 'रोटी जीमण नैं चालणो है, और कठै चालणो है।'

म्हैं कैयो, 'बो सिपाई कोतवाळी रो कैयो हो नीं।'

मालू काका कैयो, 'अरे हां, आ बात तो म्हैं भूल ई गयो।'

म्हे दोनूं सीधा कोतवाळी गया। दरोगाजी म्हां दोनूं नै देख'र मालू काका नैं पूछ्यो, 'मिल गया लौंडा ? यही है न! दूसरा तो नहीं उठा लाये ?' पछै म्हनैं हाथ सूं इसारो कर'र कैयो, 'इधर आ।'

म्हैं डरतो-डरतो बांरै कनै गयो। म्हारै कांधै पर हाथ राख'र मालू काका कानी आंगळी कर कैयो, 'इस आदमी को जानते हो ? डरो मत!'

म्हैं नस हिलाय'र हुंकारो भर्‌यो।

बै फेर पूछ्यो, 'इसका नाम क्या है ?'

ISSN : 2348-9251

म्हैं कैयो, 'मालू काका।'

'और तुम दोनों कहाँ रहते हो?'

म्हैं कैयो, 'जेळ रोड पर।'

मालू काका बिचाळै बोल्या, 'साहब, यह तो हमारा ठिकाना है।'

दरोगाजी बांनै टोक्या, 'तुम चुप रहो।' फेर म्हारै कानी देख'र कैयो, कौनसे शहर में रहते हो?'

म्हैं कैयो, 'बीकानेर में।'

बै मालू काका नैं कैयो, 'ठीक ले जाओ इस लौंडे को और यह कागज बीकानेर के कोतवाल को दे देना। जाओ, अच्छी तरह जाना।'

मालू काका हाथ जोड़'र कैयो, 'ठीक है साहब।'

कोतवाळी सूं निकळ्यां पछै म्हैं पूछ्यो, 'अबै कठै चालां मालू काका?'

मालू काका कैयो, 'बोत जोर री भूख लागी है, पैलां रोटी खावण नैं चालसां।'

म्हे परांठा गळी में गया। बठै अेक पगोथिया रै ऊपर लिख्योड़ो हो- मारवाड़ी ढाबा। मालू काका अर म्हे दोनूं ढाबै रा पगोथियां चढग्या। मारवाड़ी ढाबै मांय भरपेट दोनूं जणां चावळ-दाळ साथै रोटी खाई। मालू काका बीं ढाबै आळै नै दो रिपिया दिया। बो आठ आना पाछो देंवतो पूछ्यो, 'थे बीकानेर रा हो कांई?'

मालू काका कैयो, 'हां, आप कठै रा?'

ढाबै आळै बतायो, 'म्हे नापासर रा बिरामण हां। ओ म्हारो ई ढाबो है।'

मालू काका पूछ्यो, 'म्हे गांधीजी रा दरसण करणा चावां।'

बो बोल्यो, 'साढी दस बज्यां गांधीजी बिड़ला मिंदर मांय मिल सकै। अबार कित्ती बजी है।'

म्हैं म्हारी घड़ी देख'र बतायो, 'दस तो बजगी है।'

बो कैयो, 'साईकल रिक्सो लेय'र बेगा-सा बिड़ला मिंदर जावो परा।'

म्हे दोनूं नीचै उतर'र अेक रिक्सै आळै नैं कैयो, 'बिड़ला मिंदर जाणो है।'

बो बोल्यो, 'चवन्नी लगेगी।'

म्हे दोनूं रिक्सा माथै बैठग्या। बिड़ला मिंदर पूग्या। रिक्सै सूं उतरती बगत म्हैं घड़ी देखी। मालू काका बोल्या, 'आपां पांच मिंट पैली आयग्या हां।'

बिड़ला मिंदर में और ई घणा ई लोग बैठा हा। म्हे ई अेक दरी माथै बैठग्या। अडीकतै-अडीकतै पूणी इग्यारै बजगी। गांधीजी आया कोनी। अेक आदमी धोळी टोपी

लगायोड़ो आयो। सगळा जणा ऊभा हुयग्या। बीं नै पूछण लाग्या। जणै बो कैयो, 'आज गांधीजी की तबियत ठीक नहीं है, इसलिए वे यहाँ नहीं आएंगे।

म्हैं मालू काका नै कैयो, 'गांधीजी तो आवै कोनी, अबै आपां चालां।' म्हे दोनूं बिड़ला मिंदर रा दरसण कर परा'र बारै आयग्या। म्हैं पूछ्यो, 'अबै सिध चालणो है ?'

मालू काका कैयो, 'लाल किलो देखसां।'

म्हैं कैयो, 'चालो, म्हैं जाणूं हूं।'

दोनूं पाळा ई टुर पड़्या। लाल किलै रै सांमी पूग्यां पछै मालू काका लाल किलै नै देख'र आंख्यां मांय आंसू भर'र म्हनैं कैयो, 'देख भोजू, ओ जिको तिरंगो झण्डो इयै लाल किलै माथै लगावण वास्तै ई म्हे सगळा आपणै बीकानेर मांय अंग्रेज सरकार सूं लड़ता हा।'

म्हैं पूछ्यो, 'पण आपणै बीकानेर मांय तो राजाजी रो राज हो।'

मालू काका कैयो, 'आपणा राजाजी ई बां अंग्रेजां रै मातेत हा।'

म्हैं कैयो, 'थांरी आंख्यां मांय आंसू कियां आयग्या ?'

बै बोल्या, 'थनैं कांई बताऊं भोजू, आपां नै आजादी तो मिलगी पण देस रा टुकड़ा हुयग्या। इयै में हजारूं आदम्यां री ज्यान गयी। हजारूं लुगायां री इज्जत लूटीजी अर सैकड़ां टाबर अनाथ हुयग्या।'

म्हैं पूछ्यो, 'पाकिस्तान बण्यो बीं री बात करो हो कांई ?'

मालू काका कैयो, 'हां, बीं री ही बात करूं हूं।'

म्हैं कैयो, 'जणै ई आपणै बीकानेर में घणा ही सरणार्थी रोवता-बिलखता आपरै मां-बैनां नै गमाय'र आया।'

इसी बातां करता म्हे लाल किलै रै सांमणै बाग मांय बैठग्या। मालू काका कैयो, 'थारी चिंता मांय गाडी मांय नींद ई को आयी नीं। तूं बैठो है तो म्हैं थोड़ी देर आडो हुय जाऊं।'

म्हैं कैयो, 'हां-हां, थे आराम करलो, म्हैं बैठो हूं।'

मालू काका बाग मांय सूयग्या। म्हैं बां कनै बैठग्यो। थोड़ी देर मांय अेक कुत्ती पूंछ हिलावती म्हारै कनै आय'र बैठगी। म्हैं बीं रै माथै पर हाथ फेरण लागग्यो। इत्तै मांय दो कुकरिया आया। बां नैं देख'र म्हनैं म्हारी मां याद आयगी। म्हैं सोच्यो, म्हैं बीकानेर जावतां ई म्हारी मां रै खोळै मांय बड़ जासूं। फेर सोच्यो, अबार तो म्हारी मां म्हारै जीव नैं रोवती होसी। इत्तै मांय अेक कुत्तो भुसतो आयो अर बीं कुत्ती सूं लड़तो अेक कूकरियै नैं बाकै सूं उठाय'र फंफेड़ नांख्यो। म्हैं बीं रै भाटो मार्‌यो। बो चांय-चांय करतो भागग्यो पण बीं कूकरियै नै मारग्यो। बीं मर्‌योड़ै कूकरियै नै देख'र म्हनैं ई रोज आयग्यो। कुत्तै री चांय-चांय सूं मालू काका री नींद खुलगी। बै उठ'र बोल्या, 'कित्ती बजगी ?'

ISSN : 2348-9251

म्हैं कैयो, 'अेक बजण आळी है।'

बै बोल्या, 'सिंझ्या नैं सात बज्यां बीकानेर आळी गाडी जावै है।'

म्हैं कैयो, 'पण हाल तो घणो ई टैम पड़्यो है।'

मालू काका कैयो, 'लाल किलो मांयनै सूं देखां।'

लाल किलो देखती टैम बठै रो गाइड दीवाने खास बतावतो बोल्यो, 'अठै मुगल बादशाह औरंगजेब बैठतो हो।'

म्हैं कैयो, 'मालू काका, कांई ओ बो ई औरंगजेब हो जिको हिन्दुवां रो धरम बदळावतो अर कई हिन्दुवां नै मरवाया।'

मालू काका कैयो, 'हां, ओ बो ई हो।'

म्हैं कैयो, 'थे तो अंग्रेजां नैं भगावण री बात करता हा नी।'

मालू काका कैयो, 'मुगल सासकां नै अंग्रेजां भारत सूं भगाय दिया अर बै अंगरेज भारत पर राज करण लागग्या। आपां अंग्रेजां नैं भगाय'र भारत नै आजाद करायो।'

लाल किलो देख'र जद म्हैं बारणै निकळ्या तो चार बजगी ही। मालू काका कैयो, 'अबै जल्दी चालो, आपां नैं सात बज्यां आळी गाडी पकड़णी है।'

म्हैं कैयो, 'पण हाल तो चार बजी है!'

मालू काका कैयो, 'और भी तो काम करणा है।'

म्हैं पूछ्यो, 'अबै और कांई करणो है?'

मालू काका कैयो, 'तू देखतो जा।'

इयां बातां करता-करता म्हे गुजराती धरमसाळा आयग्या। हाथ-मुंडो धोयां पछै मालू काका कैयो, 'अबै भूख लागी है कांई?'

म्हैं कैयो, 'थोड़ी-थोड़ी लागी है।'

मालू काका कैयो, 'कोई बात कोनी, अबै आपां रेलवे टेसण चालां। बठै टिगट वास्तै लेण में लागणो पड़सी।'

म्हे दोनूं फुरती सूं टेसण पूग्या। म्हैं तो बींटै माथै गीलो गमछो ओढ'र बैठग्यो। मालू काका टिगट आळी बारी आगै लैण मांय खड़ा हुयग्या। इत्तै मांय अेक आदमी मालू काका रै लारै सूं कांधै पर हाथ राख'र कैयो, 'आ भाई मालचन्द।' पछै बै दोनूं लैण में लाग्योड़ा कांई बातां करी म्हनैं सुणीजी कोनी। मालू काका म्हारै कानी आंगळी कर'र बीं नै बतायो। बो म्हारै कानी देख्यो। म्हैं बीं नै हाथ जोड़्या। थोड़ी देर मांय टिगट आळी बारी खुलगी। लैण धीरै-धीरै सिरकण लागी। मालू काका रो नम्बर आयो। मालू काका टिगट लेय'र म्हारै कनै आया। कैयो, 'जल्दी चाल, रेलगाडी मांय जागा रोकणी है।'

गाडी सांमै ई खड़ी ही। मालू काका बींटो लेय'र भाग'र डब्बै मांय बड़ परा'र बारी मांय सूं म्हनै हेलो पाड़्यो, 'आ जा भोजू।' म्हैं डब्बै मांय बड़'र मालू काका कनै गयो परो अर बांरै कनै बैठग्यो। मालू काका गाडै आळै सूं साग-पूड़ी लिया। म्हे दोनूं मिल'र पूड़ी-साग खावण लागग्या। जीम्यां पछै मालू काका कैयो, 'तूं अठै बैठो रैयै, म्हैं पाणी पीय'र आऊं।' म्हैं कैयो, 'पण पाणी तो म्हनैं भी पीणो है।'

बै बोल्या, 'म्हैं पाणी पीय'र आय जासूं अर थारै वास्तै पाणी लेय आसूं।' इयां कैय'र बै प्लेटफारम आळी टूंटी मांय पाणी पीवण आळी लैण मांय लागग्या। बांरै हाथ मांय अेक सिकोरो हो। नम्बर आवतां ही पाणी पी'र सिकोरो भरै हा कै गाडी सीटी देय दी। म्हैं मालू काका नै हेलो पाड़्यो। मालू काका बो सिकोरो पाणी सूं भर परा'र गाडी कानी आया कै गाडी दूजी सीटी देय दी अर चाल पड़ी। मालू काका दौड़'र गाडी मांय चढग्या अर म्हनैं बो सिकोरो झिलाय दियो।

म्हैं पाणी पीयां पछै मालू काका नै पूछ्यो, 'काका, थे दौड़'र गाडी में चढग्या, जे नईं चढीजतो तो ?'

मालू काका कैयो, 'अगर इयां कोई लारै रैय जावै तो आ ऊपर लाग्योड़ी चेन खेंचणै सूं गाडी रुक जावै।'

म्हैं कैयो, 'जणै तो हरेक ई बिना मतलब ई चेन खेंच'र गाडी रोकाय लेवै ?'

मालू काका कैयो, 'इयां कोई गाडी रुकवावै, बीं नै जरीवानो भरणो पड़ै।'

म्हैं मालू काका नै पूछ्यो, 'थे टिगट लेवता जणै थांनै बो आदमी मिल्यो हो, बो कुण हो ?'

मालू काका कैयो, 'तूं जाणै कोनी, बो आपणै बीकानेर रो म्हारी आजादी री लड़ाई रो साथी हो। अठै नेहरूजी सूं मिलण नैं आयो हो।'

म्हैं कैयो, 'पण थे तो नेहरूजी सूं मिल्या ई कोनी।'

मालू काका कैयो, 'तूं पूछा-ताछा बोत करै है। देख अबै रात पड़गी। म्हारै गोडै माथै माथो धर'र चुपचाप सूयजा।'

म्हैं सूयग्यो। थोड़ी'क देर में नींद आयगी।

झांझरकै मालू काका म्हनैं चंचेड़'र उठायो, 'भोजू उठ जा, देख बीकानेर आवण आळो है, ओ देख सूड़सर आयग्यो है। थारै खातर बड़ा लाऊं हूं।'

म्हैं कैयो, 'गाडी में पाछा बेगा चढ्या।'

मालू काका फुरती सूं बड़ा लेय'र आयग्या। दोनूं गाडी मांय ई बैठ'र बड़ा खाया। म्हैं कैयो, 'पाणी पीवणो है।' मालू काका कनै बैठ्यै अेक जातरी सूं लोटो लेय'र फुरती सूं

ISSN : 2348-9251

उतर'र टूंटी माथै पैली खुद पाणी पीयो जित्तै गाडी सीटी देय दी। म्हैं चिंता करै हो इत्तै में मालू काका लोटो भर'र गाडी में चढग्या। म्हैं लोटै सूं थोड़ो'क पाणी पीयो। पछै मालू काका बो लोटो बीं जातरी नैं झलाय दियो।

रेलगाडी रै डब्बै मांय लोग-लुगायां आपस में बातां करता हा। म्हे गाडी री बारी मांय सूं सीन-सीनेरी देख रैयो हो। थोड़ी देर मांय नापासर आयग्यो। बठै कई जणा चढ्या अर कई उतर्‌या। डब्बै मांय भीड़ हुयगी। गाडी चाल पड़ी। म्हैं सोच्यो, अबै बीकानेर आसी। जीसा तो म्हनैं जरकायां बिना कोनी छोडै। बै कैसी- बदमास, क्यों बळ्यो दिल्ली, बठै कांई थारै बडेरां री हेमाणी बूरण नै गयो हो। फेर सोच्यो, बीकानेर तो आवणो ई है, हुसी जकी देखी जासी।

गाडी बारी मांय सूं घड़सीसर री छतरी दीसण लागी। मालू काका नैं म्हैं रोवणखारो हुय'र कैयो, 'अबै म्हनैं जीसा मारसी।'

मालू काका कैयो, 'तूं रो ना, म्हैं आसू भाईजी नैं समझाय देसूं। बै थनैं मारै कोनी।'

बीकानेर आयग्यो। गाडी रुकी। मालू काका बींटो बगल में लेय'र म्हारो हाथ झाल'र डब्बै सूं उतर्‌या अर टेसण सूं बारणै आया। सिव मिंदर रै सारकर रेल रै डब्बै रै पोर्च कनै पूग्या। बठै म्हारा जीसा अर कई जणा कोरा पान बेचता हा। मालू काका जीसा नै हेलो पाड़'र कैयो, 'आसू भाईजी, देखो थांरै भोजू नैं लेय आयो हूं।'

जीसा म्हारै कानी देख्यो। म्हैं डर परो'र मालू काका रै चिपग्यो। जीसा कैयो, 'मालू इयै नैं पैली घरै लेय जा, इयै री मां रो-रो'र म्हांनै परेसान कर राख्यो है।'

म्हे पैदल ई कोटगेट आया। म्हैं म्हारै नानोजी रै पगै लाग्यो। नानोजी कैयो, 'गैला कठैई रा, इयां कोई अेकलो दिल्ली जाया करै है कांई?' पछै म्हारै माथै पर हाथ फेरता मालू काका नैं कैयो, 'मालूजी, इयै नै ई रै घरै ले जावो। बा नूरी इयै रै वास्तै बोत रोवै। म्हारै नानाणै रै सामनै खंभै माथै 'बाबुल' फिल्म रो पोस्टर देख्यो (म्हनैं खेल-सिनेमा देखण रो बोत सौक हो)। कोटगेट रै मांयनै मालू काका री साईकलां री दुकान कनै म्हारा दादोजी री दुकान ही। म्हारा दादोजी म्हनैं देख'र कैयो, 'अरे मालू, इयै बेवकूफ नै लेय'र आयग्यो! अबै इयै नैं जल्दी सूं घरै लेय जा। इयै री मां रा रोवती रा काल ई दांतूड़ जुड़ग्या हा। साईकल ले जा। इयै माथै बैठा'र लेय जा। बींटो अेकर अठै ई राख दै।'

मालू काका साईकल रै आगै बैठा'र म्हनैं ले जावै हा। जेळ रोड आळै घर आगै साईकल रोकी। घर आगै म्हारा काका मांगी मदन पट्टी माथै बैठा हा। म्हनैं देखतां ई जोर सूं कैयो, 'अरे भोजू आयग्यो!' इत्तै मांय गोखै मांय खड़ा म्हारा भंवरा भाईजी कैयो, 'मां, देखो भोजू नै मालू काका लेय'र आयग्या। ओ देखो, भोजू आयग्यो।'

म्हारी मां गोखै में आई। म्हैं कैयो, 'मां, म्हैं ऊपर आऊं हूं।' कैय'र म्हैं झट घर मांयनै पगोथियां माथै चढतो हो जणै म्हारी बडी मां कैयो, 'धीरै-धीरै चढ, पड़ जावैलो।' लारै मालू काका आवता हा। ऊपर आवतां ई दादीजी मां नै कैयो, 'ले ओ थारो भोजू आयग्यो।'

म्हैं झट मां रै खोळै में बड़ग्यो। मां म्हारी कमर माथै हाथ फेरती कैयो, 'मालचन्दजी धन्यवाद है थांनै जिको थे म्हारै छोरै नै दिल्ली मांय सूं जोय लाया।' मां रोवती म्हनैं कैवै, 'बेटा, इयां बिना बतायां कियां गयो परो। म्हैं थनैं दुख देवती ही कांई ?'

म्हैं रोयां जावै हो। म्हासूं बोलीज्यो कोनी। मां फेर कैयो, 'तूं भोजू ई है नीं।'

मालू काका कैयो, 'भोजाईजी, ओ थांरो भोजू ई है।'

मां म्हारी आंख्यां रा आंसू पूछतां म्हनैं कैयो, 'बेटा, म्हां जाण्यो थनैं कोई पकड़'र लेयग्यो अर आगै ले जाय'र थनैं मार दियो। तूं क्यों म्हारै कनै सूं गयो, थारै कांई दुख हो ?'

म्हारा काकीजी बिचाळै ई बोल्या, 'बेटा, तूं क्यों गयो दिल्ली ? थारै जीसा सूं डरतो, तूं खेल देख'र आवतो जणै बै थनैं मारता जिकै सूं कांई ?'

मां कैयो, 'मालचन्दजी, ओ थांनै जठै मिल्यो बठै दोरो तो कोनी हो ?'

मालू काका कैयो, 'भोजाईजी, थांनै थांरो बेटो मिलग्यो, अबै रोवो क्यूं हो। इयै नैं न्हवावो-धुवावो अर लाड सूं जिमाओ।'

मां कैयो, 'मालचन्दजी, ओ बोलै क्यूं कोनी।'

मालू काका कैयो, 'बोलै कोनी भोजू !'

म्हैं कैयो, 'मां, अबै थनैं छोड'र कदैई कठैई कोनी जाऊंला।'

मां कैयो, 'इयै रै जीसा सूं इणनै मिलायो कै नईं ?'

मालू काका कैयो, 'इयै नै ईं रै जीसा, नानोजी, दादोजी सगळां सूं मिला'र लायो हूं। अबै म्हैं जाऊं। भोजाईजी अबै संभाळो थांरै बेटै नैं।' इयां कैय'र मालू काका आपरै घरै गया परा।

अबै म्हैं मां नै कैयो, 'जीसा आसी जणै म्हनैं मारसी।'

मां कैयो, 'तूं गयो परो हो नीं, जणै बै थारै वास्तै रात नैं रोवता कैवता, 'म्हारो छोरो कठै गयो ? कोतवाळी मांय मालचन्दजी साथै साथै जाय'र बठै कैय आया कै म्हारो छोरो भोजू गुमग्यो। पछै थारो पोस्टकार्ड आयो जद थनैं लेवण नै जावण लाग्या। म्हैं बांनै रोक'र कैयो, बठै रा बदमास छोरै नै बांध'र राख्यो हुसी। थां सूं पार पड़ैला कोनी। थे मालचन्दजी नैं भेजो। जणै मालचन्दजी नै कैयो। मालचन्दजी कोतवाळी सूं कागज लेय'र दिल्ली री गाडी चढ्या अर आज थनैं लेय'र आयग्या।'

ISSN : 2348-9251

थोड़ी'क ताळ में जीसा ई आयग्या। म्हारो लाड करियो। पछै म्हैं म्हारै भाईजी अर भायला-भापीलां साथै रोजीना री तरै रमण खेलण लागग्यो अर चौपड़ा कटलै मांय कॉटेज इंडस्ट्रीज में काम सीखण नै ई जावण लागग्यो।

❑❑

मालू काका रो जनम 17 जून 1925 नै पिताश्री रावतमलजी सोनी अर माता श्रीमती गंगादेवी रै घर लाडणूं मांय हुयो। चार बैनां बिचाळै अै अेक ई भाई हा। आं रो घर थाकल हो। आमदनी रो कोई साधन कोनी हो। च्यारूं बैनां नै परणायां पछै मालू काका रा मां-बाप सुरग सिधायग्या। बीं बेळा मालू काका 10 या 11 बरसां रा हा। आपरी जीविका चलावण वास्तै मालू काका छोटी उमर मांय ई बीकानेर आय'र आपरी बडी बैन अणची रै अठै आयग्या। मालू काका हिम्मत आळा अर भरपूर मैनती हा। बै साईकलां में हवा भर परा'र आपरो जीवण चलावण लागग्या। इयां करतां-करतां कोटगेट कनै म्हारै दादोजी री दुकान (पेमराज-खूमराज) कनै साईकल ठीक करण री दुकान खोलली। जद सूं म्हारै परिवार सूं बांरो सम्पर्क हुयो।

मालू काका भारत री आजादी वास्तै प्रजा परिषद् सूं जुड़ परा'र देस नै आजादी दिरावण वास्तै आपरो तन-मन लगाय दियो। आजादी मिलणै रै बाद 35 बरसां री उमर में सन् 1960 में बां रो भगोती देवी सूं ब्याव हुयो। सन् 1971 रै पछै कान्ता खतूरिया, गोविन्द नारायण वेद अर धूड़ाराम पारीक री नगर परिषद् रा लगोलग अध्यक्ष बण्या। आं तीनूं रै कार्यकाल में मालू काका बीकानेर रै सबसूं बडै वार्ड नं. 35 रा तीन बार पार्षद चुणीज्या अर पूरी ईमानदारी सूं जनसेवा रो काम करयो। बीं रै बाद तो नगर परिषद् रा चुणाव ई 1999 में हुया।

❑❑

मालू काका दो बार पार्षद चुणीज्यां पछै भी राणी बजार चौरायै माथै ऊन आळा जुगलकिसोरजी रै घर रै नीचै साईकलां री दुकान ई करता हा। लोग बां रै काम नैं देख'र इचरज करता। पछै केई बरसां तांई मालू काका रो पतो नीं लाग्यो। सन् 1999 री बात है जद म्हैं म्हारी मां, जीसा अर म्हारा छोरा-छोरी, पोता-पोती साथै कोटगेट आळी दुकान (भोज पेंटर) माथै रैवण लागग्या। म्हैं रोजीना दिनूगै साढी पाँच बज्यां पैदल राणी बजार आळै संघ कार्यालय (शकुंतला भवन) शाखा में जावतो। आवतां-जावतां कई दुकानां माथै 'जै सियाराम' कैवतो जावतो। राणी बजार रै चौरायै माथै दिनेसजी वत्स री डेयरी (दूध री

ISSN : 2348-9251

दूकान) ही। बां सूं जै सियाराम करतो जावतो। कदै-कदैई बां सूं अठीनली-बठीनली बातां करण वास्तै बां री दुकान रुक जावतो।

बां दिनां मांय भारत मांय उग्रवादियां अर घुसपेठियां रो बोत जोर हो। अेक दिन सनिवार नै संघ कार्यालय मांय विविध क्षेत्र री शाखा मांय हिजबुल मुजाहिदीन अर जेसी मोहम्मद माथै खूब चरचा हुयी। बै बातां म्हारै माथै मांय बैठगी। विकर (शाखा खत्म) हुयो। म्हैं घरै जावती टैम दिनेसजी री डेयरी कनै आयो जणै 'जै सियाराम' तो कैयीज्यो कोनी मुंडै सूं जोर सूं 'जेसी मोहम्मद' निकळग्यो। इत्तै में दिनेसजी री दुकान मांय सूं आवाज आई, 'कुण है रे ?'

म्हैं दुकान कानी देख्यो तो देखतो रैयग्यो। बै मालू काका हा। म्हैं सीधो दुकान में गयो अर मालू काका नै देख'र हरखीजग्यो। म्हैं कैयो, 'मालू काका, कित्ता बरसां सूं मिल्या हो, आजकल कठै रैवो, कांई करो हो ?' म्हैं कई बातां अेक साथै ई पूछी।

मालू काका कैयो, 'अरे भोजू, थारै माथै पर तो धोळा आयग्या। म्हारा आसू भाईजी अर भोजाईजी तो ठीक है नीं ?'

दिनेसजी कैयो, 'मालजी, पेंटर साब नै जाणो हो कांई ?'

मालू काका म्हारै माथै पर हाथ फेरतां कैयो, 'ओ भाजू तो म्हारै हाथां मांय छोटै सूं बडो हुयो है।'

म्हैं कैयो, 'म्हैं तो म्हारी दुकान माथै जीसा-मां सा रै साथै रैऊं पण थे कठै रैवो हो। बोत बरसां सूं थांनै देख्या है।'

दिनेसजी बतायो, 'अै अबै अहमदाबाद रैवै है।'

म्हैं कैयो, 'क्यूं, अठै बीकानेर में क्यूं नीं रैवो।'

मालू काका कैयो, 'अठै राणी बजार मांय बाबा रामदेव टेण्ट हाऊस रै सांमी म्हारो अेक छोरो रैवै है। अबार म्हैं अर बा दोनूं अठै आयोड़ा हां।'

म्हैं पूछ्यो, 'बा कुण, भगवतीजी कांई ?'

बै कैयो, 'हां।'

म्हैं कैयो, 'म्हारा मां सा थांनै बोत याद करै है।'

बै कैयो, 'आज पांच बज्यां म्हैं बां सूं मिलण नैं आऊंला। कोटगेट आळी दुकान रै ऊपर ई रैवै है नीं!'

दिनेसजी कैयो, 'पेंटर साब भाजपा मांय खूब छायोड़ा है।'

मालू काका कैयो, 'भोजू भाजपा मांय है, कदैई कांग्रेस में कोनी आयो कांई ?'

ISSN : 2348-9251

म्हैं कैयो, 'कांग्रेस मांय थे हो नीं।' पछै म्हैं कैयो, 'आज सिंझ्या घरै मिलण सारू जरूर आया, म्हारा मां सा थांनै अडीकैला।'

बां कैयो, 'म्हैं जरूर आऊंला।'

म्हैं घरै पूगतां ई मां नैं कैयो, 'मां'सा, आज मालू काका मिल्या।'

मां कैयो, 'मालचन्द जी री बात करै है कांई ?'

म्हैं कैयो, 'हां, आज पांच-साढी पांच बज्यां बै थां सूं अर जीसा सूं मिलण नैं आवैला।'

मां सा राजी होवतां कैयो, 'आ तो चोखी बात है, घणा बरसां सूं बां सूं मिलांला।'

सिंझ्या नै पांच बज्यां मालू काका दुकान आयग्या। म्हैं मां सा, जीसा कनै ई बैठोड़ो हो। म्हारो बडोड़ो लड़को पप्पू (पृथ्वीराज) ऊपर आय'र कैयो, 'कोई मालचन्दजी सोनी थां सूं मिलण नै आया है।'

म्हैं मां सा नै कैयो, 'मालू काका आयग्या है।' इयां कैय'र म्हैं नीचै दुकान में आयो। मालू काका ऊभा हा। म्हैं बांनै देख'र कैयो, 'अरे, अठै कांई रुकग्या, ऊपर थांनै मां सा अर जीसा अडीकै है।' पछै पप्पू नैं म्हैं कैयो, 'अै मालू काका है, पगै लाग।' म्हे दोनूं मालू काका रै पगै लाग्या। म्हैं म्हारै दूसरै लड़कै जितेन्द्र कानी आंगळी कर'र कैयो, 'ओ अठै रो पार्षद हो।' मालू काका बीं रा मगर थाप'र कैयो, 'साबास बेटा।'

म्हैं कैयो, 'इयै सूं छोटोड़ो जयपुर मांय पढै है। थे ऊपर चालो।'

ऊपर पूग्या तो मां सा कैयो, 'अरे मालचन्दजी, कांई म्हांनै अेकदम ई भूलग्या। कठै रैवण लागग्या आजकल ? मिलण रा ई सांसा पड़ग्या।'

जीसा कैयो, 'मालू, तूं तो अेकदम परायो जिसो हुयग्यो।'

मालू काका दोनूं रै पगां लाग'र आंख्यां मांय आंसू भर बोल्या, 'कांई करूं भाईजी, छोरा बठै अहमदाबाद में काम कर लियो। अबै म्हे ई बठै रैवण लागग्या।'

मां सा कैयो, 'म्हारी बा भगोती देराणी, बीं नै लाया कोनी।'

म्हैं कैयो, 'अै सगळा अहमदाबाद रैवण लागग्या, अबार दोनूं धणी-लुगाई अठै राणी बजार में रैवै है।'

जीसा कैयो, 'वा भई मालू, थारी तबीयत तो ठीक है।'

मालू काका बोल्या, 'अवस्था री बात है, बाकी थांनै देखणै सूं म्हैं अेकदम ठीक हूं।'

मां सा म्हनैं कैयो, 'भोजू आंनै जीमा!' पछै आपरी बीनणी नैं कैयो, 'रोटी बणावो बेटा।'

मालू काका कैयो, 'नईं भोजाईजी, जीमूं तो कोनी, चाय बणवावो, चाय पी लेसूं।'

मां सा म्हनैं कैयो, 'भोजू, आं रै वास्तै नास्तो ला अर बीनणी नैं चाय बणावण रो कैयदै।'

चाय-नास्तो कर्‌यां पछै आधेक घंटै सूं म्हे नीचै आया। मालू काका म्हनैं कैयो, 'भोजू म्हैं अबै जाऊं हूं। तूं काल शाखा सूं पाछो आवै जणै दिनेसजी री दुकान सूं म्हारै साथै म्हारै घरै चाल्यै। म्हैं म्हारै परिवार सूं थनै मिलासूं।'

म्हैं बां रै फेरूं पगै लाग्यो तो बै म्हारै माथै पर हाथ फेर'र आपरै घर कानी टुरग्या।

❑❑

दूजै दिन दिनूगै म्हैं म्हारी स्कूटी लेय'र शाखा गयो क्यूंकै शाखा सूं आवती बगत म्हनैं मालू काका रै घरै जावणो हो। अदीतवार हो। शाखा मांय सूं आवती वेळा दिनेसजी री दुकान मांय म्हनैं मालू काका मिलग्या अर म्हारी स्कूटी लारै बैठग्या। म्हे दोनूं मालू काका रै घरां पूग्या। घर मांय बांरी धरमपत्नी भगोती सूं मिल्यो। मालू काका म्हनैं बतायो कै म्हारै तीन लड़का है। इत्तै में दो जणा आया। मालू काका कैयो, 'ओ म्हारो बडोड़ो लड़को है भोजू' अर पछै बीं नैं कैयो, 'ओ भोजू है।'

इत्तै में मालू काका रो दूजोड़ो छोरो ई आयग्यो। बो बोल्यो, 'म्हैं आंनै जाणूं हूं। अै तो पेंटर भोज है।' मालू काका कैयो, 'तो देखो कांई हो, ओ थांरो बडो भाई है, पगै लागो।' दोनूं जणा म्हारै पगां लाग्या।

म्हैं मालू काका नैं कैयो, 'काका, थे म्हारै समेत थांरा तीन लड़का बताया कांई ?'

बै बोल्या, 'अरे नईं रे भोजू, बो म्हारो अेक लड़को तो अहमदाबाद में ई है। सगळा अठै आयां कियां पार पड़ै। बो लारै काम संभाळ राख्यो है।'

मालू काका म्हनैं चाय-नास्तै रा बोत नौरा काढ्या पण म्हैं कैयो, 'पाणी पी लेसूं। म्हैं दैनिक क्रिया सूं निवृत्त हुयां बिना कीं नीं लेऊं।' काकाजी मांय सूं पाणी लेय आया।

थोड़ी ताळ पछै मालू काका मांय सूं अेक नौ-रत्न री बींटी लेय'र आया अर कैयो, 'भोजू, आ बींटी पैरलै, आ बींटी थनैं फळापैला।'

म्हैं पूछ्यो, 'आ कित्ता रिपियां री है।'

मालू काका कैयो, 'तनैं रिपिया-पईसां सूं कांई करणो, तूं तो आ पैरलै।'

म्हैं कैयो, 'आ तो कीमती है। बिना रिपिया दियां तो म्हैं पैरूं कोनी।'

मालू काका डांटता कैयो, 'चुपचाप आंगळी अठीनै कर।' बै म्हारी आंगळी आगै कर'र मत्तैई बींटी पैराय दी।

ISSN : 2348-9251

म्हैं बां सूं इजाजत लेय'र बठै सूं रवानै हुयो। बै कैयो, 'भोजू, अबार कई दिन म्हैं अठै ई हूं। तूं म्हासूं मिलतो रैयै।'

म्हैं घरां जाय'र म्हारी मां नै कैयो, 'देखो मां सा, मालू काका म्हनैं नौ-रत्न री बींटी दी है।' मां सा म्हारी आंगळी में पैरयोड़ी बींटी देखी। पछै जीसा बोल्या, 'देखो तो भंवर री मां, बींटी तो चांदी में बण्योड़ी कीमती है।'

मां कैयो, 'भोजू, पईसा दियां बिना लियै ना, पईसा दियां ई थनैं आ फळापसी।'

म्हैं पूछ्यो, 'बांनै कित्ता पईसा देऊं।'

मां कैयो, 'कम सूं कम पांच सौ रिपिया तो देवणा ई है।'

जीसा कैयो, 'पईसा नईं लेवै तो बींटी पाछी देय दियै।'

दूजै दिन शाखा मांय जावती बगत म्हैं देख्यो, दुकान में दिनेसजी अेकला ई हा। म्हैं बांनै पांच सौ रिपिया रो नोट देय'र कैयो, 'अै रिपिया मालू काका नैं देय दिया।'

दिनेसजी कैयो, 'शाखा सूं आवती बगत थे ई थांरै हाथ सूं देय दिया।'

म्हैं कैयो, 'अै रिपिया तो अबार थे राखो। म्हैं आवती टैम बां सूं मिल लेसूं।'

पाछो आवती टैम दिनेसजी री दुकान रुक्यो। मालू काका आगै ई बैठ्या हा। बै बोल्या, 'दिनेसजी, ओ भोजू अै पांच सौ रिपिया कांयरा दिया है, म्हैं तो आ बींटी इयै नैं म्हारी तरफ सूं दी है।'

म्हैं कैयो, 'मां सा भेज्या है, अै तो थांनै राखणा ई पड़सी।'

दिनेसजी बिचाळै ई बोल्या, 'मालजी, रिपिया राखलो, नींतर अै थांनै बींटी पाछी देवैला। बींटी राखैला कोनी। बींटी अै राख लेसी अर रिपिया थे राखलो।'

मालू काका कैयो, 'भोजू, आ बात तो ठीक कोनी।'

म्हैं कैयो, 'मालू काका, मन मान जाय तो सब ठीक है। थे अै रिपिया राखलो।'

दिनेसजी बो पांच सौ रो नोट बांनै देय दियो।

म्हैं कैयो, 'अबै म्हैं जाऊं।' इयां कैय'र घरै आयग्यो।

अबै रोजीना आवतो-जावतो दिनेसजी री दुकान माथै मालू काका सूं मिलतो। कई दिनां बाद बै पाछा अहमदाबाद गया परा।

❑❑

म्हारा जीसा सन् 2001 मांय अर म्हारा मां सा 2002 मांय म्हांनै छोड'र सुरग सिधायग्या। शाखा तो म्हैं नितनेम सूं जावतो ई हो अर दिनेसजी सूं मिलणो ई हुवतो हो। मालू काका रा समाचार दिनेसजी देय देवता।

15 जून, 2004 नै म्हैं अर म्हारी जोड़ायत ऋषिकेश गया। बठै अेक महीनो अर 12 दिन रैय'र पाछा बीकानेर आयग्या। दूजै दिन रोजीनै री तरै म्हैं हाफपैंट कमीज पैर'र दिनूगै शाखा में गयो। रस्तै मांय दिनेसजी री दुकान कानी देख्यो। बै बीं टैम आया कोनी हा। म्हैं शाखा सूं बावड़ती बगत बांरी दुकान पर रुक्यो। दिनेसजी बोल्या, 'अबकाळै तो कई दिनां सूं आया हो।'

म्हैं कैयो, 'ऋषिकेश गयो परो हो। बठै खूब गंगा-स्नान करया अर स्वामी रामसुखदासजी रा प्रवचन सुण्या। डेढ महीनै सूं काल ई आयो हूं। अबै आपरा हाल-चाल सुणावो, म्हारा मालू काका रा समाचार बताओ।'

मालू काका रो नांव सुणतां ई दिनेसजी री आंख्यां में आंसू आयग्या। बां सूं बोलीज्यो कोनी। बां ऊपर कानी आंगळी कर'र मालू काका री फोटू माळा पैरयोड़ी दिखाई। म्हैं फोटू देख'र कैयो, 'हें, कांई म्हारा मालू काका गुजरग्या!' दिनेसजी नस हिलाय'र कैयो- हां। म्हैं रोवणखारो हुयग्यो। दिनेसजी म्हारै कांधै पर हाथ धरता बोल्या, 'इयै संसार में आवै जकै नैं जावणो ई पड़ै। अै मालजी आपरो खेल आपांनै देखा'र गया परा।'

म्हैं पूछ्यो, 'इयां अचाणचक कांई हुयो, आ कद री बात है?'

बै बतायो, '29 जून 2004 नैं बै गुजरग्या। बांरै घर सूं समाचार आयां पछै आ फोटू म्हैं अठै लगायी है।'

म्हैं कैयो, 'दिनेसजी, देखो मालू काका कित्ता गजब रा आदमी हा। आजादी री लड़ाई मांय बै आपरो पूरो जीवण खपाय दियो अर आ बात देखो कै बै अधखड़ उमर मांय करयो। बांनै तो खाली आजादी री धुन सवार ही।'

दिनेसजी कैयो, 'अेक बात बताऊं थांनै बांरी। जद मालजी पार्षद हा तो ई म्हारी दुकान सांमी साईकलां रा पिंचर काढता हा। अेक दिन बडा अधिकारी बीं वार्ड रो मुआयनो करण नै मालजी री दुकान आया। वार्ड रै बारै में पूछताछ करयां पछै बै मालजी सूं कैयो- मालचन्दजी, आप बीकानेर के सबसे बड़े वार्ड के मालिक हैं, कोई जमीन कब्जे में की या नहीं? मालचन्दजी कीं कैवता बीं सूं पैला बडा अधिकारी फेरूं बोल पड़्या- नहीं की है तो अब करलो, म्हैं उसके नियमन कागजात बनवा दूंगा। तद मालजी कैयो- जनता री जमीन है। म्हैं कब्जो कर'र कांई करसूं? म्हैं कांई जमीन नैं साथै ले जासूं। आ जमीन अठै ई पड़ी रैय जासी। मालजी री बात सुण'र साब बां रा मगर थपथपावतां कैयो- वाह भई मालचन्द। तुम भी बड़े गजब के आदमी हो।'

म्हैं दिनेसजी नै कैयो, 'दिनेसजी, मालू काका कान्ताजी खथूरिया रा खास आदमी हा।'

ISSN : 2348-9251

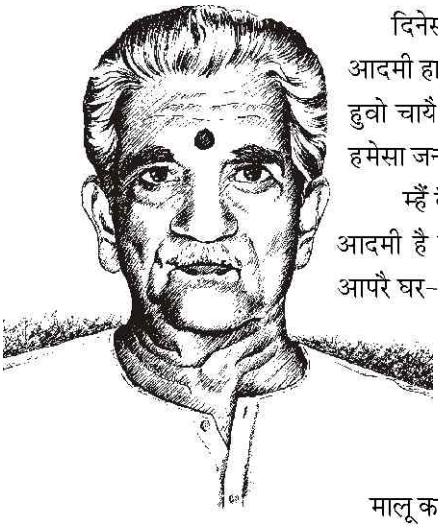

दिनेसजी कैयो, 'बै तो अपणै आप में ई खास आदमी हा। कान्ताजी कांई, चायै गोविन्द नारायणजी हुवो चायै रावतमलजी, बै कोई नैं कोनी धारता। बै हमेसा जनता रै हित री बात करता।'

म्हैं कैयो, 'दिनेसजी, दुनिया में इसा गिणती रा आदमी है जका सदा दूसरां री भलाई बाबत सोचै। आपरै घर-परिवार खातर कीं नीं सोचै। खैर, अबै म्हैं चालूं दिनेसजी, आज तो थे बोत दुखद समाचार सुणायो।' कैय'र म्हैं रवानै हुयग्यो।

म्हारै मुंडै सूं निकळ्यो, 'वाह भई वाह मालू काका! वाह!'

❑❑

मालू काका रै बडोड़ै छोरै शिवकुमार मुजब 15 नवम्बर, 2011 नैं राजस्थान सरकार री अनुशंसा पर भारत सरकार बांनै तत्कालीन प्रजा परिषद् सूं भारत री आजादी रै वास्तै सक्रियता सूं योगदान देवण अर आजादी रै आंदोलण मांय भाग लेवण वास्तै मरणोपरान्त स्वतंत्रता सेनानी घोसित करया अर मालू काका री धरमपत्नी भगोती देवी नैं स्वतंत्रता सेनानी सम्मान रै सागै पेंसन भी चालू करी। बीकानेर नगर निगम मालचन्द सोनी रै नांव सूं अेक सड़क रै नामकरण रो प्रस्ताव राख्यो है, जको विचाराधीन है।

कला-कुंज, माली मोहल्ला, नत्थूसर बास, बीकानेर 334004
मो. 9413769800

ISSN : 2348–9251

आलेख

डॉ. जगदीश गिरी

मैगी विवाद रै मिस अेक जरूरी कविता माथै चर्चा

आं दिनां दुनिया री अेक नामी-गिरामी कंपनी 'नेस्ले' आपरै लोकप्रिय प्रोडक्ट 'मैगी नूडल्स' पर विवाद नैं लेय'र घणी बदनामी झेल रैयी है। मैगी रै सैंपल सूं पतो चाल्यो कै इणरै मांय सीसै अर मानो सोडियम ग्लूटामेट (MSG) जिस्या खतरनाक रसायन तय सीमा सूं ज्यादा होवणै सूं आपणी सेहत सारू ठीक कोनी। आं रसायनां री घणी मात्रा सूं कई लाइलाज रोग हुय सकै। इण खुलासै सूं सावचेत हुय'र भारतीय खाद्य संरक्षा एवं मानक प्राधिकरण (FSSAI) पूरै देस में मैगी नूडल्स माथै बैन लगाय दियो।

विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) री अेक रिपोर्ट रै मुजब 23 फीसदी भारतीय लोगां रै खून मांय सीसै री मात्रा तय सीमा सूं ज्यादा पाई गई है। अेक और नामी-गिरामी कंपनी 'हिन्दुस्तान यूनिलीवर' घोषणा करी है कै वा FSSAI री बिना अनुमति रै जिकी चाइनीज 'नूडल्स' भारतीय बाजार में बेच रैयी ही, अब कोनी बेचै।

थोड़ै ईज दिनां पैली हंगामो हुयो कै पेप्सी-कोका कोला जैड़ा 'कोल्ड ड्रिंक्स' मांय 'पेस्टीसाइड' री मात्रा खतरनाक लेवल सूं ऊपर पाई गई है। इण रोळै-रप्पै रो असर कितोक हुवै आ ठाह कोनी पण 'ठंडा मतलब कोकाकोला', 'ये प्यास बड़ी' और 'बस दो मिनट में' जेड़ा स्लोगन आपणी रगां मांय समा चुक्या है, इणमें कोई दो राय कोनी हो सकै।

मैगी विवाद सूं अेक रोचक प्रसंग ओ भी जुड़्यो है कै जिका बॉलीवुड रा फिल्मी-स्टार इण रो प्रचार करै हा उण पर ई मुकदमो करायो गयो है, क्यूंकै उणां रै कैवणै सूं ईज स्यात आपां इण बाजारू चीजां नैं खावण सारू त्यार हुवां। पण सांची बात तो आ है कै आपां री तरयां अै सितारा ई तो कंपनियां रै जाळ मांय फंसेड़ा है। वां नैं ई तो इण बाजार मांय खुद नैं टिकावण सारू धन चाइजै। ओ धन जठै सूं ई मिलै वां नैं गुरेज कींकर हुवै। असल मांय ओ खेल मोटो है। बाजारू ताकतां आपणी मनगत माथै कब्जो करै। सोवणा-सोवणा चितराम

ISSN : 2348-9251

दिखावै, आपणी कमजोरी नैं ढूंढ'र उण माथै हाथ रखै। कोई न मानै तो उणनैं हीणो साबित करै। बाकी कुण कोनी जाणै कै 'मैगी नूडल्स' नांव सूं जकी चीज आपां बाजार सूं मूंघै भावां सूं खरीद रैया हां वै सेइयां आपणै घरां मांय कितरी पीढियां सूं बणती आ रैयी है। अब तो सेई काढण री मसीनां (घोड़ी) आयगी। पैलां तो घड़ै माथै तेल लगा-लगाय दादी-नानी सेई बंट लेवती। जितरी जरूरत होवती, उतरी ही बणावता अर हाथोहाथ काम में लेय लेवता। तो पुराणो 'आटो' बाजार सूं लावण री कांई जरूरत ?

पण आ बात कैवणियैं नैं आज री नवी पीढी 'आउटडेटेड' घोषित करतां बार ई नीं लगावै। कैरी री छाछ, पुदीनै री ठंडाई, जीरो-छाछ रो नांव लेवतां ई 'टेलीविजन' अर 'इंटरनेट' री औलादां नाक बिचकावणो सरू करदयै। सिगरेट, जर्दा, गुटखां माथै बड़ी-बड़ी चेतावण्यां रो असर ई इण पीढी माथै नहीं हुवै, तो जरूर आपां नैं सावचेत हुवण री दरकार है।

भारत री युवा आबादी बड़ी-बड़ी कंपनियां रै निसानै पर है। वै भारत नैं बाजार बणा'र अठै खुली चरणी चावै। इण सारू वै आपणी हर चीज नैं हीण साबित करै। मॉडर्न होवण रा गुर बतावै। उणां नैं आपरी खराब हुयोड़ी चीज भी मूंघा भावां बेचणी है तो गोडै पर सूं फाट्योड़ी पेंट अर कारी लगायोड़ा कुड़तियां नैं फेसन बणाय देवै। वै देखै कै गांव रा लोग सरस्यूं रो तेल लगावै अर बाजारू तेल नीं बपरावै तो इस्तिहार चलावै कै ओ चिप-चिप वाळो तेल छोड'र म्हारी कंपनी रो तेल बपराओ। जद लोग सरस्यूं रो तेल लगाणो छोडदयै तो वो ही तेल फेर लगाणै रो विज्ञापन करै। च्यार गुणा मूंघा मोल माथै।

आं कंपनियां रो कोई धर्म का नैतिकता नीं है। म्हनैं चेतै आवै क्रिकेट खिलाड़ी युवराज सिंह अेक कैप्सूल बणावण वाळी कंपनी रो प्रचार करतो, इण ठरकै सूं कै मेरी तागत अर फुर्ती रो राज ओ कैप्सूल ई है। पण जद युवराज सिंह रै कैंसर हुयग्यो अर उणनैं टीम सूं बारै कर दियो तो वा ई कंपनी युवराज री जिग्यां सलमान खान नैं आपरो एंबेसडर बणाय लियो। जदकै कैंसर सूं लड़'र जीवण रो हौसलो दिखावण वाळो युवराज अेक 'आदर्श' स्थापित करै, पण बाजार इत्तो निर्मम है कै वो इल्जाम नीं लेवणो चावै। कोई आ ना सोच लेवै कै युवराज रै कैंसर उण कंपनी रा कैप्सूल खावणै सूं तो नीं हुयग्यो। इण सारू वै युवराज सूं पिंड छुड़ाय लियो।

बाजार री आ ईज रीत है कै वो किणी रो सगो नीं है। इणरी जकड़बंदी सूं निकळणो सोखो कोनी। वो आपरो जाळ इण भांत पसारै कै सिकार नैं बेरो ई नीं पड़ै कै वो सिकार होय चुक्यो है। भारत जेड़ै पारंपरिक देस मांय वो आपरी जड़ां जमावण सारू पैलो हमलो पारंपरिक संस्कारां माथै करै। वो अहसास करावै कै आपणी जीवण-पद्धति निहायत

ISSN : 2348-9251

घटिया है। इण तरीकै सूं आपां जीवण रो पूरो मजो नीं लेय रैया हां। वो 'सोनै रो हिरण' बण'र आपां नैं रिझावै। फेर वो किल्लोळ करतो-करतो कूड़ी जरूरतां पैदा करै। वो बतावै कै आपां नैं कियां खावणो चाइजै, कियां पीवणो चाइजै, कियां कपड़ा पैरणा चाइजै अर कियां निमटणो चाइजै।

भारतीय पारंपरिक माहौल मांय उणरी दाळ कम गळै, इण वास्तै वो आपणै घरां माथै हमलो करै। आपणां घर संस्कारां रा मूळ है। वा पैली पाठसाळा है जठै आपां जीवण रो तरीको सीखां अर आगै सारू व्यवहार करां। वो जाणै कै घर पाट्यां रावण मरै। वो साबित करै कै जिण घरां मांय आपणां पुरखां जिंदगी बिताय दी वै घर बोदा अर जूना होय चुक्या है, अब आपां नैं नवा घर बणावण री दरकार है। उण घरां नैं तोड़'र नवै तरीकै रा घर बणावो जिणां मांय बाजार आपरा पैर पसार सकै। कंक्रीट रा जंगळ खड़्या करणै री मुहिम बाजार चलावै। अै नवै तरीकै रा घर अेसी, कूलर, वॉश-बेसिन, टाइल्स, शॉवर आद बाजारू उपकरणां रो 'म्यूजियम' बणै। बाजार रै बहकावै मांय मिनख आ पिछाण नीं कर सकै कै जूना घर तोड़'र नवा बणावणै सूं कांई नुकसान है। पारंपरिक घर टूटणै रो मतलब अेक पूरो 'सिस्टम', अेक पूरी सभ्यता बदळणो है।

युवा कवि विनोद स्वामी री कविता 'आओ म्हारो घर दिखाऊं'[3] नैं इण संदर्भ मांय पढणी भोत जरूरी है। विनोद स्वामी नैं बाजार रो हमलो झेलती युवा पीढी रा अेक सजग नुमाइंदा कैया जा सकै। वै घर अर गांव सूं जुड़ी अेकू-अेक पारंपरिक चीजां सूं गैरो जुड़ाव राखै। वै जाणै कै बाजारू हमलै सूं बचणो कितरो मुसकल है। वै आ ई जाणै कै घर बिना मिनख री इज्जत समाज मांय नीं है। उणां नैं पुराणै घर पर घणो गुमेज है। जद ही तो वै आपरै पैलै कविता संग्रै मांय लिखै- *मैं खुश हूं कि/ मेरा घर/ अभी भरा-पूरा है।/ क्या हुआ-/ आटे का कनस्तर/ अगर खाली है।*[4]

घर भर्‌यो होवणै सूं उणां रो मतलब है कै घर मांय चूसटा, चिड़ियां रा आलणा, धोळी बिल्ली, कागला अर कदै कोई भूल्यो-भटक्यो भिखारी आवणै सूं है। अै सगळा है तो घर खाली कियां कैयो जा सकै। आ भारतीय दीठ है। पण कवि जाणै है कै जद कोई पावणा, बटाऊ घरां आवै तो वै मन ही मन इण घर नैं हिकारत सूं देखै और खुद रै घर री बडायां करै- *मेहमान/ जब घर में बैठते हैं/ सोचते हैं/ कहते नहीं/ घर के बारे में/ कुछ भी।*[5]

अेक सजग कलाकार री गैरी दीठ सूं कीं नीं छिपै। इण बदन उघाड़ू प्रदर्शन-प्रियता रै जुग मांय पारंपरिक मूल्यां री कांई कद्र हुवै वै जाणै। 'आंगन, देहरी और दीवार' सूं 'प्रीत-कमेरी' तक री आठ साल री जातरा मांय कवि बाजार री सगतियां सूं लड़ता थकां घर बचावण री तमाम आफळ करै। पण इण चौतरफै हमलै सूं पार नीं पड़ सकै। आ ईज वजै है

ISSN : 2348-9251

कै 'आओ म्हारो घर दिखाऊं' कविता घर रै बहानै बाजार साम्हीं हार रो स्वीकार निजर आवै। पण वै चेतावै कै आ हार उण तरियां री हार नीं है कै सिकार ई होयग्या अर बेरो ई नीं पड़्यो। आ तो जीवती माखी गिटणी पड़ी है। इण रो मतलब ओ ईज है कै भलांई म्हैं अेक दांव हारग्यो हूं, पण पीछै नीं हटूंला, फेरूं लड़ूंला। चुपचाप कूटीजणै री बजाय आप सूं तकड़ै दुसमण रै दोय थाप मार'र कूटीजणै मांय फरक जरूर हुवै। आ ही वजै है कै कविता री छेकड़ली ओळ्यां मांय कवि लिखै- *'घर दूसर बणायां पछै/ म्हारो घर कम/ अर अेक मकान जादा होग्यो।'*

कवि रो संदेश साफ है कै म्हैं नवी इमारत नैं घर रो दरजो नीं देय सकूं। ओ ईज म्हारो प्रतिरोध है। क्यूंकै जिकी इमारत मांय राखूंडो नीं है वो घर कियां हो सकै। साची बात तो आ है कै अै सारा मिल'र बाजार नैं घर मांय घुसण सूं रोक सकै। राखूंडो नीं है बठै 'डिटर्जेंट' या 'विम बार' आ ज्यावै। हारो नीं है अर दूध-घी, धीणो-धापो, छाणा-बळीतो नीं है, बठै मौको मिलतां ही डब्बा बंद दूध, घी अर गैस-चूल्हा आय धमकसी। बाखळ नीं तो हवा नीं, रोशनी नीं मतलब वठै एलईडी, अेसी, कूलर, इन्वर्टर आयां ही सरैला।

आ कविता दोघाचींती मांय पड़्यै मिनख री मनगत चवड़ी करै। सब-कुछ जाणतां-समझतां थकां ई कठैई तो जी-धपाई करणी पड़ै। कवि लिखै- *'म्हे राजी-राजी-सा/ अणमणा-उदास-सा/ घर सूं मकान री जातरा मांय/ भोत दुख पाया।/ साच्याणी म्हे ईं नैं फोड़नो कोनी चावै हा।'*

जूनो घर फोड़णों मजबूरी है। क्यूंकै गांव मांय घुस आयोड़ै बाज़ार री हजारां हाथां (हथकंडां) री त्यागत सूं लड़णों मुसकल है। इण वजै सूं घर फोड़ण रो दुख होवता थकां ई फोड़णों पड़्यो। दोघाचींती तकड़ी है। नवै मकान बणनैं री जितरी खुसी है, उतरी ही पुराणै नैं फोड़ण रो दुख। ध्यान सूं देखण री जरूरत है कै कवि लिखै 'म्हे राजी-राजी-सा' आ खुसी बाजारू माहौल री देन है। कठैई इयां लागै कै खुद नैं जमानै रै बराबर ले आवण सूं संतोख ई है। ओ ई बो 'सोनै रो हिरण' है जको सब-कुछ लुटाय'र ई आदमी सोचै कै ठीक-ठाक है। फाटेड़ी पेंट रा दो हजार रिपिया देय'र ई लागै कै खुसी खरीद ली। दो-ढाई रिपियां री चीज रा सौ-दो सौ रिपिया चुकाय'र ई संतोख हुवै कै आपां 'ब्रांडेड' चीज लीवी है। आ ई मोटी बीमारी है। इण चक्र नैं तोड़ण री जरूरत है। मैगी हो या कोकाकोला मूंघै भावां जहर खरीदण री मनगत बदळ्यां बिना पार पड़णी अबखी है। कई बार तो जाणता थकां ई ठगीजां अर मन नैं समझावां कै भाई आजकालै लागै। खुद नैं दिलासो देवां। तरै-तरै रा तरक घड़ां। मजबूरी है। विनोद स्वामी घर फोड़णै री वजै बतावै- *'भींतां/ नीचै-नीचै सूं/ पैली कळी/*

फेर गारो-माटी/ अर फेर/ पुस्ती तकात सूं नटगी।/ रातूं/ कड़ियां रा कटका निसरता/ अर टाबर डरता।'

अै जीव धपावणिया तरक ईज है। नींतर नवै मकान मांय राखूंडो, हारो अर बाखळ बणावण सूं कुण रोक सकै हो ? कैवण रो मतलब है कै आ कविता सिर्फ घर फोड़णै अर बणावणै री ईज कविता नीं है, अै तो प्रतीक भर है। इण कविता री गूंज दूर तक अर गैरी है। असल मांय इण कविता रो रचाव उण साजिश नैं उघाड़ै जिकी रै पाण बाजारवादी सगतियां आपणै गांव-घरां मांय घुसपैठ करै, आपरो साम्राज्य फैलावै। कविता रा कई और प्रसंग इणी बात री साख भरै। कवि लिखै कै घर फूटण रो इतणो दुख क्यूं हो ? सोचणै री बात है कै जद घर रो जाबक जवाब हो तो दुख क्यूं ? कवि बतावै- *'ईं रो सैं सूं मोटो कारण/ ओ है कै-/ म्हारै घर री मंडेरी अर भींत/ जिकै रद्दै में मिलै/ साळ में बो/ फगत अेक रद्दो कोनी/ जूनी नगरी है/ ईं री आपरी/ अेक सभ्यता अर इतिहास है।'*

बाजार आपणी सभ्यता अर इतिहास नैं खत्म करै, ओ मोटो दुख है। वो आपां नैं सिर्फ बारै-बारै सूं ई नीं बदळै, पण आपणी सोच ई बदळ देवै। 'कम खाणा - गम खाणा', मोटो पैरणो - मोटो खावणो', सादो जीवण - ऊंचा विच्यार' री आपणी संस्कृति नैं बाजार री सगतियां समूळ नस्ट करणै रो बीड़ो उठावै। कर्जो लेय'र ई दिखावो करणो, अणचावी चीजां सूं घर भरणो, फास्ट-फू ड खावणै सूं लेय'र गोरै-काळै रो भेद, नस्लभेद, अश्लीलता, पारिवारिक सम्बन्धां मांय टूटन, अेकल परिवार नैं बढावो, अकेलोपण, अजनबीपण री संस्कृति विकसित करै। इण सूं आपणी सभ्यता अर संस्कृति नैं मोटो खतरो है। आ चिंता कवि गैराई सूं प्रकटै।

कवि अेक और सभ्यता री बात करै- वा है प्रकृति रै साथै आपणा सम्बन्ध। आपणा घर सिर्फ आपणा ही नीं हा, वठै कितरा जीव-जन्तुआं री कितरी पीढ्यां पळगी। चिड़कल्यां, छिपकल्यां, दुक्कड़ी, भीरड़, भूंड, टांटिया, ऊंदरा, बिल्ली, कुत्ता आद जीव कच्चा मकानां मांय आपरी जूण पूरी करता रैया है। पण सीमेंट रै मकानां मांय आ छूट कोनी। 'वसुधैव कुटुम्बकम' अर 'आत्मा सो परमात्मा' री सीख देवणवाळी इण संस्कृति माथै ई बाजार चोट करै। इणी वास्तै कवि मैसूस करै- जाणै सगळै जीव-जिनावरां री निजर में वो खतरनाक खलनायक बणग्यो हुवै। वीं नैं लागै जाणै सगळा जीव-जिनावर उण माथै रीसाणा होय परा बदळो लेवणो चावै। और जिनावरां रो इतिहास इण तरै रा काम करणियै मिनख नैं मिनख नहीं पण आपरो सैं सूं मोटो दुसमण कै'सी। कवि रो सोचणो जाबक ठीक है। क्यूंकै बाजारवादी-उपभोगवादी संस्कृति रै कारण धरती रो संतुलन बिगड़ चुक्यो है। जीवां री कितरी प्रजातियां लुप्त होय चुकी है अर कितरी ही खतरै मांय है। पर्यावरण संतुलन

ISSN : 2348-9251

री चर्चा करणियां लोग ही पर्यावरण नैं नुकसान पुगाय रैया है। आ बात किणीं सूं छानी नीं है।

बाजारवाद अर उत्तरआधुनिक समै रै मिनख कनै दूजां वास्तै टेम कोनी अर खुद सारू ई पीड़ा अर त्रास ही है। वो नकली जरूरतां नैं पूरी करणै सारू मसीन बण पीसा कमावै, पण उणरो भोग नीं कर सकै। जे करै तो ई संतोख नीं। आपणी सभ्यता मांय इण तरै रो अकेलोपण कठैई निजर नीं आवै। भींत सूं पड़्यै लेवड़ै रै मिस कवि सम्बन्धां री आं कड़ियां रो बखाण करै। वो इण कविता रो सैं सूं शानदार प्रसंग है– *'कई पड़तां रै इण लेवड़ै में म्हनैं/ गाम रै खंदां सूं/ तपती दुपारी में/ लालड़ी माटी ल्यांवता/ लुगायां रा झूलरा दीख्या।/ जादा माटी चकण सूं/ चणक पड़ेड़ी चमेलकी/ मजरोड़ पड़ेड़ी मीरकी दीसी/ दादी रो करेड़ो धोळक/ बुआ रो लगायोड़ो गारो/ गारै खातर मांग्योड़ो गोबर/ गोबर सूं नट्योड़ी पड़ोसण/ ईं बात सूं रूस्योड़ी मा/ मा सूं बात लेंवती सामली ताई/ ताई री चुगली सूं होयोड़ी राड़/ अर राड़ में बेमतलब कूटीज्योड़ो म्हैं/ लेवड़ै कानी देखतो रहग्यो।'*

कवि री 'विट' देखण अर सरावणजोग तो है ही, पण अेक लेवड़ै री पड़तां मांय आपणी पूरी सभ्यता अर संस्कृति रो जो बिरवो कवि देवै, वै पड़तां ही इण बाजार रै प्रभाव सूं खत्म हुय री है। गांव री सामूहिक–सांझी संस्कृति गारै रै मिस कियां परवान चढती, आवण वाळी पीढी इण बात नैं कदैई नीं जाण सकैली। माटी खोदण जावणै सूं पैलड़ै दिन ही आस–पड़ोस री लुगाया–पतायां मिल'र त्यारी करती। साथै–साथै माटी लेवण जावती अेक–दूजै री मदद कर'र माटी खुदावणै सूं लेय'र बट्ठळ चकावण रा काम सैयोग सूं ही होवता। गारो लगावण सारू गोबर पण अेक–दूसरै घरां सूं आवतो अर मिलजुल'र पड़ोसणां अेक–दूजै रो घर लिपांवती। गांव रै अेकू–अेक जीवाजूण रै साथै कोई न कोई पारिवारिक सम्बन्ध जुड़ियोड़ो हो। सब अेक–दूजै रा मददगार। कदैई राड़ ई होंवती पण राजीपो ई बेगो ही हो जांवतो।

बाजार अब इण सभ्यता पर 'अटैक' कर्‌यो है। माध्यम बणायो है टेलीविजन नैं। अब ना तो सामूहिकता सूं काम करणै री जरूरत है अर ना ही लोगां कनै फुरसत है बतळावण री। 'बुद्धु बक्सै' साम्हीं टेम बीतज्यै। स्हैरां मांय तो पड़ोसी रो पड़ोसी सूं कोई लेण–देण ई नीं रैयो। ओ ई हाल अब गांवां रो होवणो सरू होयग्यो। कवि इण बात री चिंत्या करै। घर फोड़णो भलांई मजबूरी है, पण इण घर री विदाई कवि नैं आपरै मायत री विदाई–सी लखावै– *'घर गेरती बरियां/ म्हारी गत/ बीमारी में दुख पांवतै मायत नैं/ गीता रो अध्याय सुणावण री–सी ही।'*

ISSN : 2348–9251

आं ओळ्यां माथै गौर करणै री दरकार है। घर मायत री भांत लागै, पण मायत अैड़ो जो औलाद रै किणी काम रो नीं रैयो। वो औलाद री मदद नीं कर सकै। नीं खुद री ई खेचळ खुद कर सकै। उणरो जीवणो ई अब मायत अर औलाद दोनुवां सारू दुख रो सबब है। जिण भांत गीता रो अध्याय सुणा'र औलाद चावै कै इण पुन्न रै सारै ही वै प्राण छोड़द्यै तो ठीक है, उणी भांत नवी पीढी ई आपणी जूनी सभ्यता अर संस्कृति नैं गीता रो अध्याय सुणवण नैं त्यार है। वै मान चुक्या है कै अब बूढी सभ्यता नैं बचावण सूं कोई लाभ नीं है। इण सारू अब 'मैगी नूडल्स' मांय सीसो आवो चाहे कोकाकोला मांय 'पेस्टीसाइड', वै तो इणनैं अंगेज चुक्या है। ओ रोळो-रप्पो कित्ता दिन चालैलो कुण जाणै, पण विनोद स्वामी री आ कविता बाजार रै बेलगाम घोड़ां री लगाम थामणै मांय कितरी मददगार हुय सकै इण माथै विचार करणै री दरकार है। इण कविता रो शिल्प अर कौशल ई लाजवाब है, पण उण सारू अेक निरवाळै लेख री दरकार है।

1. दैनिक भास्कर, जयपुर संस्करण, 12 जून, 2015, पेज-6
2. वो ईज
3. प्रीत-कमेरी; विनोद स्वामी, 2011, बोधि प्रकाशन, जयपुर, पेज 89-95
4. आंगन, देहरी और दीवार; विनोद स्वामी, 2003, बोधि प्रकाशन, जयपुर, पेज-81
5. आंगन, देहरी और दीवार, पेज-82

एसिस्टेंट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग
राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर।
कानाबातीः 9828034908

ISSN : 2348-9251

उल्थो

मूळ : महाश्वेता देवी

नन्द भारद्वाज

सपना देखण रो हक

सबद। म्हैं कोनी जांणती के कठै सूं। अेक लेखिका, जिकी वेदना में जीवै ? स्यात् इण औस्था में औरूं जीवण री इंछा अेक कुटळाईभरी इंछा ई मानीजै। खुदरै नेवूवैं बरस सूं फगत थोड़ी-सी अळगी पूग म्हनैं आ बात मानणी पड़सी के आ इंछा अेक थ्यावस देवै। अेक गीत है नीं 'इचरज रै जाळ सूं फूंदियां पकड़णी'। इणनैं टाळ उण 'घाटै' माथै ई निजर दौड़ावो जिको म्हैं उम्मीद सूं बधीक जीय नै उठाय चुकी।

इठियासी बरस री औस्था तांई पूगतां म्हैं अमूमन खुद री पड़छीयां में बावड़ती आगै बधी हूं। कदेई कदेई म्हारै मांय इत्ती हूंस पण बापरै के फेरूं अेकर उजास में जाय ऊभूं। जद म्हैं जवान ही, अेक मां ही, तद म्हैं अमूमन म्हारै बुढापै में पूग जावती। खुद रै बेटै नैं ओ ओळाव लेवतां बिलमावती के म्हनैं कीं सुणीजै कोनीं के सोझी ई नीं पड़ै। खुद रै हाथां सूं वियां टंटोळती, जियां आंधां री रांमत खेलीजै के खुद री चितारणी री हांसी उडावती। वै महताऊ बातां भूल जावणी, जिकी घड़ी पलक पैली बरतीजी। अै खेल आणंददाई हा, पण अबै वो आणंद नीं रह्यो। म्हारो जीवण आगै बध चुक्यो अर खुद नैं दोहरावै। म्हैं खुद नैं ई दोहरावूं। जिको कीं व्हे चुक्यो, उणनैं आप सारू पाछो चेतै करूं। जिको कीं है, जिको व्हे सकतो, हुयो हुवैला।

अबै चेतै री बारी है के वो म्हारी हांसी उडावै।

म्हारी मुलाकात केई लेखकां, म्हारी कहाणियां रै चरितां कै वां लोगां रै पलीतां सूं हुवै, जिकां नैं म्हैं 'जीया', कोड किया अर हाथां गमाया। कदेई कदेई म्हनैं यूं लागै जांणै म्हैं अेक अैड़ो जूंनो घर हूं, जिको आपरा रैवासियां री बंतळ रो साझीदार रह्यो, पण हरमेस ओ किणी वरदांन सरीखो नीं हुवै। 'जे कोई मिनख आपरी सगती रै अंत माथै पूग जावै तद कांई हुवैला' ? सगती रो अंत कोई पूरण-विराम नीं हुवै। नीं ओ वो आखरी पड़ाव, जठै आपरी जातरा पूरी हुवै। ओ तो फगत धीमो पड़णो है, जीवणी-सगती रो घाटो। वो सोच, जिणसूं म्हैं सरूआत करी ही, वो है 'थे अेकला हो'।

ISSN : 2348-9251

उण चौफेर सूं जठै सूं ई म्हैं आई हूं, म्हारो इण भांत बण जावणो अणचींतो हो। म्हैं घर में सगळां सूं मोभी ही। म्हैं नीं जाणूं के आपरा वै ई अणभव है के नीं, पण उण बगत हरेक लुगाई रो पैलो यौन अणभव परिवार सूं ई आवतो। जवानी री औस्था सूं ई म्हारै मांय अेक प्रबळ दैहिक आकरसण हो, म्हैं इण बात नैं भली-भांत जाणती, इणनैं अणभव करती अर कीं इणी भांत बोल नै कहीज्यो। वां दिनां म्हां सगळां माथै टैगोर रो खासा असर रह्यो। म्हैं वां दिनां शान्तिनिकेतन में ही, उठै ई प्रेम में पड़ी अर जिको कीं कियो, पूरै उछाव सूं कियो। तेरै सूं अट्ठारै बरस री औस्था तांई म्हैं अेक दूर रै भाई सूं गाढो प्रेम करती। उणरै परिवार में आतमघाती सभाव रै समचै उणी सेवट आतमहत्या कर ली। सगळा ई म्हनैं दोस देवण लाग्या के वो म्हनैं प्यार करतो अर म्हनैं नीं हासल कर सक्यो इणी वास्तै आत्मघात कर लियो। पण आ बात सही कोनी ही। उण बगत तांई म्हैं कम्युनिस्ट पार्टी रै नजीक आय चुकी ही अर आ सोच राखती के इत्ती छोटी औस्था में ओ कित्तो ओछो काम हो। खुद म्हनैं ई लागतो के उण ओ काम क्यूं करियो ? म्हारी सरधा तूटगी, पूरो परिवार म्हनैं ई गुनैगार मान्यां बैठो हो। जद म्हैं सोळै बरस री हुई, तद सूं ई म्हारा मां-बाप, खासकर म्हारा रिस्तैदार म्हनैं कोसता के इण छोरी रो कांई कियो जावै ? आ इत्ती ज्यादा बारै अेकली घूमती रैवै अर आपरै दैहिक आकरसण री गिनार ई नीं करै। तद इणनैं बुरी बात समझी जावती।

मध्यवरगी नैतिकता सूं म्हनैं घिरणा है। ओ कित्तो मोटो पाखंड है। स्सौ कीं दबायोड़ो रैवै।

लिखणो म्हारो असल संसार व्हेग्यो, वो संसार जिणमें म्हैं जीवती अर कळाप करती ही। सांगो-पांग। म्हारी लेखण-प्रक्रिया हद-भांत बीखरियोड़ी रही। लिखण सूं पैली म्हैं घणो सोचूं, विचार करती रैवूं, जद तांई के म्हारै मगज में अेक साफ खाको नीं त्यार व्हे जावै। जिको कीं म्हारै वास्तै जरूरी हुवै, वो पैली करूं। लोगां सूं बात करूं, पतो लगावूं। तद म्हैं इणरो पसराव सरू करूं। ता-पछै म्हनैं कीं अबखाई नीं लागै, कहाणी म्हारी पकड़ में आय चुकी व्है। जद म्हैं लिखूं, म्हारो सगळो पढ्योड़ो, चितारणी, परतख, अणभव, संचै करियोड़ी जाणकारियां सगळी इण मांय समाय जावै।

जठै ई म्हैं जावूं, चीजां नैं लिख लेवूं। मन जागतो रैवै, पण कदेई म्हैं भूल जावूं। म्हैं असल में जीवण सूं बौत राजी हूं। म्हैं किणी री करजदार कोनीं, नीं समाज रा अणूंता नेम-कायदां री पाळणा करूं, म्हैं जिको कीं चावूं वो ई करूं, जठै जावणी चावूं जावूं, जिको चावूं वो लिखूं। वा हवा जिणमें म्हैं सांस लेवूं, सबदां सूं भरियोड़ी है। ज्यूं के पलास रा पत्तां सूं बणियोड़ो पर्णनर। इणरो रिस्तो अेक अजब रिवाज सूं है। मान लेवो के अेक आदमी गाडी रै हादसै में मारीजग्यो। उणरी देह घरां नीं लाईज सकी। तद उणरा भाई-बंधु घास अथवा

ISSN : 2348-9251

किणी दूजी चीज सूं उणरी जिग्यां आदमी रो पूतळो बणावै। म्हैं जिण जिग्यां री बात करूं, वा पलास सूं भरियोड़ी है। इण वास्तै उणी रा पत्ता काम में लेवै आदमी बणावण सारू।

पाप पुरख। लोक-विस्वास री उपज। अजर-अमर जीवण सारू थरपणा। वो दूजा लोगां रै पापां माथै निजर राखै। वो कदेई परगट हुवै, कदेई कोनी हुवै। उण खुद कोई पाप कोनी कियो। वो बाकी सगळां रै आचरण रो लेखो-जोखो राखै। वारै पापां रो। अेकल। अर इणी वास्तै वो धरती माथै आवै। छोटी सूं छोटी बात रो लेखो राखतां। अेक बकरो। डंडीजै। दाझतै सूरज रै नीचै आपरै खूंटै सूं बंधियोड़ो। पाणी कै छींयां तांई पूगण सूं लाचार। तद पाप-पुरख बोलै, 'ओ अेक पाप है। जिको कीं करियो वो गळत। तुइ जा कोरली ता पाप।' असल में ओ मिनख नीं फगत एक विचार री कथणी है। ओ अेक डंड व्हे सकै। उण कोई गंभीर गुनो कियो हुवैला। 'शे होयतो कोनो पाप कोरेछिलो।' कोई अखम पाप। अर अबै वो जुगां तांई पाप-पुरख बणण सारू सरापित है। असल में ओ फगत अेक ई पाप-पुरख नीं, इसा दूजा केई है। उणी भांत ज्यूं के इण कथा नैं मांनण वाळा हलका ई केई है। इणसूं ई मोवणा केई सबद है। बंगाली सबद। ज्यूं चोरट मतळब तखत। अर फेरूं डाक सकरांयत। इणरो रिस्तो चैत सकरांयत सूं मानीजै। डाक मतळब डेके डेके जावणो। जिकी आतमावां घणी जाग्रत अर चेतन व्है, वै ई इण पुकार नैं सुण सकै। जूनै बरस री पुकार, जिको जावतो हुवै, सवाल करतां। जूनो बरस, जिको आज पूरो हुवै अर नुंवो बरस जिको काल सूं सरू हुवै। कांई है जिको थे नीं करियो अर कांई है जिको थांनै अबार करणो है? उणनै अबार पूरो कर देवो। गरभदान। ओ मसलो बडो चावौ है। अेक लुगाई गरभवती है। कोई उणनै वचन देवै के जे बेटी रो जलम हुवै, उणनै ओ-वो मिळैला। जे बेटो हुवै तो कीं दूजो मिळैला। 'गरभ थाकते देन कोरछे।' दान व्हे चुक्यो, जदके टाबर ओजूं गरभ मांय पळै। इण कथा रो कैवणो है के अजलम्यो बाळ इण वचन नैं सुण सकै, इणनैं चेतै राख सकै अर इणनैं आपरी चितारणी में संजोय नै राख सकै। पछै कीं लूंठो हुयां वो टाबर उण वचन देवणियै सूं वचन अर गरभदान बाबत पूछ सकै, जिको हाल पैदा ई नीं हुयो।

आपांरो भारत बडो अजूबो मुलक है। मिसाल रै बतौर महाराष्ट्र रै पारधी समाज नैं ई लेवो। आपरै ढंग रो अेक आजाद समाज, जिणरा खुद रा ई अजूबा कायदा। क्यूंके वो आदिवासी समाज है, जठै डावड़ियां री लूंठी मांग। किणी गरभवती लुगाई रो धणी आसानी सूं अणजलम्यै टाबर री नीलामी कर सकै के उणनै बेच सकै। पेट री भाजी, 'पेटे जा आछे।' जिको ओजूं गरभ में ई है। 'नीलाम कोरे दीछे' गरभ रै फळ नैं गरभ में ई नीलाम कर देवै। नरग रा केई नांव हुवै, 'नरकेर अनेक गुलो नाम आछे।' अेक नांव जिको म्हनैं खास पसंद है, वो है 'ओशि पत्र वन'। नरग केई भांत रा हुवै। 'ओशि' रो अरथ तरवार हुवै अर 'पत्र'

मतळब अेक पौधो, जिणरा तरवार सरीखा पान हुवै। इसा पौधां सूं भरियोड़ो जंगळ। अर आपरी आतमा नैं इण जंगळ सूं गुजरणो हुवै। तरवार सरीखा पान उणनै बींध देवै। सेवट आप नरग में खुद रा पापां रै कारण ई तो हो। इण वास्तै आपरी आतमा नैं ओ कळेस तो सैवणी ई पड़ैला।

जद कद ई म्हनैं कोई मन-रुचतो सबद मिळै, म्हैं उणनै लिख लेवूं। अै सगळी कॉपियां- 'कोटो कथा'। इत्ता सारा सबद, इत्ती सारी धुनां। जद ई वांसूं मिळूं, म्हैं वांनै बटोर लेवूं। आखरी में म्हैं उण विचार बाबत बताउंला, जिण माथै म्हैं थ्यावस सूं बगत मिळियां लिखस्यूं। म्हैं अेक अरसै सूं इण बाबत विचार करती रही हूं। वैस्वीकरण नैं ढाबण रो ओ ई अेक मारग है। किणी जिग्यां जमीं रो अेक टुकड़ो है, उणनै घास सूं पूरो ढकीजण देवो अर उण माथै फगत अेक दरखत लगावो, भलांई वो जंगळी दरखत ई हुवो। आपरै टाबर री तिपहिया साइकल उण कनै छोड देवो। किणी गरीब टाबर नैं उठै आय रमण देवो, किणी चिड़कली नैं उण माथै रैवण देवो। नैनी बातां, नैना सपना। सेवट आपरा पण नैना-नैना सपना है।

कठैई म्हैं 'दबियोड़ां री संस्क्रती' माथै लिखण रो दावो कियो है। ओ दावो कित्तो बडो कै छोटो, साचो कै कूड़ो है? जित्तो ज्यादा म्हैं सोचूं कै लिखूं, किणी नतीजै माथै पूगणो उत्तो ई ओखो व्हे जावै। म्हैं झिझकती रैवूं, हिचकिचावती रैवूं। पण म्हैं इस विस्वास माथै अडिग हूं के बगत रै पार जावण वाळी म्हारै सरीखी किणी प्राचीन संस्क्रती सारू मानीजण वाळो अेक ई मौलिक विस्वास व्हे सकै अर वो है हिंवळास। मांण रै साथै मिनख रै उनवांन जीवण रै सगळां रै इधकार नैं कबूल करणो। लोगां कनै देखणवाळी आंख्यां कोनी। आपरै आखै जीवण में म्हैं छोटा लोगां नैं अर वांरा छोटा-छोटा सपनां नैं ई देख्या है। म्हनैं लागै के वै आपरा सगळा सपनां नैं ताळै में बंद कर देवणी चावता, पण किणी भांत कीं सपना बंद हुवण सूं बंचग्या। कीं सपना मुगत व्हेग्या। ज्यूं के गाडी नैं देखती दुरगा (पाथेर पांचाली उपन्यास में), अेक बूढी डोकरी, जिकी नींद सारू तरसै, अेक बूढो डोकरो, जिको किणी भांत आपरी पेंशन हासल कर सकै। जंगळ सूं बेदखल कियोड़ा लोग, वै कठै जावै? मामूली मिनख अर वांरा छोटा छोटा सपना, ज्यूं के नक्सली। वांरो गुनो ओ ई हो के वां सपना देखण री हूंस राखी। वां वनवासियां नैं सपना देखण री मन-मरजी क्यूं कोनी?

ज्यूं के म्हैं बरसां सूं घड़ी-घड़ी कैवती आई हूं, सपना देखण रो हक पैलो मौलिक हक व्हेणो चाईजै। हां, सपना देखण रो हक। आ ईज म्हारी लड़ाई है, ओ ईज म्हारो सपनो। म्हारै जीवण अर म्हारै साहित्य रो मकसद।

(जयपुर साहित्य उच्छब 2013 रै मौकै अंग्रेजी उद्घाटण भासण रो राजस्थानी उल्थो।)

उल्थाकार रो ठिकाणो :
71/247, मध्यम मार्ग, मानसरोवर, जयपुर-302020
कानाबाती : 9829103455

ISSN : 2348-9251

कथेसर रा आजीवण सदस्य

*(**अरज :** किणी आजीवण सदस्य रो नांव इण सूची में नीं है तो खबर करो- 7742814567)*

श्री अर्जुनदान चारण, करमावास (बाड़मेर), श्री दिग्विजय सिंह बारहठ, हनुमानगढ़, श्री जुगलकिशोर जैथलिया, कोलकाता, श्री काशीराम गोदारा, फेफाना (हनुमानगढ़), श्री श्रवण सहारण, एडवोकेट, नेठराना (हनुमानगढ़), श्री शिवकुमार स्वामी, रामगढ़ (हनुमानगढ़), श्री काळूराम अध्यापक, अरड़की (हनुमानगढ़), डॉ. जगदीश गिरी, आबू रोड (सिरोही), श्री बंशीलाल दर्जी, तख्तगढ़ (पाली), श्री दिग्विजय सिंह बारहठ, सुरेशिया (हनुमानगढ़), श्री महेन्द्र कुमार गर्वा, मेहणा खेड़ा, सिरसा(हरियाणा), श्री रोहिताश सुथार, खारा चक, गोलूवाला (हनुमानगढ़), डॉ. सुरेश सालवी, उदयपुर, श्री कृष्ण कुमार गढ़वाळ, कोलकाता, श्री निशान्त, पीलीबंगा (हनुमानगढ़), श्री शिवचंद शर्मा, गोलूवाला (हनुमानगढ़), श्री कृष्णलाल सिहाग, सूरतगढ़ (श्रीगंगानगर), श्री नरेश मेहन, हनुमानगढ़, श्री भादरराम ज्याणी, 18एसपीडी (हनुमानगढ़), श्री रामकुमार छिम्पा, 18एसपीडी (हनुमानगढ़), श्री रायचन्द राहड़, बोजला, त. भादरा (हनुमानगढ़), श्री ओम प्रकाश सुथार, उज्जलवास (हनुमानगढ़), श्रीमती पुष्पलता कश्यप, जोधपुर, श्री राजदीपसिंह इंदा, दलपतपुरा (हनुमानगढ़), श्री नन्द भारद्वाज, जयपुर, मेजर रतन जांगिड़, जयपुर, का. स्वर्णसिंह विर्क, करीवाला, जिला-सिरसा (हरियाणा), श्री राजेन्द्र छिम्पा, सूरतगढ़ (श्रीगंगानगर), श्री सुनील अरोड़ा, हनुमानगढ़ संगम, श्री साहबराम गोदारा, जाखड़ांवाली (हनुमानगढ़), श्री रामकुमार निमिवाल, कुलचन्द्र (हनुमानगढ़), श्री जगदीश सीगड़, इंद्रगढ़ (हनुमानगढ़), श्री हवासिंह मील, बिराण (हनुमानगढ़), श्री कैलाश शर्मा, मोहब्बतपुर, हिसार (हरियाणा), श्री देवीलाल कुलड़िया, पोहड़का (श्रीगंगानगर), सुश्री कृष्णा जांगिड़ 'कीर्ति', उदयपुर, श्रीमती अर्चना शर्मा, सादुलपुर (चूरू), श्री शिवपाल भारती, श्योराणी (हनुमानगढ़), श्रीमती शोभासिंह पी.पी. सिंह डूडी, भादरा (हनुमानगढ़), श्री रामनिवास जाट, सीकर (राज.), श्री गोपीराम महला, तारानगर (राज.), श्री अमरसिंह जी पूनिया, फेफाणा (हनुमागनढ़), श्री मांगूसिंह जी सरपंच, गोगामेड़ी (हनुमागनढ़), श्री रामकुमार सहारण, जसाना (हनुमानगढ़), श्री दारासिंह सहारण, जबरासर (हनुमानगढ़), श्री विशुपाल आर्य, जयपुर, श्री सुदेश चौधरी, 24 जीबी, विजयनगर (श्रीगंगानगर), श्री महेन्द्र सोनी, नोहर (राजस्थान), श्री प्रेमजी सहारण, गाढवाला (बीकानेर), श्री ओमप्रकाश ज्याणी, कतरियासर (बीकानेर), श्री भंवरसिंह राठौड़, बीकानेर, श्री जगमालसिंह रायका, गाढवाला (बीकानेर), श्री ललित सोनी, बड़ी सादड़ी (चितौड़गढ़), श्री देवेन्द्र सिंह कस्वां, बीकानेर, श्री विनोद सारस्वत, बीकानेर, श्री हरिराम सियाग, बीकानेर, श्री पृथ्वीराज लीलड़, गदरखेड़ा (श्रीगंगानगर), श्री बंशीधर लमोरिया, खाजूवाला (बीकानेर), श्री मीठेश निर्मोही, जोधपुर, डॉ. गीता सामौर, जयपुर, डॉ. मदनगोपाल लढा, महाजन (बीकानेर), डॉ. अर्जुनसिंह उज्वल, जालौर, डॉ. प्रीति मिढा, खाजूवाला (बीकानेर), श्री विजय कुमार पारीक, जालौर, श्री नन्दलाल स्वामी, बुधवाळी (चूरू), श्री मनजीत सिंह, जयसिंहपुरा (झुंझुनू), श्री जितेन्द्र निर्मोही, कोटा, श्री सुखदेव शर्मा, 5 केवाईडी, खाजूवाला (बीकानेर), श्री रामकुमार भांभू, 1 एलएम, सूरतगढ़ (श्रीगंगानगर), श्री संपत सरल, जयपुर, श्री दशरथ कुमार सोलंकी, जालौर, श्री धर्मपाल अध्यापक, दीपलाना (हनुमानगढ़), श्री ओमप्रकाश सिंगाठिया, रामगढ़ (हनुमानगढ़), श्री धनराज पंवार, बालोतरा (बाड़मेर), गणेशकुमार गढवाळ, गढड़ा (हनुमानगढ़)।

ISSN 2348 – 9251 RNI Regd No. : RAJRAJ/ 2012/ 50837

राजस्थानी पत्रिकावां

❍ कथेसर
सं. रामस्वरूप किसान, डॉ. सत्यनारायण सोनी,
परलीका, वाया-गोगामेड़ी (हनुमानगढ़)-335504
कानाबाती : 01555-262048, 9460102521
E-Mail : editor@kathesar.org

❍ अनुसिरजण
सं. दुलाराम सहारण, प्रयास भवन,
ताजूशाह तकिया, चूरू
कानाबाती : 9414327734
E-Mail : anusirajan@gmail.com

❍ लीलटांस
तिमाही, सं. कुमार अजय : प्रयास संस्थान, प्रयास भवन, ताजूशाह तकिया, धर्मस्तूप, चूरू-331001
राज. कानाबाती : 9929582610
E-Mail : leeltans@gmail.com

❍ आलोचना शोध पत्रिका
सालीणा, सं. डॉ. कृष्णा जाखड़ : प्रयास संस्थान, प्रयास भवन, ताजूशाह तकिया, धर्मस्तूप, चूरू-01
कानाबाती : 9414327734
E-Mail : rajasthanishodh@gmail.com

❍ राजस्थानी गंगा (तिमाही)
डॉ. किरण नाहटा, 7 ग 15 पवनपुरी,
दक्षिण विस्तार, बीकानेर
कानाबाती : 0151-2241319

❍ बिणजारो (सालीणो)
नागराज शर्मा, पिलानी (राजस्थान) 333031
कानाबाती : 01596-242935, 9460276426
E-Mail : binjaro.pilani@gmail.com

❍ राजस्थली (तिमाही)
श्याम महर्षि, श्री डूंगरगढ़ (बीकानेर)
कानाबाती : 01565-222670, 9414416274
E-Mail : rajasthalee@gmail.com

❍ अपरंच (तिमाही)
पारस अरोड़ा, ए-360, सरस्वती नगर, बासनी, जोधपुर
कानाबाती : 0291-2720796, 9413961800
E-Mail : apranchrajasthani@gmail.com

❍ माणक (मासिक)
पदम मेहता, जालोरी गेट, जोधपुर-342003
कानाबाती-0291-5105896, 9828033900
E-mail : info@manak.org

❍ राजस्थानी ओळख (मासिक)
सं. सीतावीर, डॉ. भंवर कसाना,
वत्सला, प्रतापनगर, नागौर (राजस्थान) 341303
कानाबाती : 9828735395
E-Mail : olakhrajasthani@yahoo.in

❍ मरुधारा
मधुकर गौड़, ए-302, ब्ल्यू ओशन-1,
महावीर नगर, कांदिवली (प.) मुंबई-400067
कानाबाती : 022-28600652, 09969516164

❍ पारस मणि (टाबरां री तिमाही)
सं. दीनदयाल शर्मा, मानसी शर्मा, 10/22 हाउसिंग बोर्ड कॉलोनी, हनुमानगढ़ संगम-335512
कानाबाती : 01552-244451, 09982070666
E-Mail : parasmani2013@gmail.com

❍ जागती जोत
राजस्थानी भाषा, साहित्य एवं संस्कृति अकादमी, बीकानेर-334004
कानाबाती-0151-2210600
E-Mail : jagteejot@gmail.com

❍ राजस्थान री पाती (दैनिक अखबार)
संपादक : आनन्द कुमार पुरोहित, एच 1-42 डी, रिको, जैसलमेर (राजस्थान)
कानाबाती : 941419245, 9461113779
E-Mail : rajasthanripati@gmail.com

आवरण चित्र : रोहित रूसिया # 09425871600

स्वामी, प्रकाशक व मुद्रक अजय कुमार द्वारा गांव-परलीका, वाया-गोगामेड़ी, जिला-हनुमानगढ़, राजस्थान से प्रकाशित एवं खत्री ऑफसेट, पुराने गुरुद्वारे के पीछे, वार्ड-15, नोहर, जिला-हनुमानगढ़ से मुद्रित। संपादक : रामस्वरूप किसान।